८४
बेठक चरित्र

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीमद्अखण्डभूमण्डलाचार्यवर्य-श्रीमद्वल्लभाचार्यजी के ८४ बैठकके चरित्रप्रारंभः

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चोरासी बैठक या पृथ्वी मंडल में हें जहाँ जहाँ आपने अलौकिक चरित्र दिखाएहें जहाँ जहाँ आपने श्रीभागवतको पारायण कीयोहे तहां तहां आपकी बैठक प्रसिद्ध भईहें। चोरासी प्रकार की भक्ति आपनें प्रगट करीहे, सो चोरासी वैष्णवनके हृदय में आपनें स्थापन करीहे। ईक्यासी प्रकार की सगुणभक्ति ओर तिनि प्रकार की निर्गुणभक्ति प्रेम, आसक्ति, व्यसन करिकें भेदहें, सो याहीतें चोरासी वैष्णव मुख्य भक्तिके अधिकारी भए हे। सो विनकी वार्तामें प्रसिद्ध हें ॥

♣ बैठक १ ली ♣ श्रीगोकुलकी बैठकन के चरित्र ♣

अब श्रीगोकुल में श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन की (३) बैठक हें। तामें एक बैठक तो गोविंदघाट के ऊपर छोंकरके वृक्ष के नीचें हे सो जब प्रथमही आप श्रीगोकुल पधारे हते तब छोंकरके नीचें बिराजे तब दामोदरदासहरसांनीसों आज्ञा कीए जो दमला गोविंदघाट ओर ठकुराँणीघाट दोऊ बराबर हें। न जाँनिये कोंनसो गोविंदघाट हे ओर कोनसो ठकुराँणीघाट हे। तब ईतनेमें अकस्मात एक स्त्री आई सो नखतें सिख पर्यंत हीरा ओर पन्नानके आभरण पहेरेहें। सो आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनतें कह्यो जो तुँम या छोंकरके नीचें बिराजो यहि गोविंदघाट हे, ओर आपकी दक्षण ओर ठकुराँणीघाटहे। ईतनों कहिकें वो अंतर्धान हो गई। तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें कहें जो दमला

यमुनाजी एसे परम उदारहे जो हम रंचक ठाडे भए सो आपसों सह्यो न गयो। तातें तत्काल पधारिकें हमकों गोविंदघाट तथा ठकुराँणीघाट बताय गये। तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज गोविंदघाट ओर ठकुराँणीघाटकों अभिप्राय कहाहे। तब आप आज्ञा कीए जो रावलसों ठकुराँणीघाट तांई श्रीस्वामिनीजी की हद्दहे ओर महावनसों गोविंदघाट ताँई श्रीठाकुरजीकी हद्दहे। ओर यह छोंकरहे ब्रह्मको स्वरूपहे, यह आज्ञा आप कीए। तादिन श्रावणसुदीग्यारस ही तातें सूतको पवित्रा सिद्ध कीए हते। सो केसरसों रंगे, केसरी धोती ऊपरनाँ रंगे, मिश्रीसिद्धि करिकें फेरि रात्रिमें आप पोढे तब दामोदरदास आपसों नेंक दूर आपकी इच्छा तें सोयो हतो, ता समय आपके मन में यह चिंता भई जो मेरे प्रागट्य भूतलपें भयोहे, सो दैवीजवनके उद्धारार्थ भयोहे तातें मायामत खंडन करिकें भक्तिमार्ग को स्थापना करनों, ओर सकल तीर्थनकों सनाथ करनें। जीव तो सब दोष निधान हे ओर पुरुषोत्तम गुणनिधानहे सो इनको संबंध केसें होयगो। यह चिंता होतमात्रही श्रीयमुनाजीकी पुलिनमें तें कोटिकंदर्प लावण्य साक्षात् श्रीनाथजी आप प्रगट होयकें, श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकट पधारिकें आज्ञा कीए, जो तुँम चिंता क्यों करत हो। तुँमतो सर्वकरण समर्थहो। तब श्रीआचार्यजी आप प्रमाणपूर्वक कहें, जीव कहां, और आप कहां, सो यह संबंध केसें संभवेगो। तब आप श्रीनाथजी आज्ञा कीए जो जाको आप नाम देऊँगे ताके सेवामें सकल दोष निवर्ति होंइगे। (सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाःस्मृताः) ओर आज्ञा कीए (शरणस्थमुद्धारं कृष्णं

विज्ञापयाम्यहम्) तब ईतनों सुनतहीं आप श्रीआचार्यजीनें धोती ऊपरनाँ धराय पवित्रा पहराय मिश्रीभोग धरे। तब श्रीगोवर्धननाथजी आज्ञा कीए जो आप जाकों ब्रह्मसंबंध करावोगे ताको में अंगीकार निश्चे करूंगो, एसी आज्ञा करिके आप अंतर्धान भए। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदासतें कहें जो दमला तेंनें कछु सुन्यो। तब दामोदरदास नें कही जो महाराज सुन्यो तो सही परन्तु कछु समझ्यो नांही। जो पुरुषोत्तमके वाक्य तो वेदहू समझत नांही तो में जीव कहा समझूँगो। तब आप कहें जो दमला श्रीठाकुरजीनें ब्रह्मसंबंधकी आज्ञा दीएहें। तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज कृपा करिकें प्रथम तो मोको ब्रह्मसंबंध करवाइये, तब द्वादशीके दिन प्रातःकालही श्रीआचार्यजीनें दामोदरदास को स्नान करवायकें प्रथमही छोंकरकें नीचें ब्रह्मसंबंध करवायो ओर मार्गको रहस्य सिद्धान्त वाके हृदय में स्थापन कियो, ओर आप दामोदरदासतें कहें जो दमला यह मार्ग तेरेलीयें प्रगट कर्यो हे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गोविंदघाटपें छोंकरकें नीचें दिखाए॥

॥ इतिश्रीगोविंदघाटकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥१॥

♣ बैठक २ जी ♣ भीतरकी बडी बैठकको चरित्र ♣

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी दूसरी भीतरकी बडी बैठक हे तहाँ आप नित्य भोजन करते, ओर कथा कहते। आपने प्रगट होइकें सेवामार्ग प्रगट कीयो। तब वृन्दावनके बडे बडे महानुभाव कृष्णचैतन्य प्रभृति संत महंतहे तिननें यह विचार

कियो जो श्रीनाथजीकी सेवा हम करें। तब ऊनकों श्रीनाथजी यह आज्ञा कीये जो मेरी सेवा तो मेरो स्वरूप होईगो, सोई करेगो। तुँमकों तो भगवद्भजनको अधिकारहे। भजनसों तुँमारो उद्धार होयगो ओर मेरी सेवा तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप करेंगे। तब उन वृन्दावनके महंतननें अपनों एक वैष्णव परीक्षा के लियें श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजी के पास पठायो वा वैष्णव को नाम श्यामानंद हतो वह वैष्णव श्रीगोकुल में आयों। वाके पास एक श्रीशालिग्रामजीको स्वरूप हतो, सो वह स्वरूप बटुआ में हतो। ता बटुआकों छोंकरके वृक्षसों लटकाईके, वे भीतर श्रीआचार्यजीके पास दरशन कों गयो। तब आपके दरशन करिकें पाछों आयो, सो तहाँ देखे तो वह बटुआ नाँहीहे। पाछें वानें आयकें श्रीआचार्यजीसों कह्यो जो महाराज तुँमारे सेवकननें मेरो बटुआ चुराय लीयोहे। तब आप कहें जो हमारो सेवक होयगो सो तेरो बटुआ काहेकों लेइगो, तेनें जहाँ धर्यो होय तहाँ देखि ले। तब वह फिर आयकें देखे तो सबरो छोंकर बटुआनतें धर्योहे। तब फेरि वानें आयकें श्रीआचार्यजीसों कही जो महाराज वहाँतो अनेक बटुआ हें, सो में कोंनसो लेऊँ। तब आप कहें जो तूँ अपने इष्टकों पहचानत नाहींहे, तो आगे सेवा कहा करेगो। तूँ जायकें देखि तो सही, तब फेरि वह आयके देखे तो एक ही बटुआहे। तब वा बटुआकों लेकें वो श्रीवृन्दावनकों गयो। तब उन संत महंतनसों सर्व समाचार कहें तो सुनिकें सबरे आश्चर्य करन लागे ओर कहे जो वह ईश्वरी अंश हे। यह चरित्र आप भीतरकी बैठक में दिखाए। एसे अनेक चरित्र दिखाए हे। इति श्रीभीतरकी (बडी) बैठकको चरित्र समाप्त॥

♣ बैठक ३ जी ♣ शैयामंदिर की बैठक को चरित्र ♣

एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप शैयामंदिर की बैठक में पोढे हते, तहांतांई श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर बन्यो न हतो। तब तहां एक योगेश्वर द्वापरयुगकों बेठिके तपस्या करत हतो वाकी पर्णकुटी भूमिके भीतर हती। तब वा योगेश्वरनें निकसिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराज में द्वापरयुग सों बेठिके तपस्या करत हों, ताको फल मोकों आज सिद्धि भयो, जो मोकों आपके दरशन भए ओर अब इहां सात मंदिर बनेंगे, ओर श्रीगोकुल फेरि बसेगी, तातें मोको इहांसों कोऊ ऊठावे नाहीं, एसी आज्ञा करो। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो तुँमको ईहांते कोऊ उठावेगो नांहीं। तापाछें केतेक दिन पीछें श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर बन्यो, तब वा योगेश्वरकी कुटी निकसी। तब श्रीद्वारकेशजी महाराज नें वा योगेश्वरसों कही जो अब तुँम ईहांते सरकि जाओ। तब वा योगेश्वरनें कही जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञाहे जो तोकों ईहांसों कोई ऊठावेगो नाहीं, तब श्रीद्वारिकेशजीमहाराज नें कही जो अबतो तुम ईहांते सरकिजाओ। तब वह कुटी सोलह हाथ नीची भूमि में प्रवेश करि गई। तब तहां श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर बन्यो। तामें श्रीठाकुरजी बिराजे। परन्तु तहां नित्य राजभोग सरे पाछें महाप्रसाद में क्रमि होयजायवे लगे। तब श्रीद्वारिकेशजीमहाराजने श्रीगोकुलनाथजीसों पूछी, तब श्रीगोकुलनाथजीनें कही जो में श्रीनाथजीसों पूछिकें उत्तर देउंगो। ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथद्वारा पधारे, तब राजभोग पीछें श्रीगोकुलनाथजी महाराज शैयामंदिर के द्वारपें

ठाडे भए। तब तहां श्रीनाथजीसों सर्व वृतात कह्यो। तब जँभाई लेकें श्रीनाथजीनें आलस संयुक्त यह वचन कहें जो (तस्येदं कर्मणां फलम्) । पाछें श्रीनाथजी शैयामंदिर में पोढिवेकों पधारे। सो श्रीगोकुलनाथजीने श्रीद्वारिकेशजीसों सर्व समाचार कहे । तातें केतेक दिनलों श्रीद्वारिकानाथजी श्रीमथुरेशजीके पास बिराजे, यह चरित्र शैयामंदिरकी बैठक में दिखाए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शैयामंदिर की बैठक को चरित्र समाप्त ॥३॥

♣ बैठक ४ थी ♣ श्रीवृन्दावनकी बैठकको चरित्र ♣

श्रीवृन्दावनमें बंसीबटके पास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक हे, वहां आपनें यह अलौकिक चरित्र दिखायो जो एक वैष्णव प्रभुदासजलोटाक्षत्री हतो उनसों श्रीआचार्यजीनें कह्यो जो प्रभुदास सखडी महाप्रसाद लेऊ। तब प्रभुदासनें कही महाराज में स्नान नाहीं कियो हे । सखडी महाप्रसाद केसें लेऊँ । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दोयश्लोक पद्पुराण के वृन्दावनमाहात्म्यको कहें। (वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्र स्नानास्नानकथा कुतः ॥१॥ रजसोऽपि पुण्यं जलं जलादपि रजो वरम् ॥ यत्र वृन्दावन तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥२॥) एसें कहिकें या बैठक में वृन्दावनको स्वरूप दिखाए सो वृक्ष वृक्ष प्रति तथा पत्र पत्र प्रति भगवद्दरशन भयो। तब प्रभुदासनें महाप्रसाद लियो ओर दूसरो अलौकिक चरित्र यह दिखायो। सो कहत हें जो एक गोपालदासगोडिया करकें कृष्णचैतन्यको सेवक हतो सो वह भक्तिमार्गीय हतो। वानें कृष्णचैतन्यसों विनती करी जो महाराज

मेरे माँथें कछु सेवा पधराय देऊ। तब कृष्णचैतन्यनें वाके माथे श्रीशालिगरामजीकी सेवा पधरायदई। ताकी वह सेवा कीयो करे। परन्तु वाके मनमें बडो ताप रहे जो ईनकों सिंगार केसें करूं ओर मुकुट काछिनी केसें धराऊँ। गुरुनने जो स्वरूप पधराय दीयो ता ऊपरांत दूसरो स्वरूप पधरायो जाय नहीं। तब वानें कृष्णचैतन्यतें फेरि विनती करी जो महाराज मोकों स्वरूप सेवा पधराय देऊ तो आछो। तब कृष्णचैतन्य तो चूप होय रहे। पाछें कृष्ण चैतन्य श्रीजगन्नाथरायजी के दरशन करिवेको गये। तब गोपालदासको बहुत ताप जाँनिकें कृष्णचैतन्यनें स्वप्न में कह्यो जो मेरो सामर्थ्य होय सो मोसों दीयो जाय। में तो भगवद् आज्ञातें मार्ग ऊपदेश देत हूँ। भगवत्स्वरूप को सामर्थ्य तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनमेंहे। तातें वे पधारें तब ऊनतें विनती करियो। तेरो सर्व मनोरथ वे पूर्ण करेंगे। तब वाने आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी जो महाराज मोकों गुरुननें तो श्रीशालिग्रामजीकी सेवा पधराय दीनीहे, परि मेरे मनमें भाँति भाँति के सिंगार करिवेको ताप रहेतहे तातें ओर दूसरो स्वरूप पधराय देऊ। ताकी कछू चिंतातो नाहीं तब आप आज्ञा कीए जो दूसरो स्वरूप काहेको पधरावतहे, जो तेरो सांचो भाव होयगो तो याहीमेंते स्वरूप प्रगट होयगो, ओर शालिग्रामजी पीठकमें रहेंगे। श्रीठाकुरजी सर्व करन समर्थहे श्लोक (कृष्णस्तावतमात्मानं यावंतीर्व्रजयोषितः) जैसो तेरो अभिलाख हे तेसो स्वरूप होयगो। जेसी तेरी इच्छा होय तेसी ही तूं भावना करियो। तेसोही सवारें तोकों दरशन होयगो, तब वह अपनें घर आयकें सोय रह्यो। तब सवारें वाकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी

कृपातें इच्छानुरूप दरशन भयो। तब उन श्रीठाकुरजीको को नाम राधारमणभयो, सो अब वृन्दावनमें बिराजतहें, तापाछें गोपालदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनतें विनती करी जो महाराज मोकों गुरुउपदेश देउ। आपतो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो। तब आप आज्ञा कीए जो याजन्म में तो तूँ कृष्णचैतन्य को सेवकहे, ओर जन्मांतर में हमारे मार्गको संबंध होयगो (श्लोक) जन्मांतरसहस्त्रेषु तपोध्यानसमाधिभिः॥ नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते॥१॥ सो तब फेरि कोई कालांतर करिकें, वाको या मार्गको संबंध भयो। तब गोपालनागा ईनको नाम भयो। यह चरित्र आप श्रीवृन्दावनकी बैठक में दिखाए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीवृन्दावनकी बैठक को चरित्र समाप्त॥

♣ बैठक ५ मी ♣ श्रीमथुराजीकी बैठक को चरित्र ♣

श्रीमथुराजी में विश्रान्तघाटके ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे, तहां आप बिराजे हते। ता समय तहां ऊपर वन हतो ओर वस्ती तो भुतेश्वरपें हती, तहां स्मशानभुमि नजीक हती तातें आपको श्रीभागवतको पाठ करत में ग्लानी ऊपजी। तब कमंडलुमेतें जल लेकें कृष्णदासमेघन को दियो ओर आज्ञा कीए जो जितने में यह जल छिरक्योजायगो तितनेमें बस्ती होयगी। तब कृष्णदासने वह जल असकुंडातें लगायकें सूर्यकुंड तांई छिरक्यो। तातें ऊतने में बस्ती बसिगई। ओर तत्काल स्मशानभुमि ध्रुवघाटपें जाय पडी। वा समय रूपसनातन दरशनकों आए हते, विननें श्रीआचार्यजी के सेवकनको दुर्बल देखिके कह्यो जो महाराज आपको मार्ग तो

पुष्टि हे ओर ये सेवक दुर्बल क्यों हें। तब आप कहें जो हमतो इनकों बहुत बरजे हते जो तुँम या मार्ग में मति परो। परन्तुँ ईनने हमारो कह्यो मान्यो नांही ताको फल ये भोगत हें। याको आशय रूप सनातन समुझे नाहीं, जो यामें आपनें अपनों स्वरूप तथा मार्गको स्वरूप तथा सेवकन को स्वरूप तीन्यो बात दिखाई हें। सो यह जो हमने मुखारविंदसों रासपंचाध्यायीमें व्रजभक्तनको बरजे हैं, जो तुम पाछें घरकों जावो सो इनने मान्यों नाहीं। ताको फल संयोग ओर विप्रयोग सो ये भोगतहें। जा समय श्रीआचार्यजी आप मथुरां पधारे हते ता समय एक आसुरीमंत्र लिखिकें काजीनें विश्रान्तघाट ऊपर धरिराख्यो हतो। वह एसोयंत्र हतो जो वाके नीचें होईकें हिंदू निकसे ताकी चुटियां कटिजाय ओर डाढी होय ओर तातें मुसलमान होय जाय। सो एसें धर्मभ्रष्ट करत हते, ता समय श्रीआचार्यजी आप विश्रांतघाट ऊपर स्नान करनकों पधारे हते ता समय पाँच सात वैष्णव आपके संग हते, ओर दोय चार वैष्णव केशवभट्ट संग हते सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब सेवकन सहित स्नान कीए। तब काहू वैष्णवकों म्लेच्छके यंत्रको पराभव भयो नाहीं। तापाछें आप सातदिन तांई मुक्तिक्षेत्र के ऊपर श्रीभागवत को पारायण कीए, तहां तांई सब हिंदूननें स्नान कीए, सो काहूकी चुटियां कटी नाहीं। पीछें जब आप मधुवनकों पधारिवेलगे, तब वा समय सब मथुरिया चोबेननें मिलिकें आपसों विनती करी जो महाराज यह यंत्र विश्रान्तघाटके ऊपर हे सो दूरिकरिकें आप पधारो। तब आप आज्ञा कीए जो तुँम जायकें काजीसों कहो जो गोकुलके फकीर केहेत हैं, जो या यंत्र को विश्रान्तघाटपें ते उठाय

लेऊ, तब ऊन चोबेननें जायकें काजीसों कही जो हमारे श्रीआचार्यजी पधारेहें सो केहेत हें, जो या तुँमारे यंत्र कों यहांते उठाय डारों। सो सुनकें काजीने कही जो यह यंत्र तो यहां पादशाहनें धरायो हे, सो जब ऊनको हुकम आवेगो तब यह यंत्र यहांतें उठेगो। तब ऊन चोबेनने सर्व समाचार श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों कहि सुनाए तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीहस्तसों एक यँत्र लिखिके वासुदेवदासछकडाकों तथा केशवभट्टसों आज्ञा कीए जो तुँम दिल्ली जावो। दिल्ली के जितनें दरवाजे हैं तिन सबनपें एक एक यह यंत्र धरि आवो। तब वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दिल्लीकों चले सो दिल्ली जायकें सब दरवाजेनपें यंत्रनकों धरि दिए। सो वा यंत्रको यह प्रताप हतो जो कोई म्लेच्छ उहां होयकें निकसें ताकी चुटियां होय जाय ओर डाढी होय सो उडिजाय। तातें वो हिन्दू होय जाय तब या भांतिसों कितनेहु म्लेच्छ हिन्दू होय गए। तब पादशाहको खबरि भई, तब पादशाहनें हुकम कियो जो एसे यंत्रनकों उहां सों उठाय डारो। तब पादशाहके मनुष्य यंत्र उठायवे लगे, तब वह यंत्र कोईके हाथ आवें नाँहीं। तब काहुनें कही जो यंत्र तुँमारे हाथ आवेगो नाँहीं। तब वे मनुष्य पाछें फिरि गए तब पादशाहनें पूछी जो यह यंत्र यहाँ कोंननें धर्यो हे तब हलकाराननें कही जो मथुराके दोय फकीर आए हें सो यह यंत्र उननें धर्यो हे। तब इतनें में वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दोउ जनें तहां आयके ठाडे भए तब पादशाहने कही जो यह यंत्र ईहांसों उठाय डारो। तब केशवभट्ट ने कही जो साहिब यह यंत्र ईहाँसों तब उठेगो जब मथुरातें वा यंत्रकों उठाय मँगावोगे। तब

एसी हमकों हमारे गुरु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा हे। तब पादशाह अपने मनमें डरप्यो ओर कह्यो जो हम वा यंत्रकों उठाय मंगावतहें। तापाछें पादशाहनें अपने हलकारा मथुराकों भेजे सो वे हलकारा मथुरासों पत्र लाए। तब वासुदेवदासछकडा ओर केशवभट्ट दिल्ली दरवाजेनसों वे यंत्र उठायकें मथुराकों गए। सो श्रीमहाप्रभुनके पास आईकें दंडोत करिकें सर्व समाचार कहे सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप चूपकरि रहे। सो जब दिल्ली के दरवाजेनसों यंत्र ऊठे तब सब म्लेच्छननें चुटियां मुंडवायडारी तब पादशाह बाहिर बागकी सेरकों निकस्यो। जब विश्रान्तघाट के ऊपरसों यंत्र उठ्यो ता पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप संध्यावंदनको जल लेकें विश्रान्तघाटके ऊपर छिरके, तासमय श्रीमुखसों आप कहें जो आज पाछें कोई म्लेच्छ इहाँ यंत्र धरेगो सो झुँठो परेगो। तापाछें उजागर चोबेको प्रोहिताई लिखि दई। तब वाकी आज्ञा लेकें आप व्रजयात्रा करिवेकों पधारे, सो संवत् १५४९ भाद्रपद सुदी १२ शरद ऋतु में विश्रान्तघाटपें स्नान करि के नेम लेकें आप विश्रान्तघाटतें पधारें, सो मधुवन पधारे, यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप विश्रान्तघाटकी बैठकमें प्रगट कीए। ओरहू अनेक चरित्र कीए हे। इति श्रीमथुराजीमें विश्रान्तघाटकी बैठकको चरित्र समाप्त।

♣ बैठक ६ ड्डी ♣ [१]श्रीमधुवनकी बैठक को चरित्र ♣

मधुवनमें मधुवनियाठाकुर व्रजनाभके स्थापितहे, तिनके दरशन करिकें माधवकुंड कृष्णकुंडके ऊपर कंदबके नीचे

---

[१] अहीथी व्रज चोराशीकोसनी परिक्रमामां २३ बैठकों छे तेनुं वर्णन आवे छे. ते बैठकोनुं तथा परिक्रमानुं वधु वर्णन जोवा माटे वांचो "श्रीव्रजयात्रावर्णन" ए पुस्तक.

आयकें श्रीआचार्यजी आप बिराजे । तहाँ सातदिनलों श्रीभागवतकी पारायण कीए, तब मधु-वनियांठाकुर नित्य कथा सुनिवेको पधारते । सो एकदिन एक पंडा स्नान करिकें सेवा करिवेकेलिये मंदिरमें गयो, तब तहाँ मंदिर में देखे तो श्रीठाकुरजी नहीं हें । तब वह पंडा अपनें मनमें क्लेश करन लाग्यो । तब दोयप्रहर पीछें मंदिरमें वा पंडाकों श्रीठाकुरजीकों दरशन भयो । तब पंडानें पूछी जो महाराज तुम कहां पधारे हते । तब श्रीठाकुरजी कहें जो यहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारेंहें सो श्रीभागवतकी पारायण करतहें तहां सुनिवेकोंगयो हतो । सो तातें तुम बडे सवारें पूजा करिवो करो तब वा दिन सों वे पंडा बडे सवारें ऊठिके करिलेते । सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सातदिनलों श्रीभागवत को पारायण किये, तहां तांई मधुवनियांठाकुर नित्य पधारें । जा समय श्रीआचार्यजी आप व्रजयात्रा करिवे पधारे । ता समय ईतनें वैष्णव आपके सँग हते । तिनके नाम १ वासुदेवदासछकड़ा २ यादवेंद्रदास कुँभार ३ गोविंददुबे साँचोराब्राह्मण ४ माधवभट्ट काश्मीरी ५ सूरदासजी ६ परमानंददासजी इतनें वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके संग व्रजयात्रा करिवे गये हते । इति श्रीआचार्यजीकी मधुवनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७ मी ♣ श्रीकमोदवन की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजी मधुवनसों तालवन पधारे तहां तालवनके कुंड में स्नान करिकें तालवन की परिक्रमां किये । तहां कोई भगवत्स्वरूप न हतो तातें तहां श्रीभागवतको पारायण किये नाहीं । तहां आपने कारिकाही किये तामेंको श्लोक (बलभ्रदस्य

बोधाय भगवद्वचनेन हि ॥ स्वधर्माः सकला एव बलभद्रेनिरूपिताः १ लोकोनां च प्रतीत्यर्थं तेन बोधेन कारणं) तहांते आगें कमोदवनमें बैठक हे तहां कुंडके ऊपर श्यामतमालके नीचें तिन दिनलों आप श्रीआचार्यजी बिराजे ओर पारायण करी। तहां कृष्मदासमेघननें पूछी जो महाराज या वनको नाम कमोदवन क्यों हे। तब आप आज्ञा किये जो सामवेद में कथाहे, जहां व्रजको माहात्म्य कह्यो, तामें कह्यो हे जो एकसमय श्रीठाकुरजी ओर श्रीस्वामिनीजी या वनमें पधारे हते, ता समय शरदचाँदनीको प्रकाश बहुत हतो तब श्रीस्वामिनीजीनें कही जो यहां कमोद ओर कमोदिनी को वन सिद्ध होय तो आछो। तब कुमुदा ओर कमोदिनी दोय सहचरीही तिनकों आप श्रीठाकुरजी आज्ञा कीए, जो यहाँ दोय कुंड सिद्धि करो । तब कुमुदा कमोदिनीनें कमोदकुंड सिद्ध कीये। ताकी रक्षाकों विन सहचरीनकों आज्ञा कीए। तातें या वनको नाम कमोदवनहे । तब ओर वैष्णवननें मिलिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी जो महाराज कमोद ओर कमोदिनीको दरशन आपके संग न होयगो तो कब होयगो। तब आप एक श्रीगीताजीको वाक्य कहें॥ दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य में योगमैश्वरम् ॥ यह आज्ञाकरिकें दोयघडी तांई सब वैष्णवनकों दिव्यचक्षु दिये, तब कमोद और कमोदिनी सहित जलस्नान की लीला को मेहेलनको दरशन कराए तब बहुत भाव करिकें वैष्णव विवस होयरहे शरीरको अनुसंधान रह्यो नाहीं तब आपने मनमें विचारी जो ये लीला में प्रवेश होइ जायगे। तातें लीलाको तिरोधान करि तहांतें आप आगें पधारे। सो शांतनकुंड तथा गंधर्वकुंड में स्नान करि बहुलावन पधारे। यह चरित्र आप कमोदवन की

बैठक में दिखाए। इति श्रीआचार्यजी की कमोदवनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ८ मी ♣ श्री बहुलावनकी बैठक को चरित्र ♣

बहुलावनमें कृष्णकुंडके ऊपर उत्तरदिशा वडके वृक्ष नीचे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी बिराजे, तहां बैठकहे, तहां तीनदिनलों आप बिराजे। श्रीभागवतको पारायण कीए तब ऊहांके ब्राह्मणननें विनती करी जो महाराज इहाँको हाकिम यवनहे। सो बहुलागायकी पूजा करिवे देत नांहीं। वो तो कहतहे जों यह गाय होय तो हमारे आगें दानाँ घास खाय तो सुखेन तुम पूजा करो। तब आप कहें जो हाँ हाँ घास दानाँ खायगी। तब श्रीआचार्यजीनें हाकिम को बुलवायो, आप घासदानां मंगवायके वा बहुलागायके आगें धरे तब वह घास दानां खायवे लगी। वह हाकिम देखिके आश्चर्यवत् होय रह्यो तब दंडवत् करिकें कही जो महाराज कृपा करिकें मोकों आपकों सेवक करो। तब आप आज्ञा कीए जो तुमनें गायकी सेवा पूजा बंद करीहे सो छोडिदेऊ। तब तुमारो अंगीकार आगिले जन्ममें होयगो तब हाकिमनें गायकी पूजाकी छुट्टी करीदई तब सबकोई गायकी पूजा करिवे लगे। ता पाछें वह यवन बहुत वर्षतांई जीयो, पाछें जब मर्यो तब रावलके पास गोपालपुर गामहे, तामें याको जन्म मल्हाके घरमें भयो तब याको अंगीकार श्रीगुसाँईजी द्वारा भयो, तब मेहाढीमर याको नाम भयो सो याकी वार्ता श्रीगुसाँईजीके सेवकनमें लिखीहे। पाछें तहांते आगें पधारे सो तोसगाम होयकें जिखिनगाममें श्रीबलदेवजीके दरशन कीए सिंगार कीए, तहां एकरात्रि बिराजे। दमलासों आज्ञा कीए जो ये श्रीबलदेवजी प्राचीन हें, जो इनहीनें शंखचूडको मार्यो हे तातें या गामको नांम

जिखिनगांम हे । पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी मुखराई होयके श्रीकुंड पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप बहुलावन की बैठकमें प्रकट कीए । इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन की बहुलावनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ९ मी ♣ श्रीराधाकृष्णकुंडकी बैठकको चरित्र ♣

श्रीराधाकुंडमें श्रीस्वामिनीजीके मेहेलहें, तहां छोंकरके वृक्षके नीचे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे। तथा एकमास पर्यंत आप बिराजे ताके निकट श्यामतमालके नीचे आपकी बैठकके पास श्रीगुसाँईजीकी हू बैठकहे। तहां छोंकरके नीचें प्रातःकालके समय श्रीमहाप्रभुजी बिराजे हते, ता समय श्रीनाथजी ओर श्रीस्वामिनीजी बांहजोटी कीयें श्रीगिरिराज के शिखर पें पधारे तो श्रीआचार्यजी आप जानें । तासों आपको नाम श्रीगुसाँईजी श्री सर्वोत्तमजी में कहेंहें "श्रीकृष्णहार्दवित्" आप श्रीनाथजी को अभिप्राय जाने हें। तब श्रीकुंड होयकें आप श्रीनाथजी के पास पधारे। तब अंतरंग (श्रीनाथजी के संग हे) वैष्णवनकों दरशन भयो । तब वे मूर्छित होयरहे । पाछें ऊहाँते श्रीआचार्यजी आप तीसरे दिन पधारे, सो श्रीठाकुरजी की तथा श्रीस्वामिनीजीकी आज्ञा भई सो सबरो वृत्तांत दामोदरदासतें कह्यो, जो मोकों भगवद् आज्ञा ऐसी भईहे। तापाछें कमंडल को जल लेकें सब वैष्णवनके ऊपर छिरके। तब सबनकी मूर्छा मिटि । पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीराधाकुंड, कृष्णकुंड ओर आठ दिशानमें जो आठों सखीनके आठ कुंडहे तिनमें एक कुंड श्रीस्वामिनीजीनें तथा एक कुंड श्रीठाकुरजीनें खोदेहें। कृष्णकुंड हे सो तो श्रीठाकुरजीनें वेणुसों खोद्योहे और

राधाकुंड हे सो श्रीस्वामिनीजीने नखनसों खोद्योहे । तामें असाधारण जल भयो ताके भीतर श्रीस्वामिनीजीको निकुंजद्वार रत्नजडित मेहेलहे तहां सदैव आप श्रीस्वामिनीजी रमण करतहें। सो श्रीगुसाँईजीकी बैठकके चरित्र में विस्तारसों लिखिहें । ओर आठ दिशानमें जो आठ सखीनके कुंड कहे, ताके नांमकहेहें- चंद्रभागाकुंड, चंपकलताकुंड, चंद्रावलीकुंड, ललिताकुंड, विशाखाकुंड, बहुलाकुंड, संध्यावलीकुंड, चित्राकुंड इन सबनमें श्रीमहाप्रभुजी आप स्नान करिकें आगे कुसुमोखरिकूं पधारे। तहां कुसमोखरिमें स्नान कीए, जहाँ उद्धवजी गुल्मलता होयकें रहे हें तहां उद्धवजीसों आपको समागमन भयोहो तब उद्धवजीनें विनती करी जो महाराज भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधिनीजी मोको सुनावो, तब आप आज्ञा कीए जो एक श्लोक कहूँगो, सो श्लोक (भुजमगुरुसुगन्धं मुध्नर्यधास्यत्कदानु श्रीभागवत स्कं. १० अ ४७ श्लोक २१) ये चतुर्थपादको अर्थ करत करत तीन प्रहर भए तहां तांई आप ठाडेही रहे, शरीर को अनुसंधान कछू रह्यो नांही तब उद्धवजीनें विनती करी जो महाराज चतुर्थपादको अर्थ मोको अवधारण होय गयो । तब आप आज्ञा कीए जो हमनें तो एक श्लोकको संकल्प कीयोहे तितनों कहेंगे । तुमसों जितनें धारण होय तितनों करो । तब आपनें बारह प्रहरमें एक श्लोकको अर्थ कह्यो, तब तांई सब भगवदीयनकों महा आनंद भयो। क्षुधा प्यास कछू बाधा करी नांही । तापाछें आप नारदकुंड में स्नान करि ग्वालपोखरमें स्नान करिके मानसीगंगा चक्रतीर्थके नीचे आयकें बिराजे । यह चरित्र श्रीराधाकुंडकी बैठकमें प्रगट कीए । इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीराधाकुंडकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १० मी ♣ श्रीमानसीगंगाकी बैठक को चरित्र ♣

मानसीगंगाके ऊपर आपकी बैठकहे तहाँ सातदिन ताँई आप बिराजे। श्रीभागवतकी पारायण कीए, तहाँ कृष्ण चैतन्यकी भजन करिवेकी बैठकहे, तहां कृष्णचैतन्य छे महिनांसों बेठेहते ओर यह संकल्प कियो हतो जो सवालक्ष भगवन्नाम लेनों । तापाछें काहूसों संभाषण करनों । सो भगवन्नाम सवालक्ष पूरे नाहीं भये हते, ता समय काहुनें कही जो यहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारें हें । तब यह सुनकें कृष्णचैतन्यनें ऊठिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु साष्टांग दंडवत् करी। तब आप आज्ञा कीए जो तुमकों इहां कितने दिन भए हें । तब कृष्णचैतन्यनें कह्यो जो हमकों इहां छे महिनां भएहे। मानसीगंगा में स्नानकरतें सो यह काछा हे। पुराणमें कह्योहे जो मानसीगंगा दूधमयहे सो ताको दरशन होईगो तब स्नान करिकें श्रीजगन्नाथराय देवकों जाऊँगो। आज रात्रमें मोसों मानसीगंगाने कह्यो हे जो आज रात्रमें श्रीआचार्यजी आप पधारेंगे तब तेरो सर्व मनोरर्थ सिद्धि करेंगे। तब आप कहें जो आज तुमारो सर्व मनोरथ पूर्ण होयगो । एसें कहिकें कमंडलुको जल लेकें आपने सब वैष्णवनके नेत्रनपें छिरके । तब दिव्यचक्षु भए, तब सबनको मानसीगंगा को स्वरूप आधिदैविक दुग्धमय दरशन भयो। सब वैष्णव दरशन करिकें स्नान कीए। तब सबनके मनमें आविर्भाव भयो, सो दोयघडी रात्रसों लगायके आठघडी दिन चढ्यो तबलों सबनकों एसो दरशन भयो । तापाछें उनके नेत्रनमेंतें लीलाको तिरोधाँन कीए। ओर जब ताँई आप श्रीभागवतको पारायण कीए, तबतांई चक्रेश्वर महादेवजी नित्य कथा सुनिवेको आवते । तहां महादेवजीको मुखिया हतो, वह नित्य पूजा करतो वाको नित्य

साक्षात् दरशन होतो । एकदिन वाकों मध्याह्न पर्यंत दरशन नांही भयो, पाछें मध्याह्न उपरांत जब श्रीभागवतकी पारायण पूर्ण भई तब श्रीमहादेवजी अपनें देवालयमें आए तब वाकुँ दरशन भयो । तब वा ब्राह्मणनें पूजा करी ओर पूछी जो महाराज अब तांई आप कहां गये हते, तब श्रीमहादेवजी कहें जो हम नित्य श्रीमहाप्रभुजीके पास कथा सुनिवेकों जातहें, सों जब हम आवें तब तुम पूजा कियो करो । सो एकमास तांई आप श्रीमहाप्रभुजी वहां बिराजे, तहांतांई यमुनावतो तथा किलोलकुंड अडींगमें स्नान करि आए। अब श्रीगोवर्धनमें ब्रह्मकुंड, रिणमोचन, पापमोचन, धर्मरोचन, गोरोचन, निवर्तकुंड, ईतनें कुंडन में स्नान करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप परासोली पधारे । यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें मानसीगंगाकी बैठकमें प्रगटकीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी मानसीगंगा की बैठकको चरित्र समाप्तः

♣ बैठक ११ मी ♣ (श्री चन्द्रसरोवर) श्रीपरासोलीकी बैठकको चरित्र ♣

परासोलीमें बंसीवटके रासके दरशन कीए। तहां चंद्रसरोवर में चंद्रकुपमें स्नान कीए। चंद्रसरोवरसों नेंक दूरी छोंकरकें नीचें आपकी बैठकहे। तहां आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीभागवतको पारायण किये, सातदिन बिराजे ओर भगवदीयनको रासलीलाके दरशन करवाए । तहाँ एक वैष्णवनें आपसों विनती करी जो महाराज श्रीगिरिराजजी के दरशन साक्षात् केसें होय, तब आप आज्ञा कीए जो श्रीगिरिराजजी की एकदिनमें तीन परिक्रमाँ करे बिचमें कहुँ बेठे

नाँहि तब श्रीगिरिराजजी निजस्वरूपको साक्षात् दरशन देइँ। तब वह वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको साष्टांग दंडवत् करिकें गयो सो वानें श्रीगिरिराजजीकी तीन परिक्रमाँ करी तब वानें प्रथमतो एक श्वेत भुजंग देख्यो, तब असगुन जाँनिकें एक घडीताँई ठाडो रह्यो। तापाछें आगें चल्यो सो पूँछरीकी ओर एक ग्वालिया मिल्यो। वानें कही जो अरे बेरागी तूँ आगे मति जाय। आगें तो सिंघ ठाडोहें तब वाके चित्तकों भय भयो तब वानें श्रीआचार्यजीके स्वरूपको चिंतन मनमें कियो। तब वह सिंघ अंतर्धान होय गयो। तापाछें सुंदरशिलाके पास एक गाय ठाडी देखी ताकी परिक्रमाँ करिकें तत्काल वो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें आय ठाडो भयो, ओर श्रीआचार्यजीकों दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज आपकी आज्ञातें श्रीगिरिराजकी तीन परिक्रमाँ करि आयो ओर मोकों श्रीगिरिराजजीको साक्षात् दरशन भयो। तब आप आज्ञा कीए जो वेदमें श्रीगिरिराजके पाँच प्रकारके स्वरूपको वर्णन कियो हे। तामें एकतो गौरभुजंगस्वरूप, एक ग्वालस्वरूप, एक सिंघस्वरूप एक गायस्वरूप ओर एक स्थूल भएहें एसे पांच स्वरूपहें। जबतूँ यहांतें चल्यो तब प्रथम तो तेंनें एक भुजंग देख्यो तब असगुन जांनिके ठाडो भयो, पाछें तेनें ग्वाल देख्यो, पाछें एक सिंघ देख्यो पाछें एक गायको दरशन भयो। तेनें मेरी आज्ञासों श्रीगिरिराजकी तीनि परिक्रमा करी, तासों तोकों श्रीगिरिराजके चार्यो स्वरूपन को दरशन भयो ओर यह स्थूलस्वरूपको दरशन तो सब कोई करेहें, एसें कहिकें मुसिकायके आप चुप करिरहे। पाछें आप दामोदरदासतें आज्ञा

कीए जो दमला श्रीभगवान् साक्षात् दरशन देंय ओर ज्ञान होय सो यह भगवत्इच्छा जांनिये। ता पाछें दिवारीको उत्सव जांनिके सुंदर शिलासों विजयकीए सो आप पेंठोगाम पधारे, तहां श्रीनारायणनें तपस्या करीहे, तब व्रजलीलामें प्रवेश भयोहे। तहां लक्ष्मीकुपहे तहां श्रीलक्ष्मीजीने तपस्या करीहे। तामें आप स्नान कीये सो यह कथा सामवेदमेंहे। तापाछें तहां तें आन्योरमें पधारे यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी परासोली (चन्द्रसरोवर) की बैठकमें प्रकट कीए। इतिश्री आचार्यजीमहाप्रभुन की परासोली की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १२ मी ♣ श्रीआन्योरकी बैठकको चरित्र ♣

आन्योर में सदूपांडेके घरमें आप श्रीआचार्यजीकी बैठकहे, तहां श्रीमहाप्रभुनको तथा श्रीनाथजीको मिलाप भयोहे। तब श्रीआचार्यजीने एक छोटोसो मंदिर बनवाईके तामें श्रीनाथजीको पाट बेठायोहे सो या बैठकको चरित्र बहुतहे, जो श्रीनाथजी को आपनें प्रकट कीएहें। सो सब निजवार्ता में प्रसिद्धहे तातें यहां नाहीं कहे। पाछें तीनदिन तांई श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तहां बिराजे ओर श्रीभागवत को पारायण कीए, यह चरित्र आपने सदूपांडेके घर में प्रगट कियो इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आन्योरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १३ मी ♣ श्रीगोविंदकुंडकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोविंदकुंडपे बैठकहे, तहां श्रीआचार्यजी आप तीनदिनलों बिराजे ओर श्रीभागवतको पारायण करे। तब कृष्णदासमेघनने विनती करी जो महाराज श्रीगिरिराजमें व्यापिवैकुंठ सुनेंहें ताको दरशन हमकुं करवाओ यह सुनिके

श्रीआचार्यजी आप चुप करिरहे । तापाछें दिन दोय घडी बाकी रह्यो हतो ता समय गोविंदकुंड के समीप श्रीगिरिराज के ऊपर आप बिराजे हते, तब कृष्णदासमेघनको अंगुरिया करिके बताए जो ऊह शीला दीसेहे, ताकों उठाय, ताके भीतर कंदरा निकसेगी या कंदराके भीतरतूँ चल्यो जाइयो, तहां व्यापिवैकुंठको दरशन होयगो । तब कृष्णदास तहां जायके देखे तो एक कंदराहे वा कंदरामें चल्यो गयो सो तीन दिनलों चल्यो तब तहां ईनको व्यापि वैकुंठको तथा लीलासामग्रीको दरशन भयो । तापाछें ऊपर एक शुक देख्यो सो वह अष्टाक्षरमंत्रकोउच्चार करे, तब कृष्णदासमेघनने तीन बेर श्रीकृष्णस्मरण कियो, तब वाने तीन बेर जलमें चोंच बोरिके जल पियो । फेरि भगवद्नांमकों उच्चार करिवे लग्यो । तब ईतनें में कृष्णदासमेघन को निद्रा आयगई, तब गोविंदकुंड ऊपर कृष्णदास आय ठाडो भयो तब देखे तो घडीदोय दिन चढ्योहे । तब कृष्णदासनें विनती करी जो महाराजाधिराज आपने लीलासामग्री के दरशन करवाए तब आप कहें जो तुमनें लीलासामग्रीहीकी विनती करी हती एसें कहिके आप चुपकरि रहे । तब कृष्णदास फेरि कहें जो महाराज वह पक्षी कोंनहतो, तब आप कहें जो वह पक्षी सारस्वतकल्पकोसूआ हतो, वाकों श्रीस्वामिनीजीनें श्रीकृष्णनांम पढायो हतो, सो ईतनें दिनसों वह माधुरिके वृक्ष ऊपर बेठिकें भगवन्नाम लेत हतो, ओर वह माधुरीकुंडहे तामें जल पान नांहीं करतो, जो जल पांन करूंगो तो भगवन्नाम में अंतराय परेगो सो तेनें तीन बेर भगवतस्मरण कियो तब वानें तीन बेर चित्त देकें जल पांन कियो । जीवको भगवन्नाममें एसी आसक्ति होनी चाहिये । वाको श्रीस्वामिनीजीको वरदान हतो, जो जा दिन

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक आईकें श्रीकृष्णस्मरण करेगो तब तेरो शुक शरीर छूटिकें निज लीलामें सहचरी होयगो तातें तोकों वाके लीयें उहां पठायो हतो। जब एकसमय श्रीस्वामिनीजीकों प्रभुनके लियें उहां पठायो हतो तब क्षण एक युगके समांन भयो (क्षणयुगसतविप्रमया सो येन विरहा भवेत्) सो या श्लोकार्थमें ते कृष्णप्रेमामृत ग्रन्थ आप श्रीआचार्यजीनें कीयो तामेको एक श्लोक (एकदा कृष्णविरहात् ध्यायन्ती प्रियसङ्गमम् मनोबाष्पनिरासाय जल्पन्तीदं मुहुर्मुहुः) या ग्रन्थमें श्रीकृष्णके एकसो सोलह नांम कहेहें, ताको आप श्रीस्वामिनीजी जप करत भये, तबही प्रभुनको समागम भयो । सो संयोगरस प्राप्ति भइ । तब प्रभुनकों पूछी जो या ग्रन्थको दांन कोंनकों करूं, तब श्रीठाकुरजी कहें जो तुमारी बराबर होय ताको दीजियो, जो मेरे समान होयगो सोई बांचेगो । तब वह ग्रन्थ श्रीस्वामिनीजीनें आपनें श्रीगिरिराजपें लिख्यो हतो सो तहां सो यह ग्रन्थ श्रीआचार्यजी आपके हाथ लाग्यो, जा समय तहां श्रीस्वामिनीजीके श्रीहस्ताक्षर आपनें मनमें बांचके पाठ किये, ता समय कृष्णचैतन्यगोडिया तथा केशवभट्टकाश्मीरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास ठाडे हते विनसों ये श्रीस्वामिनीजीकें हस्ताक्षर बांचे न गये, तब विनको श्रीआचार्यजीनें श्रीस्वामिनीजीकें श्रीहस्ताक्षर वांचि सुनाये । तब कृष्णचैतन्यनें आपसों विनती करी जो महाराज कृपा करिकें या ग्रन्थको दान हमकों करों, ऊननें वा ग्रन्थकी प्रार्थना करी, तब वह ग्रन्थ आपने कृष्णचैतन्यकूं दियो ओर काश्मीरीकों न दीयो । सो यातें जो एकबेर श्रीजगन्नाथरायजी आज्ञाकिये हते जो अब तुम अपने मारगीनकोही ग्रन्थ दीजो, सो वह बातकी सुधि करिकें

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वह ग्रन्थ कृष्णचैतन्यकोंही दीयो। अब गोविंदकुंड ऊपरसों आप विजय कीये सो संकर्षणकुंड तथा गांधर्वकुंडमें स्नान करि सघनकंदरा तथा अप्सराकुंड होय श्रीबलदेवजीके दरशन करिकें ऐरावतकुंडपें श्रीबलदेवजी के दरशन करिकें कदमखंडी होयके दंडोतीशिलापें एक छोटेसे मंदिरके पास छोंकरको वृक्ष हे तहां आप पधारे तहां बिराजे यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोविंदकुंडकी बैठकमें प्रगट कीए इति श्रीगोविंदकुंडकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १४ मी ♣ श्रीसुंदरशिला की बैठकको चरित्र ♣

तहाँ सुंदरशिलाके सामनें छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजी आय बिराजे तहाँ प्रथम श्रीगोवर्धनकी पूजा करि दीपमालिका करे ओर अन्नकूट उत्सव कीए या बैठकमें श्रीआचार्यजी आप सवासेर भातको अन्नकूट कीएहते, ताको दरशन श्रीगुसाँईजीनें श्रीगोकुलनाथजीकों तथा श्रीशोभाबेटीजीकों अद्भुत अलौकिक करवाए। सो वार्ता वचनामृत में प्रसिद्धहें। एकसमय तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोजनकरिकें छोंकरकें नीचें बिराजे हते दामोदरदासकी गोदमें श्रीमस्तक धरिके पोढे हते, तासमय श्रीनाथजी पधारे, तब दामोदरदासजीनें बरजे जो आप मति पधारो। तब आपके नुपूर सुनिकें श्रीआचार्यजी आप जागिपरे, ओर आप श्रीनाथजी तो ऊहांई ठाडेरहे, तब आप श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजी कों अपनी गोदमें बैठारिके श्रीकपोल परसिकें मुख चुंबन किए। यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप सुन्दरशिलाकी बैठकमें प्रगट किए। इति श्रीसुन्दरशिलाकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १५ मी ♣ श्रीगिरिराजजीकी बैठक को चरित्र ♣

श्रीगिरिराजजीके ऊपर श्रीनाथजीके मंदिरमें दक्षिण भाग एक चोंतरी हती तांपें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे तहां सेवाके अवकाश में आप बिराजते। एकसमय श्रीनाथजीके सिंगार करिकें वा चोंतरीपें बिराजे हते, कारण जो सामग्री सिद्धि भई न हती। तातें गोपीवल्लभमें ढील भई। ईतनेंमें श्रीस्वामिनीजी थार लेकें पधारे, तब नुपूरको शब्द सुनिकें श्रीआचार्यजी दामोदरदासतें कहें जो दमला हमनें तो ढील करी, परन्तु श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभको थार लेकें पधारेहें। क्यों जो वे ढील केसें सहे, तातें सिंगार भए पाछें गोपीवल्लभमें ढील न करनी। पाछें देवप्रबोधिनी पर्यंत श्रीगिरिराजमें श्रीआचार्यजी बिराजे, तहां दोय पारायण श्रीभागवतकी कीए। एक प्रदिक्षणां श्रीगिरिराजकी कीए [कोई सातभी लिखें हें] पीछें गुलालकुंड, बिलछू, परमँदरो श्रीदामासखाको गांम हे तहाँ आप एकरात्र रहे, तहाँ सो दूसरेदिन विजयकीए। सो जहां आदिबद्रिको स्वरूप धरिके श्रीजीने अपने सखानको दर्शन दीएहें। तहां सघनबनहे, तहां एक रात्र बिराजे। तापाछें तहांते दूसरेदिन इंद्रकूपमें आचमन करि आगें कामवन पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें श्रीगिरिराजजीकी बैठक में प्रगटकीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीगिरिराजके मंदिरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १६ मी. ♣ श्रीकामवनकी बैठकको चरित्र ♣

कामवन में सुरभीकुंड (श्रीकुंड) के ऊपर छोंकरके नीचे

---

१ (श्रीगिरिराज ऊपर श्रीनाथजीना मंदिरमां आ बैठक हाल प्रगट नथी)

आप श्रीआचार्यजीकी बैठकहे, आप तहां सातदिन बिराजे ओर चोराशी कुंड में स्नान करि श्रीभागवतको एक पारायण कीए। एकदिन रात्रमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिराजेहते, तहां एक ब्रह्मपिशाच बहुत दिननसों सुरभीकुंडकी पारिके ऊपर रेहेत हतो वानेंकोई एसो पापकीयो हतो जो वा व्रजकी रजसोंहु मुक्त न भयो सो जो कोऊ रात्रमें सुरभीकुंडके ऊपर रहतो ताकों वह भक्षण करिजातो, तातें वहांके तीर्थगुरुने आपसों विनती करी जो महाराज दिनमें तो यहाँ आप सुखेन बिराजो परि रात्रमें आप गांममें जाय बिराजियो, क्यों जो यहाँ ब्रह्मपिशाच दुःख देतहे। तब यह सुनिके आप श्रीआचार्यजी चुप करि रहे, कछू उत्तर न दीए ओर रात्रको आप ऊहांई बिराजे। जब अर्धरात्र भई तब वह ब्रह्मपिशाच निकस्यो, ता समय एक वैष्णव धोती धोयके अपरस में सूकावत हतो। तानें देख्यो सो देखिकें वैष्णवनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी जो महाराज ब्रह्मपिशाच दूरि दूरि डोलतहे तब श्रीआचार्यजी आप कहे जो यह आगिले जन्मको तो ब्राह्मण हतो या कामवनको राज्य करतो हतो, यानें ब्राह्मणनकों बहुत भूमि दांन करी हती, पाछें फेरि यानें ले लीनी हती ता अपराध करिकें यह ब्राह्मण पिशाच भयोहे। दोयसों वर्ष याको भए हें, सो व्रजरजसों हू याकी मुक्ति न भई। तब वा वैष्णवनें विनती करी जो महाराज आपके दर्शनतें हू याकी मुक्ति न भई? तब श्रीआचार्यजीनें वापें अपरसकी धोतीको जल छिरकवाए, ता जल करिकें वह मुक्त होय गयो। सो दिव्य शरीर धरिकें वैकुंठको गयो। तब सुरभीकुंडपें निर्भयता भई। पाछें श्रीआचार्यजी कदमखंडीपें होयके, चित्र विचित्र होयके, ऊँचे

गांम होयके, भानोखरि प्रभृतिमें स्नान करिके, श्रीलाडिलीजी के दर्शन किये तथा अष्ट सखीनके दर्शन करिके आधेपर्वतके ऊपर बिराजे, तहां आपकी बैठकहे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने कामवनकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीकामवनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १७ मी ♣ अथश्रीगहवरवनकी बैठकको चरित्र ♣

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक बरसाना गहवरवन में कुंडके ऊपरहे। तहां आप सातदिन बिराजे ओर श्रीभागवतकी एक सप्ताह कीए फेरि एकदिन गहवरवनको देखिवेको आप पधारे, तहां सिंह, व्याघ्र बोहोत देखे, ताके आगे देखे तो तहां एक अजगर पर्यो हे ओर वाको चेंटा बहूत काटतहे वाको देखिके श्रीआचार्यजीकों दया आई। तब आप दामोदरदासतें कहें जो दमला यह अजगर आगिले जन्म में वृन्दावनको महंत हतो। यानें उदर भरिवेके लियें सेवक बोहोत कीए हते, ओर द्रव्यहु बहुत भेलो कियो हतो, सो सब विषय हेतुमें लगायो। भगवद्हेतु में कछू न लगायो ओर भगवद्भजनहू कछू नाहीं कियो, तातें यह मरिकें अजगर भयोहे, ओर जितनें सेवक किये हते सो सब मरिकें चेंटा भएहे, सो अब याकों काटत हें ओर यासों केहेत हैं जो अरे अधर्मी ! तेनें हमारो जन्मारो वृथा खोयो। तेनें हमको सेवक काहेकों कीये हते, उद्धारतो दोय बातनसों होतहे। एक भगवन्नामसों तथा भगवत्सेवासों या दोनोंनमेंतें कछू न भयो ओर यानें श्रीवृन्दावनमें वासकीयो हतो तातें यह व्रजही में रह्यो। सो व्रजको जीव अंत नहि जातहे, जातें दुःख सुख सब व्रजमेंहीं भोगवतहे। सो अब हमारी दृष्टि पर्योहे, सो अब अपनें सब

सेवकन सहित मुक्त होयगो, ऐसें आज्ञा करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपने अंगुष्ठको चरणोदक करिकें अपनें सेवकन द्वारा वापें छिरकवाये। तब ताही समय वाको अजगर शरीर छूटिकें दिव्य शरीर भयो, सो शिष्यन सहित विमानमें बेठिकें पार गयो, सो सिधो वैकुंठको चल्यो गयो। सो सब वैष्णवनको तथा सब बरसानें के व्रजवासीनकों दिखायो, सो देखिकें सब वैष्णव प्रसन्न भए। तापाछें आप बरसानें तें पधारे सो पीरी पोखर तथा प्रेमसरोवर में स्नान करिकें आप संकेतवट पधारे। इति श्रीगहवरवनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

प्रेमसरोवर ऊपर श्रीमहाप्रभुजीनी बैठक एक वृक्ष नीचे छे। पण आ स्थलना बैठक चरित्रनुं वर्णन असल हस्तलिखित पुस्तकोमां जोवामां नथी आवतुं। केटलाक आ बैठकने श्रीगुसाँईजीनी बैठक छे, एम पण कहे छे। श्रीगुसाइंजीनी बैठक चरित्रमां आ बैठकनुं चरित्र छे ते आगल आवशे.

♣ बैठक १८ मी ♣ श्रीसंकेतवटकी बैठकको चरित्र ♣

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक संकेतवटके समीप कृष्णकुंडके ऊपर छोंकरके नीचें हे। तहां सातदिनको श्रीभागवतको पारायण कीए, तहां एक स्त्री बहुत सुंदर षोडश वर्षकी अनेक आभूषण करिकें भुषित रत्नजटित डांडीको चमर हाथमें लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों चमर करिवे लगी। सो जहांतांई श्रीभागवतको पारायण होय तहांतांई ठाडी रहे, वाकों वैष्णव बरजिवे लगे। तब श्रीआचार्यजी आप नांहीं कीए। एसें सातदिनलों वानें चमर कीयो। जब कथाकों आरंभ होय तब वो आवे, जब कथा संपूर्ण होय तब अंतर्धान होय जाय पीछें वाकों कोई देखे नहीं। तब एकदिन एक वैष्णवनें आप सों पूछी जो महाराज यह स्त्रीकोंनहे, ओर कहांतें आवेहे, तब आप

मुसिकायकें चुपकरि रहे। फेर आप आज्ञा कीए जो संकेतदेवीकों हमारे दर्शनकी तथा सेवाकी बहुत आरति हती, सो सेवा प्राप्त भईहे। तापाछें तहांतें आगें पधारे सो रीठोरामें श्रीचंद्रावलीजी के दर्शनकरि नंदगाम में पांनसरोवरपें नेंक दूरि नंदछोंकर हे, तहाँ श्रीनंदरायजी दसेराके दिन पूजन करते, तहाँ आप पधारे। ताके नीचें श्रीआचार्यजीकी बैठकहे। यह चरित्र संकेतवटकी बैठक में प्रगटकीए। इति श्रीसंकेतवटकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक १९ मी ♣ श्रीनंदगामकी बैठकको चरित्र. ♣

अब नंदगाम में पानसरोवरके ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे। तहां खटमासलों आप बिराजे। पाछें पारायणकीए ओर आज्ञाकीए जो ईहां उद्धवजी खटमासलों बिराजे हें, तातें हम खटमास पर्यंत रहिके श्रीनंदरायजीको श्रीभागवत सुनावेंगे ओर यहाँके क्रीडास्थलनके दर्शन करेंगे। तब एक दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पानसरोवर ऊपर बेठे हते, तासमय एक मुगल घोडाकूं पानी प्यायवेको लायो सो पानसरोवर में पानी प्याय के ले चल्यो। ता समय घोडाके पेटमें कुरकुरी दोरि, तातें वह घोडा लोटपीटिके मरिगयो, सो वह घोडा चतुर्भुज स्वरूप धरि विमानमें बेठिकें वैकुंठको गयो। तब वाकों सात्वकीय आविर्भाव भयो, सो श्रीआचार्यजीनें देख्यो, तब मस्तक धुनायो, तातें वैष्णवननें विनती करी जो महाराज घोडा मर्यो देखिके आपनें मस्तक धुनायो ताको कारन कहा। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब वैष्णवनको दिव्यदृष्टि दीए ओर सब वैष्णवनतें कहे जो तुम ऊँचे

देखो । तब सब ऊँचीदृष्टि करिके देखें तो वह घोडा विमान सहित वैकुंठको चल्योजातहे । ता पाछें दिव्यदृष्टि तो मिटिगई । तब वा घोडावारे मुगलनें सब वैष्णवनतें विनती करी जो तुम मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक करवावो, तब सब वैष्णवननें श्रीआचार्यजीसों विनती करी, तब आप वा मुगलको कहे जो तेरो अंगीकार दूसरे जन्ममें होयगो सो सुनिके वह मुगल फिरि गयो । परन्तु वाको अष्टप्रहर श्रीमहाप्रभुनको ध्यान रहे, सो देह छूटे, पीछें वानें नवानगर में मोचीके घर जायके जन्म लियो । तब संगजीभाइ वाको नाम भयो सो मेले मंत्र वापें बहुत आवते । वानें एक वैष्णवसों लडाई करी वापें वीरविद्या हती सो वानें प्रयोग करिकें अर्द्धरात्रकों वा वैष्णवकों मारिवेकों वीर भेजे सो वीर वा वैष्णवके घर जाय सके नाहीं । पाछें फिरिकें आयकें वासों कही जो वे तो श्रीगुसाँईजीके सेवकहें, बडे महापुरुषहें, विनसों हमारी नांहीं चले । जब सवारो भयो तब वह मोची वा वैष्णवके पायन आय पर्यो ओर विनती करिके कही जो आप तो बडे महापुरुष हो । आप हमकों सेवक करो । तब वा वैष्णवनें कही जो तुम मेले यंत्र मंत्र छोडिदेऊ, तब तुमकों सेवक करावें । तब वा मोचीनें सब मेले यंत्र मंत्र छोडिदीए । तब केतेक दिन पीछें श्रीगुसाँईजी आप श्रीद्वारिकाजी पधारे, तब नवानगर के सब वैष्णवननें विनती करी जो महाराज कृपा करिकें याकों शरण लीजिये । तब आप आज्ञाकीए जो याकों अंगीकार करवेकों तो हम इहां पधारेही हें । तब श्रीगुसाँईजीनें वा [१]मोचीकों नाम दे ब्रह्मसंबंध करवाए। कुँमकुँम वस्त्रपें धरिकें अपने

---

[१] जुओ बसेबावन वैष्णवनी वार्तामां वार्ता १०८ मी.

चरणारविंदकी सेवा पधराय दीए। तब वह धोती ऊपरनाँ पहरिवे लग्यो, ओर बडी अपरसतें सेवा करतो। तब तहांके ब्राह्मण स्मार्त हते सो सब ईर्षा करन लागे तब ऊहाँको राजा जामंतकमाची हतो तब वे ब्राह्मण वा राजापें जायकें पुकारे जो सुनो राजाजी ईहां एक अतिशूद्र रहते सो वह ब्राह्मणनकी चाल चलत हे, सो सुनिकें वा राजानें वा मोचीकों बुलायकें पूछी जो तूं ब्राह्मणनकी चाल क्यों चलतहे। तब वा मोचीनें कही जो मोकों श्रीगुसाँईजी अपनों सेवक करिकें ब्राह्मण कीयेहें। तब यह सुनिके राजा बहुत प्रसन्न भयो, ओर केहेन लाग्यो जो ब्राह्मण भ्रष्ट होय जाय सो तो शूद्र होय जाय। परन्तु कहूँ शूद्र ब्राह्मण भयोहे ? जो दूधमें तें छाछि तो होतहे, परन्तु कहूं छाछिमें तें दूध भयोहे। तब संगजीभाई नें कही जो राजाजी छाछिमें तें दूध होयजाय तो आप मानों। तब राजानें कही जो यह बात तो आछीहे। तापाछें राजानें छाछिकी चपटिया भरवाय मंगाई, ता समय सब सभा भेली भई बेठी हती ओर सब ब्राह्मण बेठे हते। तब वे छाछिकी चपटिया सभाके बीचमें धरी। तब संगजीभाईनें सब सभाके देखते कह्यो जो मोकों श्रीगुसाँईजीनें ब्रह्मसंबंध करायकें ब्राह्मण कियो होय तो छाछिमें तें दूध होय जैयो ओर जो में मोचीको मोची होऊं तो छाछकी छाछ रहियो। तापाछें मटुकी खोले तब देखें तो छाछिमें तें दूध न्यारो होय गयोहे। तब जामंतकमाची तथा सब ब्राह्मण चक्रत होयरहे। तब सबननें प्रमाण कियो जो श्रीगुसाँईजी के ब्रह्मसंबंधको बडो प्रभावहे। पाछें जामंतकमाची तथा सब ब्राह्मण, श्रीगुसाँईजी फिर वहां पधारे, तब आपके सेवक भए। तब वे सब अपरससो सेवा

करिवे लगे । तब वा मोचीकों कोई टोकतो नाँहीं, क्यों जो वा राजाको परमानों होय गयो । तहां केशवदास तथा गोविंददास दोऊभाई सारस्वत ब्राह्मण हते तिनके संगतें वह संगजीभाई वैष्णव भयो हतो, सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दृष्टि वा मुगल ऊपर परी हती, ता करिकें वह मुगल बडो भगवदीय भयो हतो । सो वा संगजीभाईके संगते राजा जामंतकमाची ओर सब ब्राह्मण भगवदीय भए, सो श्रीगुसाँईजीके सेवक भए ओर अनेक जीवनको श्रीगुसाँईजी आप उद्धारकीए । सो याही जन्म में वा संगजीभाई लीलामें प्राप्त भए, ओर बहुत विस्तार संगजीभाईकी वार्तामेंहे, यासों यहां संक्षेपमात्र लिखे हे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नंदगामकी बैठक में दिखाए, पाछें श्रीआचार्यजी आप तहांसों विजय कीए सो करहला, अंजनोखरि, पिसायो, खिद्रवन होय जाववट होयकें आप कोकिलावन पधारे । इतिश्री नंदगामकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

श्रीकरहलाः- आ स्थले कुंड ऊपर श्रीमहाप्रभुजीनी बैठक छे तेम श्रीगुसाँईजी तथा श्रीगोकुलनाथजीनी एम त्रण बैठको साथे साथे छे. छतां आ स्थलनुं चरित्र वर्णन नथी ने बैठक त्रणे प्रगट छे. श्रीगुसाँईजी तथा श्रीगोकुलनाथजीनी बैठक चरित्र वर्णन आगळ आवशे, पण श्रीमहाप्रभुजीनी बैठक चरित्र नथी. माटे कोई अनुभवी वैष्णवना जाणमां चरित्रवर्णन होय तो अमने मोकली आपवा कृपा करशो ॥

♣ बैठक २० मी ♣ श्रीकोकिलावनकी बैठकको चरित्र ♣

अब कोकिलावनमें श्रीकृष्णकुंडके छोंकरकें नीचे आचार्यजीमहाप्रभुजीकी बैठकहे तहां एकमास पर्यंत आप बिराजेहे तहां कोकिलावनमें निंबार्कसंप्रदायको चतुरानागा करिकें वैष्णव हतो वाके संग हजार नागा सदाँ रहते वाने आईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत् करी ओर विनतीकरी जो

महाराज आप विष्णुस्वामीके मतके आचार्यहो, जगतमें विजय कियोहे, मायामतको खंडन कियोहे, ओर भक्तिमार्गको स्थापन कियोहे। तातें हमारे हजारों साधु हें तिनकों खीरको भोजन करवावो। तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो बहुत आछो ईनको भोजन करवावेंगे। तब आप कृष्णदासतें कहे जो कहूँते पाँचशेर दूध लावो, तब कृष्णदास नंदगाममें तें पाँचशेर दूध लाए। तब आप श्रीआचार्यजीनें वासुदेवदासछकडासों कही याकी खीर करिकें इन हजारन बेरागीनकों जिमायदेऊ। तब वानें खीर सिद्धि करी, श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनी दृष्टि करिकें देखें, तब देखतमात्र वह खीर अक्षय होयगई। तापाछें ऊन बेरागीनतें आपनें कही तुम पातरि दोनाँ लेकें अपनी पंगति करिकें बेठो। तब वे नागा पंगति करिकें बेठे। वासुदेवदासछकडा जिमायवे लगे। तब सब नागानकों जिमाई दीए, पाछें सब वैष्णव भली भांतसों जिम ऊठे ओर खीर पाँचशेर ज्योंकी त्यों रही, निबटी नांहीं। पाछें आप आज्ञा कीए जो ईहांके बंदरनकों तथा मोरनको खवाय देउ। तब ऊनहुँकों खवायदई, तोहु खीर ज्योंकी त्यों रही निबटी नांही। तब आप आज्ञा कीए तो यह खीर मेंनें द्रष्टिकरिकें प्रसादी करिदईहे तातें तोकों कछू बाधा नांहीं। तूं लेजा छोडे मति। तब एक हांडी लायकें तामें वा खीरकों ठलायकें वासुदेवदासछकडा लेगए। तब वह खीर निबटी। यह चरित्र देखिकें चतुरानागा दोउ हाथ बांधि गरेमें पटुका डारिकें आईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकुं दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराजाधिराज आप तो पूर्णपुरुषोत्तमहो, आपको स्वरूप मेंने जान्यो नांही। अब आप कृपा करिकें मोकों आपनों सेवक

करिए । तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए जो तुम सेवकही हो जो आगे हमारे नांती श्रीगोकुलनाथजी नांम करिकें प्रगट होयगें, सो तुमकों सेवक करेंगे । तब वा चतुरानागानें विनती करि जो महाराज तहांताई मेरे शरीरकी यह स्थिति केसें रहेगी, तब आप आज्ञा कीए जो तेरी डेढसों वर्षकी आयुष्यहे । तामें अब चालीस वर्ष ताकों भएहें, बाकी एकसो दसवर्षके भीतर तेरो अंगीकार कीयो जायगो । पाछें चतुरानागा आछो भगवदीय भयो सो ब्रजमें पर्यटन करतो । एक समय चतुरानागा चलेजात हते, तब एक वृक्ष में जटा अरुझी सो सुरझावन लागे सो सुरझावतिसमें वृक्षको पतौआ टूटि पर्यो, तब तीन दिन तांई ठाडे रहे ओर जटा सुरझी नांहीं । सो श्रीनाथजीनें आईकें जटा सुरझांई, वाको श्रीनाथजीके श्रृंगारकों नेंम हतो । केतेकदिन पाछें जब बादशाहनें सबकी माला उतरवाइ हती तब एकदिन श्रीगोकुलनाथजी मथुरां पधारे हते, मार्गमें चतुरानागा मिल्यो।तब माला न देखी, तब आप चतुरानागासों आज्ञा कीए जो अरे चतुरानागा ! हम गृहस्ती होयकें माला नांही उतारत हें ओर तूँ बेरागी होयके माला क्यों उतारी । तेरो बादशाह कहा करतो, तब वह पावन पर्यो ओर आँखिनमेंसों आँसु आयगए ओर विनतीकरी जो महाराज आप कृपा करिकें माला पहेराओ तो पेहेरूँ । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको वचन सुधि करिकें वाकुं श्रीगोकुलनाथजीनें माला दई ओर वाको सेवक कियो । तबतें श्रीगोकुलनाथजी वाकेऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वानें एक धमार बनाई हे, ओर तामें एसे कह्यो हे जो (सारंगी प्रतापतें पाए गोकुलनाथ) यह धमार श्रीगोकुलनाथजीके वहाँ गाईजातहे ।

पाछें जब एकसो पचास वर्षकी अवस्था पूर्ण भई, तब वा चतुरानागानें जायकें गोविंद कुंडपें समाधि लगाई सो लीलामें जायके प्राप्त भए। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कोकिलावनकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीकोकिलावनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

(आ चतुरानागाए श्रीगोकुलनाथजीने होरी खेलावीने धमार गाई छे ते नीचे आपी छे.) आ धमार श्रीगोकुनाथजीनां मंदिरोमां गवाय छे. ॥राग काफी॥

हो मेरे ललना प्रथम प्रणाम करों श्रीवल्लभ, समरो श्रीविठ्ठळ्नंद हो, हिलिमिलि झूरमट खेलीए, वर आओ रंगीले नाहहो. नेक होरी श्रीवल्लभ साय हो. हिलिमिलि. ध्रुव.

श्रीविठ्ठल गृह प्रगट भये, मानो प्रगट्यो पूरण चंद हो. श्रीगोकुलनाथ सुहावनो, सब मिलि देखन जाय हो. हिलि. १ उडत गुलाल अबीर ज्यों, श्रीवल्लभ छीरकें जाय हो श्रीगोकुल विथनी सांकरी, ओर मचीहे अरगजा कीचहो. हिलि. २ ताल मृदंग डफ बांसुरी, ओर घुमरी रह्यो सिंध द्वार हो. धोती ऊपरना केसरि, ओर केसर भीनी पागहो. हिलि. ३ तुलसिमाल ओर मुद्रिका, ओर गरे गुंजाको हार हो. एसे खेले प्रान प्रिया, ओर सबदिन फागुन बिच हो. हिलि. ४ खेलि चली आनंदसों, ओर आनंद कह्यो न जाय हो. चलन हसन मनमें गढी, ओर बेंनन कह्यो न जाय हो. हिलि. ५ श्रीविठ्ठलजु के लाडिले, ओर चित्र लीयो चित्त चोरी हो. भाग्य बडे गुजरातिनके, जीन दिनो सर्वस्व वारी हो. ६ सारंगी प्रताप तें, आप पाये श्रीगोकुलनाथ हो. श्रीगोकुलनाथके वारने, जन 'चतुरा' बलि बलि जाय हो. हिलि. ७.

श्रीचीरघाटः- आ स्थळे श्रीमहाप्रभुजीनी हाल बैठक छे पण चरित्र वर्णन नथी तेम श्रीगुसाँईजीनी बैठक छे ते चरित्र आगळ आवशे परंतु श्रीमहाप्रभुजीनी बैठक चरित्र कोई अनुभवी जाणता होय तो मोकळवा कृपा करशो.

---

१ आ चतुरानागा श्रीगोकुलनाथजीना सेवक थया छे. श्रीगोकुलनाथजी माला प्रसंग वखते काश्मीर पधार्या त्यारे आ चतुरानागा पोताना अनेक नागाओ लईने काश्मीरना विकट परदेशनी मुसाफरीमां श्रीनी सेवामां हाजर थता हता. (जुओ "श्रीगोकुलेशजीनुं जीवन चरित्र" (ए पुस्तक) आ चतुरानागानी समाधिनुं स्थान गोविंद कुंड ऊपर हाल पण छे। २ आ बैठक हाल प्रगट नथी व्रजचोरासीकोसनी परिक्रमा दर साल जाय छे पण कोइ श्रीगो. बालको के अनुभवी वैष्णवो आ स्थळे बैठक होवानुं कहेता नथी, अने अहीआं चरित्र वर्णन छे. तेथी प्रतित थाय छे के श्रीमहाप्रभुजीनी इच्छा हशे त्यारे प्रगट थशे.

बैठक २१ मी [२]श्रीभांडीरवनकी बैठकको चरित्रः

अब श्रीआचार्यजी कोकिलावनसों विजय कीए सो बडीबठेन, छोटीबठेन तथा कोटवन होईके शेषशाई पधारे तहाँ एक रात रहे। तापाछें फेरि तहाँते रामघाट, गोपीघाट, गुंजावन, निवारनवन, ये सब उपवन दर्शन करिके चीरघाट, नंदघाट होईके भांडीरवन पधारे। तहाँ आपकी बैठक हे, तहां बिराजे, तहां सातदिनको श्रीभागवतको पारायण कीए। तहां एक मध्वाचार्य संप्रदायको व्यासतीर्थ स्वामी महंत हतो, वाको एक महास्थल हतो सो वानें आयकें श्रीआचार्यजीसो कही जो मेरे लाखन तो सेवक हे, बडी गादी मध्वाचार्य संप्रदायकीहे ओर मेरो घर दक्षणमेंहे ओर बडे राजा मेरे सेवकहे ओर मेरे सेवक माधवेंद्रपुरी हें तिनके सेवक कृष्णचैतन्य भए सो अब लक्षावधि तो मेरे पास रुपयाहें सो सब में आपकों देउँ ओर यह गादी आप लायकहे तातें आप बिराजो। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें जो याको प्रतिउत्तर हम काल्हि देईंगे, तब वह अपनें आश्रममें गयो। पाछें अर्धरात्र भई तब कोऊ चारिजनें मुगदर लेकें आए तिननें वाकों बहुत मार्यो सो वे मारतो जाय परी दीसे नांही तब याने कही जो तुम कोंन हो तब उन मारनहारेनने कही जो हम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकें दूतहें। तेरी कही सामर्थ्य हे जो तूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों गादीपें बेठारे, तासों जो तूँ आपनो भलो चाहे तो श्रीआचार्यजीके पावन परियो नाँहीतो हम तोकों ठोर मारेंगे। तब प्रातःकाल वह महंत आयकें श्रीआचार्यजीके पावन पर्यो, ओर विनती करी जो मोकों सेवक करो। मेंने आपको स्वरूप जान्यो नांही सो क्षमा करो। तब श्रीआचार्यजी वासों कहें जो तूँ तो सेवकही हे। तब वा व्यासतीर्थस्वामीने

विनती करी जो महाराज कृपाकरिकें मोकों शरण लीजिये । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाको अंगीकार कीए । पाछें उहाँते वेलवन तथा भद्रवन होयकें मांनसरोवर पधारे यह चरित्र भांडीरवनकी बैठकमें प्रगट कीए इति श्रीभांडीरवनकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २२ मी ♣ श्रीमांनसरोवरकी बैठकको चरित्र ♣

सो तहां मांनसरोवरपें आप तीनदिन बिराजे । श्रीभागवतको पारायण कीए, तब एकदिन अर्धरात्रके समय सब सेवक आपके साथ हते । तब दामोदरदास देखें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहां नांही हें सो प्रहरएक पीछें पुरुषोत्तमकांति स्वरूप को दर्शन दीए । तब दामोदरदासनें कही जो महाराज आज अनिर्वचनीय सुख भयो, अद्‌भुत दर्शन भयो । पाछें आप आज्ञा कीए जो दमला आज श्रीस्वामिनीजीनें गाढो मांन कियो हतो सो वह मांनमोचन करायकें श्रीस्वामिनीजीको श्रीनाथजीके पास पधरायकें आवतहों सो दर्शन दामोदरदासकों भयो ओर सब वैष्णव निद्रावश हते । तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप लोहवन, रावल, श्रीबलदेवजी, महावन, चिंताहरणघाट तथा ब्रह्मांडघाट स्नान करि रमणस्थल होय, गोपकुपमें स्नान करि, ऊतलेश्वरघाट यशोदाघाट, गोविंदघाट होयकें पाछें अपनी श्रीगोकुलकी बैठकमें आय बिराजे । जन्माष्टमीको उत्सव श्रीगोकुलमें कीए, सो वृक्षमें चादर बांधिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें श्रीनवनीतप्रियजीकों पालनें झुलाए ताके ओर सबनकों रत्नजटित पालनेंके दर्शन करवाए तहाँ गोपी, ग्वाल, श्रीनंदरायजी तथा श्रीयशोदाजीनें प्रगट दर्शन दीए । तहां

बडो नंदमहोत्सव भयो, सो जब वे स्वरूप पाछें पधारिवे लगे तब श्रीनंदरायजी ओर श्रीयशोदाजीनें श्रीआचार्यजीसों कही जो कछु वरदान मांगो। तब आप कहें जो अबतो आप साक्षात् पधारे हो ओरबेर हम [१]भेष बनावेंगे तामें आप आपनों आवेश धरियो क्यों जो अब तो आप साक्षात् पधारे हो ओर आगें जो न पधारोगे तो वैष्णवनकों अभाव होयगो। तब सब स्वरूपननें कही जो अस्तु। श्रीमहाप्रभु आपनें पहलें नंदमहोत्सवको उत्सव तो काशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घरमें कियो हतो ओर दूसरो नंदमहोत्सव श्रीगोकुलमें कीए सो काहेतें जो भगवज्जन्मभूमि हे तहां दर्शन कीए। पाछे श्रीमथुरां पधारे तहाँ विश्रांतघाटपें बिराजिकें प्रथम परिक्रमा पुरी करि उजागरचोबेको एकसो रुपैया दीए। तीनबेर श्रीआचार्यजी आप पृथ्वी परिक्रमा कीए ता बेर तीन व्रजपरिक्रमाहू कीए, परन्तु विस्तारके लीये यहां नांही कहेहें। जो जेसें प्राचीन स्वरूपनके मुखतें सुनी हती सोई लिखेहे। व्रजवनयात्रामें तो श्रीआचार्यजीके २२ बैठकहे तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अलौकिक चरित्र दिखाए हें। इति श्रीमांनसरोवरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣बैठक २३ मी ♣श्रीसूकरक्षेत्रकी[२] बैठकको चरित्र प्रारंभः♣

अब सूकरक्षेत्र- सोरमजीमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी ब्बैठकहे ताकों सोरमघाट कहेतहे। एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिराजे हते तहाँ कृष्णदासमेघनको

---

[१] हाल पण प्रति जन्माष्टमीए श्रीगोस्वामीबालको श्रीनंद, श्रीयशोदाजीनो स्वांग करे छे तेमा साक्षात् आवेश आवे छे. ते आ श्रीनंदरायजीए श्रीमहाप्रभुजीने आपेला वचनानुसार छे. २ जुओ व्रजयात्रा वर्णन पुस्तक.

[२] आप तथा बीजी बैठकोए जवाना रस्तानी माहीतीवाळुं वधु विगत माटे जुओ "तीर्थयात्रानो हेवाल" ए पुस्तक.

उपदेष्टा गुरु हतो ताके दर्शनको कृष्णदास श्रीआचार्यजीकी आज्ञा बिनु गये तब वानें कृष्णदाससों कही जो अरे, कृष्णदास ! तूँ मेरो सेवक होयके श्रीआचार्यजीको सेवक क्यों भयो । तब कृष्णदासनें कही जो मेरे गुरुतो आपही हो । आपहीकी कृपातें मेंने श्रीपूर्णपुरुषोत्तम पाएहें । तब वानें कही जो तिहारे कहेतें पूर्णपुरुषोत्तम क्यों होई । तब कृष्णदासनें बरती अग्नि हाथमें लेकें यहकही जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीपूर्णपुरुषोत्तम होय तो अग्नि मोकों मति जारै । ओर जो अन्यत्र होय तो यह अग्नि मोकों भस्म करिदीजियो एसे कहिकें एक मुहूर्तलों अग्नि हाथमें राखी । तब वा गुरुने अग्नि हाथमेंसो गिरवाय दई । एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु को माहात्म्य दिखाए। ओर एकसमय वहां श्रीआचार्यजी आप श्रीगंगाजीमें स्नान करत हते तहाँ आपके बडे भाई केशवपुरी पृथ्वीपरिक्रमा करत आय मिले । सो श्रीगंगाजीके परलेपार नावबिनाँ चले जायकें संध्यावंदन किये पाछें वेसेंई चले आयकें श्रीआचार्यजीके निकट ठाडे रहे, सो अपनी सिद्धाई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दिखाई, सो यह बात आपकों आछी न लागी । तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो सिद्धाई तो भगवत्सेवा हे सो तो करि नाँही या सिद्धाईतें कहा सिद्ध भयो । तब दूसरे दिन विनकी सब सिद्धाई आपनें हरी लई । जब दूसरे दिन वे वेसेंई गंगापार जायवे लगे तब डुबने लगे, तातें श्रीआचार्यजीको नाम लेकें पुकारन लगे । तासमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गंगाकिनारेपें संध्यावंदन करत हते तहांते आप अपनी भुजा पसारिके श्रीगंगाजीकी मध्य धारामेंतें केशवपुरीको तटपें काढि लीए। यह चमत्कार देखिके

केशवपुरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पावन पर्यो, ओर कही जो आप तो ईश्वरको अवतारहो। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीने सोरमघाटकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सोरमघाटकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २४ मी ♣ श्रीचित्रकुटकी बैठकको चरित्र ♣

अब चित्रकुटपें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे, सो कान्तानाथ पर्वतके समीपहे तहां श्रीरामचंद्रजीने चतुर्मास कीयोहे, तातें आप श्रीआचार्यजीने श्रीभागवतको पारायण करिकें १६ दिन वाल्मीकिरामायणको पाठ कियो। तब श्रीहनुमांनजी एकपांवसों ठाडे होयके श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कथा श्रवण करे, तब आप आज्ञाकीए जो तुम बेठिके कथा श्रवण करो। तब श्रीहनुमांनजी कहें जो मेरे तो यही संकल्पहे। तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो यहां कांतानाथपर्वतहे, सो श्रीगिरिराजको भाईहे, तातें हमकों इनके ऊपर पाँव न धरनों। तब कांतानाथ पर्वतने मनमें बिचार्यो जो मेरे ऊपर श्रीआचार्यजी पधारे तो आछो। तब एक ब्राह्मणको स्वरूप धरिके कांतानाथपर्वत श्रीआचार्यजीके पास आयो, तब आईकें विनती करी जो महाराज श्रीजानकीजी ओर श्रीरामचंद्रजी मेरे हृदयशिखरपें बिराजतहे। उनने आज्ञा करीहे जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसों जायके कहो जो हमको भुख लगीहे। कछू सामग्री लेकें पधारो। तासमय श्रीआचार्यजी आप श्रीठाकुरजीको भोग धरिकें बिराजे हते, तब दामोदरदासतें कहीं जो केलाकी फरी संमारो, तब पके पके केलाकी ४२ फरी समांरिके दामोदरदासनें सिद्ध करी, तामें मिश्री

तथा ईलायची डारी ओर गुलाबजल पधरायो। तब कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराज गुलाबजल तो खासा श्रीठाकुरजीको हे, तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईके चुप करिरहे, पाछें आज्ञा कीए जो श्रीरामचंद्रजीहु मर्यादा आदिपुरुषोत्तमहे तासों कछु चिंता नाहीं। तापाछें एक कारिका कही। सेतुबंधनमात्रैकं चरितं हरिसंमतम् दोषभावाय नारीणां लंकास्थानं निरुपितम्[१] पाछें कांतानाथकी सिखरपें आप पधारे, तहां देखें तो एक रत्नशिलाके ऊपर श्रीरामचंद्रजी ओर श्रीजानकीजी बिराजेहें, ओर श्रीलक्ष्मणजी शेषरूप होयकें छाया करत हें ओर हनुमांनजी हाथ जोरिकें ठाडेहे, तहां आप पधारे। तब श्रीरामचंद्रजी श्रीआचार्यजीसों मिले, पाछें हाथ पकरिकें रत्नशिलापें बेठारे। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वह सामग्री आगें धरी सो दोऊ स्वरूप आरोगे, तामेंको प्रसाद श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीहनुमांनजीकों दिये। तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ओर श्रीरामचंद्रजी एकमुहुर्त तांई वार्ता कीए, तब परस्पर बहुत आनंद भयो। तब श्रीरामचंद्रजी कहें जो मोकों आपके हाथसों आरोगनों हतो तातें तुमकों बुलाए। पाछें श्रीआचार्यजी आज्ञा लेकें नीचे अपनी बैठकमें पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चित्रकुटकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चित्रकुटकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २५ मी ♣ श्रीअयोध्याकी बैठकको चरित्र ♣

अब अयोध्यामें सरयुके तीर गुसाँईघाटपें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे तहां बिराजे। पाछें एकसमय

आप अयोध्याजीमें कोईक स्थलके दर्शन करिवेके पधारे, वा स्थलपें वाल्मीकिरामायण होत हती, तहां श्रीहनुमांनजी श्रवण करत हते । तब हनुमांनजीनें कही जो आप कृष्णउपासक होयकें श्रीरामचंद्रजीकी पुरीमें पधारेहो । तब श्रीआचार्यजी कहें जो हमतो अपनें श्रीठाकुरजीकी ससुरारि जाँनकें पधारे हें, ओर तुम नग्न होयकें कथा सुनोहो तातें एक लंगोटी लगायकें कथा सुनों तो आछो । सो वाही दिनतें जहां रामायण होत हे, तहां एक वस्त्र बिछावतहें । पाछें श्रीहनुमानजीनें कही जो आप अयोध्याकों श्रीकृष्णकी ससुरारि केसें बताइ सो कहो । तब आप कहें जो पूर्वे अयोध्याकों राजा अग्निजित हतो ताकी बेटी श्रीसत्याजी हती । सो श्रीकृष्णकों ब्याही हती जब सातबेल नांथे हे तब अग्निजितनें श्रीसत्याजीको ब्याह कीयो तातें ससुरारि कही । पाछें श्रीरामचंद्रजीकी बैठकमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मिलिवेको पधारे तब श्रीआचार्यजी कहें जो मर्यादापुरुषोत्तमाय नमः, तब हनुमानजीको सुनिकें बडो संदेह भयो सो अंतःकरणहीमें राखें, काहूसों कह्यो नाहीं पाछें श्रीरामचंद्रजी अपनें मेहेलमें पधारे, तब हनुमानजीको संदेह जानिकें श्रीरामचंद्रजीने विनको श्रीआचार्यजीके पास पठाए, जो यह सामग्री हे सो श्रीआचार्यजीकों दे आवो । तब हनुमानजी वहांतें चले सो देखें तो श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप धरिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बेठेहें, तब हनुमानजीनें दंडवत् करी ओर वह सामग्री आगें धरी तापाछें हनुमानजी श्रीरामचंद्रजीके पास आईकें सर्व वृत्तांत कहें । तब श्रीरामचंद्रजी कहें जो ये मेरो स्वरूप धरि लेय, परन्तु मोसों ईनको स्वरूप धर्यो नांहीं जाय । याको आशय यह है जो श्रीरामचंद्रजी तो श्रीपुरुषोत्तमके हास्यको अवतारहें सो

द्वितीयस्कंधकी श्रीसुबोधिनीजीके सातमें अध्यायमें आप कहेहें, जो हास्य तो श्रीमुखतें प्रगट होतहे ओर श्रीआचार्यजी तो पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदकी अधिष्ठाता अलौकिक आनंदसमयकी अग्निरूप हें, सो यह निश्चे भयो। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अयोध्याजीकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीअयोध्याकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २६ मी ♣ श्रीनैमिषारण्यकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक नैमिषारण्यक्षेत्रमें गोविंदकुंडके ऊपर छोंकरके नीचेंहे, तहां आप सात दिनको श्रीभागवतको पारायण कीएहें। एक दिन जप पाठ करिकें अदृश्य अठ्यासीहजार शौनकादिक ऋषि यज्ञ करत हते तहां गुप्त रीतिसों उनके यज्ञमें आप पधारे। तब सब ब्राह्मणनें प्रशंसा करी ओर आसनपें पधरायकें श्रीआचार्यजीकी बहुत पूजा करी ओर एक श्लोक कहें ॥ नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम् ॥ कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे न चार्पितं कर्म यदप्यकारणम् (श्री भा. प्र. स्क. अ. ५ श्लो. १२) या श्लोककी व्याख्या आप श्रीआचार्यजीने तीन प्रहर तांई कीये पाछे सब वैष्णवन के पास आप बाहिर पधारे सो देखें तो सब वैष्णवनकूं मूर्छा आईहे, तब कमंडलुमेंतें जल लेकें छिरके, तब सब सावधान भए तब सबनने दंडवत् करिकें पूछी जो महाराज तीन प्रहरतें आप विनां हमारे प्राण बहुत कष्ट पावतहें। तब आप कहें जो इहां अठ्यासीहजार शौनकादिक ऋषिहें सो यज्ञ करें हें ता यज्ञके दर्शन करिवे गए हते। तहां उनने श्रीभागवतको प्रश्न

कीयो ताकी व्याख्या करते करते तीन प्रहर व्यतीत भए। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नैमिषारण्यकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी नैमिषारण्यक्षेत्रकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २७ मी ♣ श्रीकाशीजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीकाशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे। प्रथम आप तहां नंदमहोत्सव प्रगट कीएहे, तासमय श्रीनंदरायजी, श्रीयशोदाजी, श्रीवृषभानजी, उपनंदादि, गोप, ग्वाल, तथा व्रजभक्त साक्षात् स्वरूपात्मक पधारे। नंदमहोत्सव भयो, तहां विश्वेश्वरजी महादेवजी दर्शनकों पधारेहे। ये प्रसंग शेठ पुरुषोत्तमदासकी वार्तामें विस्तार करिकें लिखेहें। पत्रावलंबन ग्रन्थ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यहांही प्रगट कियो हे ओर तहां श्रीकृष्णपूर्णपुरुषोत्तम स्थापन किये ओर मायामत खंडन कियो, सो काशीमें मत्तमातंग पंडित हते तिन सबनकों निरुत्तर कीए। वे केहेत हते जो भाष्यतो तीन हें, चोथो भाष्य विवेचन नाहीं हे, सो ऊनकों जीतिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अणुभाष्य निरूपण कीए। शंकरको विरुद्ध मत हतो ताको खंडन कीए सो वा पत्रावलंबन तीस श्लोकनमें मायावादी पंडितनकों निरुत्तर करि दिए। तब वे महादेवजीके द्वारपें मरनें बेठे ओर कहें जो आप शंकराचार्यको स्वरूप धरिकें ब्रह्मको निराकार स्वरूप वर्णन कीयोहे, ता मतको श्रीवल्लभाचार्यजी ने खंडन करिकें साकारब्रह्मको स्थापन कीएहें। तब आप श्रीमहादेवजी स्वप्नमें आज्ञा कीए जो श्रीआचार्यजी कहें सो सत्यहे। सो विश्वेश्वरजीकी प्रतिमासों यह

शब्द भयो (सत्यं सत्यं च सत्यं च सत्यं श्रीवल्लभोदितम् ॥ प्रवर्ता च प्रवर्त्यं च प्रवर्तेत पुनः पुनः ॥२ ॥ प्रवर्तय शंकर प्रति ॥) सो याको आशय कहें जो श्रीवल्लभाचार्यजी कहें सो सत्यहे ताही प्रमाण चलनो पद्मपुराणमें श्रीमहादेवजी को जीवनकों बहिर्मुख करिवेकी आज्ञा कीए तो (त्वं च रुद्र महाबाहो मोहशास्त्रं प्रकाशय ॥ प्रकाशं कुरु चात्मानमप्रकाशं च मां कुरु ।१ । ओर आप काशीमें बहुत दिनलों बिराजे सो तहां यज्ञोपवीत ब्याह सब काशीमें कियो यह चरित्र आप काशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घर की बैठकमें प्रगट कीये हें ॥ इति श्रीकाशीमें शेठ पुरुषोत्तमदासके घर की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २८ मी ♣ श्रीकाशीकी दूसरी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दूसरी बैठक काशीमें हनुमानघाटके ऊपरहे । तहां आपनें संन्यास ग्रहण कीयोहे । तब एकमास तांई श्रीआचार्यजी आप एक शिला ऊपर बिराजे । अन्न जल सब त्याग कीयो । तासमय बहिर्मुख ब्राह्मणननें पूछी जो तुम संन्यासग्रहण उपदेश कोंनसों लियो, तब आप संन्यासनिर्णय ग्रन्थ लिखिकें दीए सो वाकों बांचिके वे निरुत्तर होय गए । तापाछें फेरि बहुत पंडित भेले होयकें आए, तब आप भयंकर झलझलायमान अग्निको दर्शन दीए, तब सब भय पायकें पाछे फिरि गए (रोषदृक्पातसम्लुष्टभक्तद्विड्) यह नाम श्रीसर्वोत्तमजीमें निरूपण कीयोहे । तापाछें पुष्यनक्षत्रकी व्याप्ति होयके अभिजित कालमें असाढ सुदी २ उ. ३ के दिन श्रीगंगाजीके जलमें कटितॉंई बिराजे तब चालीस हाथमें तेजके

पुंजको भँवरा भयो सो आकाशतांई छाय रह्यो सो दोय मुहूर्तलों काशीके वासीननें सबनें देख्यो । तब वे कहें जो हमने अबलों श्रीआचार्यजीको स्वरूप जांन्यो नांही हो जो ये तो ईश्वरहें । तापाछें श्रीआचार्यजी सबनके देखत स्वधाम पधारे । यह चरित्र काशीमें हनुमानघाटकी बैठकमें दिखाए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीकाशीकी दुसरी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २९ मी ♣ श्रीहरिहरक्षेत्रकी बैठकको चरित्र ♣

अब हरिहरक्षेत्रमें श्रीगंगाजी ओर गल्लकी नदीको समागम भयोहे, तहाँ भगवानदासके घरमें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अखंड बिराजमानहें। काशीमें आपनें आसुरव्यामोहलीला दिखाई । तब वैष्णवनकुं बहुत खेद भयो, सो सब मिलिके भगवानदासके घर आए ओर सब वृत्तांत कह्यो। तब भगवानदासनें बैठकको टेरा खोल्यो तब सबनको साक्षात् श्रीआचार्यजीको दर्शन भयो सो भगवानदासकी वार्तामें लिखे हें । ओर जब भगवानदासके घरतें श्रीआचार्यजी चलिवेको नाम लेते तबही वा भगवानदासको मूर्छा आई जाती, सो वा जगन्नाथजी ताँई आपके संग रह्यो तब आप कहे जो तुम घरकुं जाओ, यातें मेरी लौकिकमें निंदा होयगी तातें मेरी पादुकाजी ले जाओ सो जा चोतरापें तुँम जप करत हो तहाँ तुमको दर्शन होयगो । तब भगवानदास घर आए सो विनको वा चोतरा ऊपर श्रीआचार्यजीको नित्य दर्शन होतो, या चरित्रको आप हरिहरक्षेत्रकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीहरिहरक्षेत्रकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३० मी ♣ श्रीजनकपुरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीकी बैठक जनकपुरमें मानिक तलाव के ऊपर भगवानदासके बागमेंहे, तहां श्रीरामचंद्रजी श्रीसीताजी गठ जोरे स्नान कीएहे, ओर श्रीरामचंद्रजीकी बरात ऊहां उतरी हती सो भगवानदासके बागकी बैठकमें आप सप्ताह कीए। तापाछें केवलरामनागा विष्णुस्वामिके संप्रदायको हतो ताके संग पाँचसें नागा जनकपुरकी यात्राकों आए हते सो ऊननें आयकें श्रीआचार्यजीकों दंडवत् करी ओर कही जो महाराज मोको सेवक करो। तब आप नांम सुनाए ओर कहें जो तेरे वैष्णवनकों यही नांम सुनाय दे। तापाछें केवलरामनागाने विनती करी जो महाराज मोकों आप अपनो प्रसाद देऊ, वा दिन रामनोमीको दूसरो दिन हतो सो बासोंधीको डबरा बच्यो हतो सो वाही बासोंधीमेंते पांचसेंहू नागा जीमाय दीए। तापाछें ओरहू बासोंधी बची, यह माहात्म्य देखिकें केवलरामनागा बहुत प्रसन्न भयो। पाछें दंडवत् करिकें चल्यो गयो। तब आप कहें जो यह बेरागीनकी ऊच्छिष्टहे सो वैष्णव न लेंयगे, सो मालीनकों पिवाय देई। पाछें बची सो गामके लोगनकों प्याय दई सो यह चरित्र मालीने देखिकें जायकें भगवानदासतें कही। तब भगवानदासनें आईकें श्रीआचार्यजीकों दंडवत् करी, पाछें भगवानदास श्रीआचार्यजीके सेवक भए। तापाछें श्रीआचार्यजीको विननें अपनें घर पधराए सो वर्षभर बिराजे। यह चरित्र जनकपुरकी बैठकमें दिखाए। इति श्रीजनकपुरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३१ मी ♣ श्रीगंगासागरकी बैठकको चरित्र ♣

अब गंगासागरपें कपिलाश्रम कपिलावनमें कपिलकुंडके

ऊपर एकछोंकरकें नीचे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठकहे। वाके आसपास महा गेहेरो वनहे तहां सिंह, गेंडा, गजराज, सारस, हरनी, भेंसा, आदि एसे तामसीजीव बहुतहे। तहां मनुष्यकी तो गम्य नाहीं। तहां षट्मास श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिराजे। तहांतें तृतीयस्कंधकी श्रीसुबोधिनीजी सम्पूर्ण करिकें आप पधारे। वहां धानके मुरमुरा कृष्णदासमेघन अलौकिक रीतिसों लायेहे सो आप अंगीकार करि कृष्णदासकों वरदान दीएहे। ओर एकसमय श्रीआचार्यजी सूर्योदयके समय गंगासागरमें स्नान करिकें अपनी बैठकमें बिराजे हते, तब आप बिचारें जो दैवीजीवनको उद्धार भगवत आज्ञातें करनोहे सो जीवतो तामसी योनिमें पडेहें, तिनकों उत्तम योनि दीजे। तब भगवद्भजनको अधिकार होय ओर भक्तिके संबंध बिना तो तामसी योनि निवर्त न होय, तातें ईनकों भक्तिकों संबंध करावनों। इनकी प्रमेयबल करिकें तामसी योनिकी निवर्त तो होय तब उत्तम योनि पाय। ईनको उद्धार होयगो जेसें गंध करिके चार्यो पर्व विद्यमांन हें ॥

(अविद्या पूतनान्नष्ट गंधमात्रावशेषतः) संपूर्ण अविद्या पूतनाके वधसों रासी गंध ताके संबंध सों निवर्त भई। मूल अविद्याहे स्वरूपज्ञान विस्मृत करायवे वारीहे, जो पूतनांके शरीरमें चंदनकीसी सुगंध ऊठी ताकों सब व्रजवासी लिए सो नासिकाद्वारा अविद्याको प्रवेश भयो। चार्यो पर्व विद्यमान रहे सो प्रकार प्रमेयबलतें निवर्त किए। तो देहाध्यास धेनुकको वध करिकें, इंद्रियाध्यास कालीको दमन करिकें, अंतःकरणाध्यास केसी प्रलंबको वध करिकें, प्राणाध्यास दावानलको पांन करिकें, प्राणाध्यास द्विधा प्रकार करेहें, तातें दावानलको दोयबेर पांन

कियेहें। एसो प्रमेय संपूर्ण अविद्या पर्वन सहित निवर्त करि साधन प्रकरणमें अविद्याकों दांन दीए। पर्वन सहित सम्पूर्ण भक्ति देवेको संबंध कराए। (वैराग्यं सांख्ययोगं च तपो भक्तिश्च केशवे, पंचपर्वेति विज्ञेयं यथा विद्या हरिविषेत् १) तातें चरणारविंदहें सो तो भक्तिरूप हे। तातें इनकों भक्तिके गंधको संबंध कराएतें ईनकी तामसी योनि निवर्त होय जायगी। तातें इनकी मनुष्ययोनि सिद्धि होयगी। एसो बिचारिकें तहां तें ऊठिकें आप गहनवन हतो तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे। तब पांच वैष्णव अंतरंग आपके संग हते। तब एक छोटोसो पर्वत ताकी एक टेकरी हती ताके नीचें आपकें चरणारविंदकों खोज ऊपडी आयो। तब तो आप सब वैष्णवन सहित वा पर्वतकी टेकरी ऊपर जाय बिराजे। तहां आपके चरणाविंदमेंतें अलौकिक भांति भांतिको सुगंध निकस्यो। तब ता गंधको ग्रहण तामसी जीवननें कीयो, तातें सर्प (तुरत) शरीर (तामसी देह) छोडत जांय। पाछें कस्तूरीको सुगंध निकस्यो ताकों अनेक मृग ग्रहण करिकें शरीर छोडत भए। एसो जो जाकों सुगंध प्रियहो सो ताको ग्रहण करिकें तामसीयोनि निवर्त भई। तब वे मनुष्य योनिकों प्राप्त भए। तब भगवदभजनके अधिकारी भए यह अलौकिक चरित्र देखिकें गंगासागरपें वैष्णवनकों बडो आश्चर्य भयो। तब ता समय एसी आज्ञा आप करत भए सो गोपालदासजी गाए हे। (ए तामसनां अघ हर्यां परताप पदरज गंध) यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गंगासागरकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीगंगासागरजी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ३२ मी ♣ श्रीचंपारण्यकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप निजधाँममें अखंड बिराजमांनहें ओर आपकी लीला नित्यहे सो भक्तन सहित सदैव रमण करतहें। जो दैवीसृष्टि बोहोत कालसों बिछुरि ही सो गोपालदासजी सप्तम वल्लभाख्यानमें गाएहें जो (पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार दैवी आसुरी बे ऊपजावी प्रभु मन करी विचार)। सो कृपाकटाक्षतें तो दैवीसृष्टि भई ओर मायाकटाक्षतें आसुरी भई सो अब दैवीको उद्धार करनों, तातें लीलासृष्टि सहित भूतलपें आपको प्रादुर्भाव होयगो, तब सेवारूप होंयगे सो भगवत्सेवा उपयोग होंयगे। ओर भगवत्सेवा करिकें भगवानकी लीलामें प्राप्ति होंयगे सो श्रीगुसाँईजी आप श्रीवल्लभाष्टकमें निरूपण कीए हें (सृष्टिर्व्यर्था च भूयान्निजफलरहिता देव वैश्वानरैषा) ओर श्रीसर्वोत्तमजीमेहू आपको नांमहे (दैवोद्धारप्रयत्नात्मा)। श्रीगोवर्धननाथजीनें आपकों आज्ञा कीये जो तुम व्रजभक्त गोपग्वाल सहित चोरासी, दोसोबावन, ओर अंतरंग आपके कृपापात्रसेवक, सब भूतलपें प्रादुर्भाव भए। तब आपनें इच्छा करी जो दैवीसृष्टि तो भूतलपें चार्योवरणनमेंहे, ताकों शरणउपदेश दे पंचमो वरण प्रगट करि भक्तिमार्गप्रवर्त करनों। तातें कृष्णदासजी गाएहें (अभय दीनों लेख हरिदासवर्य भेख कृष्णदास पंचवरण छाप छापी)। तब आपनें बिचारी जो उत्तम कुलमें प्रादुर्भाव होयकें संप्रदाय प्रगट करनो, सो दक्षणमें कांकरवाड गांममें रामानुजाचार्य नारायणभट्ट साक्षात् वेदको अवतार भये, चार्यो वेद षट्शास्त्र जिनके मुखाग्र हते, बडे बडे राजा साहुकार उनके शिष्य हते बडे धनाढ्य हते।

विन नारायणभट्टजीनें सोमयज्ञको मुहूर्त देखि आरंभ कीए। वे आछे विद्वानकों भोजन करवावते। विन नारायणभट्टजीनें बत्तीस सोमयज्ञ कीए तब कुंडमेंतें वाणी भई जो नारायणभट्ट तुमकों धन्यहे जो तुम्हारे यज्ञ साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम भोग कीएहें। सो तिहारे कुलमें साक्षात् पुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव होयगो ओर कुंडमेंतें श्रीमदनमोहनजीको स्वरूपहू प्राप्ति भयो, सो अब सातस्वरूपनमें श्रीगोपाललालजीमहाराजके मांथें कामवनमें बिराजतहें, सोई भगवदी गाये हें (कुंडतें हरि कही बांनी जन्म कुल तिहारे अबें, चक्रत ततछिन भए सब जन एसी अबलों भई कबें, सुनतही मन हर्ष कीनों, धन्य धन्य कह्यो सबे) तब नारायणभट्टकी बोहोत प्रशंसा होन लागी ओर सब कहें जो यह साक्षात् वेदको स्वरूपहें। तब वे हजारन पंडितनकों वेद पढाए। तब काहू एक पंडितनें कही जो मनुष्यकों सब कोई पढावतहें यामें कहा बड़ी बातहे। तब नारायणभट्टनें भेंसाकों छडी लगाई तब वह भेंसा वेद पढिवे लग्यो। तब सगरि सभा चक्रत होयरही। पाछें नारायणभट्टके पुत्र गंगाधरभट्ट भए वेहु बडे सामर्थ्यवान भए। नित्य ब्राह्मणनकों भोजन करवावते ओर दांन दक्षणा बोहोत देते। वे गंगाधरभट्टजीनें अट्ठाइस सोमयज्ञ कीए तब बहुत यश भयो। सबकोऊ कहिवे लगे जो यह तो श्रीशिवजीको अवतार हें। तब एक पंडितनें कही जो शिवजीनें तो जटामें गंगाजी धारण कीए हें, तब गंगाधरभट्टनें जटाको जूडा झटक्यो तब वामेंतें गंगाजीकी धारा बहिचली। तापाछें तिनके पुत्र गणपतिभट्ट भए सो बडे उदार भए। विन गणपतिभट्टनें तीस सोमयज्ञ कीए ओर हजारन विद्यार्थी पढाए। तब विनकी बहुत बडाई भई। तब काहूनें कही जो यह तो यह गणपतिजीको

अवतार हें। तब एक पंडित बोल्यो जो गणपतिजीको कहा कांमहे, जो वे हुंडनकी बरखा करे तब हम जांनें। तब गणपतिभट्टनें एक जोजन के बीच सवापेहेर तांई हुंड बरसाए। वे एसे सामर्थ्यवान भए तिनके सुत वल्लभभट्ट भए सो बडे तेजस्वी भए तिननें पांच सोमयज्ञ कीए। तब तिनसों सब केहेनलागे जो यह तो सूर्यनारायणको अवतार हे। तब काहूनें कह्यो जो रात्रमें दुपेहेर करें तब हम सूर्यनारायणको अवतार जानें। तब विननें बारह कोसके बीचमें अर्धरात्रकेसमय दुपेहेर करिदीए। तिनकें पुत्र शुद्धसत्व श्रीवसुदेवजीको अवतार श्रीलक्ष्णमभट्ट परम उदय भए। विन श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें पांच सोमयज्ञ कीए। तब आकाशवाणी भई, सो वानें कही जो लक्ष्मणभट्टजी तुमको धन्य हे, तिहारे यज्ञ हे सो श्रीपुरुषोत्तमनें भोग कीये हें, जो अब तुमताँई १०० सोमयज्ञ भए। अब आछो मुहूर्त देखिकें अग्निकी पूर्णाहुती करो। जाके कुलमें सो सोमयज्ञ होई ताके कुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होय। सो अब तुमारे तीन पुत्र होंयगे, तिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तम प्रगट होंयगे तिनको तुम आछी भांतिसो जतन करियो। एसी आज्ञा सुनिकें लक्ष्मणभट्टजीकों परम आनंद भयो। तब आछो मुहूर्त देखि पुण्याहवाचन कीए ओर दसहजार ब्राह्मणकों भोजन करवाए, तब यज्ञकी पूर्णाहुती कीए। तापाछें कितनेक दिनमें प्रथम पुत्र भयो तब तिनको केशवपुरी नाम धर्यो पाछें एक दिन लक्ष्मणभट्टजीको स्वप्नमें युगलस्वरूपको दर्शन भयो। ओर आज्ञा भइ जो अब थोडेसे दिनमें आपके इहां श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य होयगो सो तुम यह कांकरवाडमें मति रहो। कारण जो आपकी निकुंज सामग्री ओर लीलासृष्टि वा चंपारण्यमें प्रगट

भइहे, तातें आपको प्रादुर्भाव चंपारण्यमें होयगो । एसें कहिकें श्रीठाकुरजीनें एक ऊपरणामें ऊगार बांधि दियो, ओर दोय माला दिये, तामें एक छोटे मणिकानकी ओर एक बडे मणिकानकी, ओर आज्ञा दिए जो यह छोटे मणिकानकी माला तो जब बालक प्रगट होई तब पेहेराइयो ओर बडे मणिकानकी माला जप करिवेकों राखियो, ओर यह ऊपरणां उढाय यह ऊगार मुखमें दीजो । ओर तुम कांकरवाडतें बेगि चलियो एसी आज्ञा करिकें युगलस्वरूप तो पधारे, तब लक्ष्मणभट्टजी जागिपरे, सो देखें तो स्वप्नमें जो वस्तु मिली हती सो सब ज्योंकी त्यों धरीहे । तब लक्ष्मणभट्टजीनें कह्यो जो ओरको स्वप्न तो मिथ्या होत हे ओर मेरो स्वप्न तो सत्य भयो । तब स्वप्नके सब समाचार लक्ष्मणभट्टजीनें अपनी स्त्री ईलंमाँगारुजीके आगे कहे सो सुनिकें ईलंमाँगारुजी प्रसन्न होयके कह्यो जो अब यहांतें बेगी चलो । तब लक्ष्मणभट्टजी सब कुटुंबकूं संग लेकें यात्राको मिस करिकें चले सो कछूकदिनमें प्रयागराज आए । तब तहां तीर्थस्नान कीए ओर ब्राह्मणभोजन करायकें दक्षणा देकें आगें काशीको चले सो कछूकदिनमें काशीमें जाय पहुंचे सो तहां कछूकदिन रहे । तापाछें म्लेच्छको उपद्रव उठ्यो तब फेरि तहांते चले सो भगवद् इच्छातें चंपारण्यमें आये, ता चंपारण्यमें चंपकके वृक्षको बडो भारी वनहे सो महा अरण्य एक योजनके प्रमाणमें हे तातें वाको नांम चंपारण्य भयोहे । सो तहाँ सिंह, गेंडा, मृग आदि अनेक तामसी जीव रहेतहे, तहां भीमरथी नदी हे । तहां लक्ष्मणभट्टजी आप जायनिकसे सो तामसीजीवनके डरतें वे बहुत डरपें, ओर घबराए सो तहांते कोस छे नगरचोडा गाम हे, तामें रात्रकुं जायके बसे । तब श्रीईलंमाँगारुजीकों जांनिपरी जो

गर्भ श्रवित भयो । तब लक्ष्मणभट्टजीको ईलंमाँगारुजीनें सर्व समाचार कहे जो आपकुं श्रीठाकुरजीकी आज्ञा भई हती जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तुम्हारे घर प्रगटेंगे सो गर्भ तो श्रवित भयो, सो सुनिके श्रीलक्ष्मणभट्टजी विचारे जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तमहे, सो तो काहूके गर्भमें आवत नांही जो आपकी आज्ञा भईहे तो आप स्वइच्छातें प्राप्त होंयगे । आप लक्ष्मणभट्टजी तो ज्योतिषविद्यामें निपुण हते तातें समय देखिकें बोले जो अब या समय पुरुषोत्तमके प्रादुर्भावके सब चिह्न दीसतहे। दिशा सब प्रफुल्लित होय रही हें, बन सब हर्यो दीसतहे ओर सब प्राणी कल्लोल करत हें । तामें यहांको राजा महादुष्ट हतो सोहू अपनी सरबराई करतहे । ओर आपनको हर्ष ह्वै रह्योहे तातें पुरुषोत्तम निश्चय प्राप्ति होंयगे एसे कहिकें पाछें सोये । तब फेरि स्वप्नमें भटजीको आज्ञा भई जो मेरो प्रागट्य तो मेरी स्वइच्छातें होयगो सो तुम ओर श्रीईलंमाँगारुजी फेरि चंपारण्यमें आइयो । तब में अग्निकुंडमेंतें प्राप्त होऊंगो। सो सुनिकें लक्ष्मणभट्टजी जागिपरे । तब श्रीईलंमाँगारुजीको जगायकें सर्व समाचार कहे ओर कहें जो अब सुनेंहें, जो काशीमें यवनके उपद्रवको समाधांन भयोहे, सो सबरे परिवारसों कही जो तुम अब सब काशी जाऊ ओर हमहूँ कछुकदिनमें आवेंगे। एसें कहिकें सबकों बिदा कीए। फेरि पाछें चंपारण्य आए तहां देखे तो भीमरथीके तीर एक योजनके बीचमें ४० हाथको एक अग्निकुंड आपकी इच्छातें भयोहे ताके मध्यमें चारहाथको गोल चोतरा भीमरथीकी वालुकाको भयोहे ताके मध्य कोटिकंदर्पलावण्य सुंदर एक बालक खेलतहे सो संवत् १५३५ माधोमास कृष्णएकादशी मध्याह्नकालसमें ज्येष्ठानक्षत्र वृषभलग्न रविवारके दिन आपको

प्रादुर्भाव भयो। तासमय शेषजी सहस्त्रफनसों छत्रकीसीनांई छाया करतहें, मंद मंद फुहीं बरसतहें, सिंह गर्जना कर रहे हें। ताहीदिन, ताहीलग्न श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य हू श्रीगिरिराजमें तें भयोहे तातें तो भुमंडल में बडो जेजेकार भयो। ता समय चंपारण्यमें लक्ष्मणभट्टजी ओर ईलंमाँगारुजी पधारे, सो विनकों वा चोतरापें कोटिकंदर्पलावण्यको दर्शन भयो। तब इलंमाँगारुजीको अत्यंत आतुरता भई, जो अब मेरो पुत्र मोकों प्राप्त होयगो। परि आसपास अग्नि घेरिरहीहे ओर मध्यमें चोतरापें सुंदर बालक खेलतहे, तब आकाशवांणी भई जो तुमकों अग्नि बाधा न करेगी, ओर मार्ग देयगी, सो सुनिकें इलंमाँगारुजी अग्निकुंडके भीतर जायकें अत्यंत प्रीतिसों बालककों ऊछंगमें लिए। तब लक्ष्मणभट्टजी दोरिकें अपने कंठसों लगाए, ता समय देवताननें दुंदुभी बाजे बजाए ओर पुष्पनकी वृष्टी कीए। तब ता समय श्रीकृष्णजन्मउत्सव जेसो महामहोत्सव भयो सो सब भगवद्इच्छातें देवताननें कियो। सो अतिशयोक्ति जानवेमें आवे तातें यहां नहीं कहें। बंदीजन, मागध, भाट, चारण, सबकोउ उच्चार करतहें। अब भीमरथीको प्रकार कहेतहें, जो रत्नजडित पलनामें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पोढाए, सो रत्नजडित मोतीनके सोनें रूपे आदि भांतिभांति खिलोना आगें धरि श्रीलक्ष्मणभट्टजी खिलावतहें ओर स्वप्नमें जो ऊपरणा श्रीठाकुरजीनें दियो हतो सो श्रीअंगपें उढायो ओर वोइ ऊगार श्रीमुखमें दीयोहे। श्रीकंठमें माला पहराई हे, तासमय श्रीमहाप्रभुजीको कोटिकंदर्पलावण्य मुखारविंद निरखत सब तन मन धन वारतहें। ओर सबजन दूध दधिके गगरा लेले झांझ मृदंग बजावत नाचत कूदत आए। तहां एक कूपहे तामें तें

श्रीनंदरायजी श्रीवृषभानजी प्रगट होय सब मिलिकें श्रीलक्ष्मणभट्टजीकों वा चंपारण्यमें मंगल स्नान करवाए ओर वेदविधीसों जातिकर्म करवाए। तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी परम उदारता सों दांन देवेकों बिराजे। तहां आसपास हजारन गायनके तथा भेंसनके झुंड जुरि रहेहें, जो जा नें जाच्यो सो ताकों लक्ष्मणभट्टजीनें दीनों। तब तहां नंदमहोत्सव अलौकिक रीतिसो भयो। दही दूधकी कीच मची सो मानों सरिता बही जातहे। तासमय काहूकों देहानुसंधान न रह्यो। सब कोउ प्रेमविवस भये सो भगवदीय गायेहें (नाँचत गावत प्रेमविवस व्हे छांडि लोक कुललाज॥ भुतल महामहोत्सव आज॥ श्रीलक्ष्मणघर प्रगट भये हें श्रीवल्लभमहाराज॥ भयो जगतीपर जेजेकार) या प्रकारसों अनेक पद भगवदीय गाए हें ता। समयकको सुख देखेंई बने जो अनिर्वचनीय सुख भयो। ओर आचार्यने यथाशास्त्र नामकरण करवायो। ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कहें जो आपके पुत्रके अपार गुणहें सो में कहाँताँई कहूँ। ओर श्रीमहाप्रभुजीकी जन्मपत्रिका लिखिकें कही जो तिहारे पुत्रको अपार यश होयगो। ओर ए मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे। ओर दैवीजीवनको उद्धार करि सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगे। ओर श्रीविष्णुस्वामीमार्गके आचार्य होइगें ओर सबनकों प्रिय होंयगे, तातें इनको जगतप्रसिद्ध नांम तो श्रीवल्लभाचार्यजी होईगो। ए सारस्वतकल्पकी नित्यलीला प्रगट करिकें सेवामार्ग प्रगट करेंगे। जो ईनके वंशमें प्रगटेंगे सो बहुतदिन भूतलपें आचार्यपदवीसों क्रीडा करेंगे। या जगतमें तीन कुल भए हें सो रघुकुलमें तो श्रीरामचंद्रजी प्रगटे, ओर यदुकुलमें श्रीकृष्णचंद्र

प्रगटे ओर तैलंगकुलमें आप श्रीआचार्यजी प्रगट भए, तातें इनको श्रीवल्लभकुल बाजेगो । ए तीन्यों कुल शुद्ध कुल भएहे । जो कोई ईनको स्मरण भजन करेगो तिनकों साक्षात् श्रीपुरुषोत्तमकी लीलाकी प्राप्ति होयगी । आपको अरण्य वनमें प्रादुर्भावहे ताको हेतु यहहे जो देवतादिनको आवनो शेहेरमें न होय यासों आपको प्रादुर्भाव जंगलमें भयो ओर चंपारण्यमें जो अनेक लक्षावधी दैवीजीवहे तिनकों आप प्रगटे ता समें कटाक्षद्वारा लीलामें प्राप्त कीए ओर श्रीगुसाँईजीको हू प्रादुर्भाव चरणाटमें श्रीगंगाजीके तटपें होयगो तहां हू एसोई सुख होयगो सो यह जन्मपत्रिका श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी विधिपूर्वक लक्ष्मणभट्टजीकों सुनाई पाछें सब महामहोत्सवके दर्शन करिकें अपने अपने स्थलकों गए। तापाछें लक्ष्मणभट्टजी सब ब्राह्मणनकों बुलायकें सबनको सन्मान करि बिदा किये । तब श्रीनंदरायजी ओर श्रीवृषभानजीनें श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कह्यो जो ये पूर्ण पुरुषोत्तम तुम्हारे घर प्रगटेहें ईनको जतन राखियो । यह आज्ञा करि सब गोपन सहित निजधाँमकों पधारे। श्रीईलमाँगारुजी बालक गोदमें खिलावतहें ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजी सेआगें बैठे हें।और आस-पास अग्निकुण्ड हे । तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी श्रीईलंमाँगारुजीसें कहें जो येतो साक्षात् ईश्वर हे, ईनकी अपार लीलाहे । एतो अपने ऊपर अनुग्रह करिवेकों पधारेहे । तातें ईनकी सेवा बने सो करनी ईनकों पुत्र करिकें मति जाँनियो, पाछें कहें जो अब यहाँतें छट्ठीपूजन करिकें घर चलेंगे यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चंपारण्य निजधामकी बैठकमें कीएहें । इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी चंपारण्यकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३३ मी ♣ श्रीचंपारण्यकी दूसरी बैठकको चरित्र ♣

अब दूसरी बैठक श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चंपारण्यमें हे तहां छट्ठी पूजन भयोहे । सो माधवानंदकरके ब्रह्मचारी काशीमें गंगाजीके तीरपें तपस्या करत हतो, सो अट्ठाईसवर्ष ताँई वानें तपस्या कीनी । तब श्रीगंगाजीमें तें वाणी भई जो तुमकों चहिये सो मांगि लेउ । तब माधवानंदब्रह्मचारीनें कह्यो जो मोकों तो व्रजलीलाको दर्शन करवावो तब विनको आज्ञा भई जो अब तुम चंपारण्यकों बेगि जाओ, तहाँ साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयोहे । तहाँ तुमको लीलाके दर्शन होंईगे ओर मुकुंददाससंन्यासी पुष्करजीमें हते सो वे श्रीभागवतको पाठ नित्य करते तिनहुँकों आज्ञा भई जो तुम वरमांगो । तब वानें कह्यो जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन करवावो तब आज्ञा भई जो लक्ष्मणभट्टजीके घर श्रीपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयोहे, तातें तुम चंपारण्यकों बेगि जाओ । तब वेउ चंपारण्यमें आए । तब नंदमहोत्सव तो होय गयो हतो । पाछें माधवानंदब्रह्मचारीनें लक्ष्मणभट्टजीकों ज्योतिष विद्या पढाई, पाछें माधवाचार्यब्रह्मचारी ओर मुकुंददाससंन्यासीनें अपनों सब वृत्तांत लक्ष्मणभट्टजीके आगें कह्यो, तब लक्ष्मणभट्टजीने कह्यो, जो प्रागट्यसमें अनिर्वचनीय आनंद भयो हतो । अब छट्ठीपूजन होयगो, तब तुम आपतें विनती करियो, जो आपकी इच्छा होयगी तो दर्शन करवावेंगे । तब छट्ठी पूजनके समय लक्ष्मणभट्टजी चंपारण्यकुंडपें एक चंपाके वृक्षके नीचे ईलमाँगारुजीसहित पूजन कीए । तासमय माधवानंद ओर मुकुंददास दोनों आए । विननें श्रीआचार्यजीकों दंडवत् कीए ता समें श्रीईलमाँगारुजीकी

गोदमें कोटिकंदर्पलावण्य विराजतहे, आपनें विन दोनोंनकी इच्छा जानि। वा समय ईन दोऊनकों व्रजलीलाके दर्शन करवाए जो गोपगायनसहित श्रीगिरिराज, श्रीयमुनाजी, श्रीवृन्दावन ओर व्रजलीला स्थलनके उहाँ छट्ठीकी बैठकमें दर्शन करवाये। तब माधवानंद ओर मुकुंददास ए दोनों लीलामें प्राप्त भये। ता पाछें लक्ष्मणभट्टजी ओर माता श्रीईलमाँगारुजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पधरायकें नगरचोडामें पधारे। तब राजानें बहुत सन्मान कियो ओर विनती करी जो चार दिन ईहां बिराजिये। तब लक्ष्मणभट्टजीनें कही जो मेरे अब काशी जायवेकी ताकीदहे, तातें तुम जापतो करिदेऊ तो ठीक हे। तब राजानें म्यांनो, असवारी गाडी ओर दोय पहरा संग करिदीए ओर विन जापतावारेनसों राजानें कह्यो जो तुम इनको ठेठ काशी पहुँचायकें लक्ष्मणभट्टजीतें पत्र लिखाईके आइयो। तब लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीको लेकें काशी पधारे सो केतेक दिनमें काशी जाय पहुँचे। तब परम आनंद जेजेकार भयो। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चंपारण्यकी दूसरी बैठकमें प्रगट कीए। इति चंपारण्यकी दूसरी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३४ मी ♣ श्रीजगन्नाथपुरीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीजगन्नाथदेवके दर्शन करिवेको पुरुषोत्तमक्षेत्र पधारे। तहाँ पुरुषोत्तमक्षेत्र में दक्षणदरवाजेके पास आपकी बैठकहे तहाँ आप एकवर्षतांई बिराजे। तब तहाँके राजा विष्णुदेवके वहाँ पंडित बहुत रहते तिनसों वानें प्रश्न कियो जो सब देवनमें मुख्यदेव कोंनहे ओर मंत्रनमें मुख्यमंत्र कोंनसोहे, ओर शास्त्रनमें मुख्यशास्त्र कोंनसोहे

ओर कर्मनमें मुख्यकर्म कोंनसोहे, एसे चार प्रश्न कीए तब जो जीव जा देवताको उपासक हतो वह ताही देवताको मुख्य बतावे ओर मंत्र वारो अपनें मंत्रकों मुख्य बतावे। तातें वा राजाको संदेह न जाय। कोउ पंडित एक बात निश्चे करिकें न कहें, तब यह बिचारिकें राजा अपनें पंडितनकों लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आयो। तब आईकें दंडवत् करिकें बेठ्यो ओर विनती करी जो महाराज आपतो साक्षात् ईश्वरहो। आपनें मायामत खंडन कीयोहे ओर आप दिग्विजय कीए हो, तातें एक मेरो संदेह हे ताकों आप कृपा करिकें निवृत्त करो। ए पंडित तो सब अपनें अपनें मतके अनुसार केहेतहे। तातें आप निश्चे सिद्धान्त कहो जो कोंन मुख्यहे तब वा राजाके वचन सुनिकें श्रीआचार्यजी आप अपनें मनमें बिचारें जो या सों शास्त्रसिद्धांत कहेंगे तो यह मनमें न लावेगो ओर जानेगो जो यह विष्णुउपासकहे तातें विष्णुको उत्कर्ष केहेत हें, जेसें ओर पंडित अपने मतके अनुसार केहेतहें, तेसें एहु अपनें मतके अनुसार केहेतहे, तातें वेसे तो या राजाको संदेह निवारण न होयगो परि याकों श्रीजगन्नाथरायजीको विश्वासहे, तातें यासों श्रीजगन्नाथदेवके मुखसों कहवावनों। तब ए प्रमाँण मानेगो एसो निश्चे करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा राजाकों आज्ञा कीए जो श्रीजगन्नाथ देव के आगें एक कोरो कागद ओर लेखन द्वात धरो। जो श्रीजगन्नाथरायजी आप लिखि देंय सोई प्रमाँणहे। तब यह सुनिकें वह राजा बहुत प्रसन्न भयो। तब वानें श्रीजगन्नाथरायजी के आगें एक कोरो कागद लेखन ओर द्वात धरिके विनती करी जो महाराज कर्म ओर मंत्र, शास्त्र ओर मुख्य देव होयसो आप कृपाकरि लिखि देउ एसें कहके मंदिरको तारो मारि बाहिर आय बेठ्यो। तब

श्रीमहाप्रभुनकी आज्ञा जाँनि श्रीजगन्नाथरायजी आप एक श्लोक लिखि दिए ॥ एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं । एको देवो देवकीपुत्र एव ॥ मंत्रोऽप्येकंतस्य नामानि यानि । कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ॥ १ ॥ जब श्रीजगदीश लिखिचूके, तब श्रीआचार्यजी आप जाँने । तब आप राजासों कहें जो अब तुम जायकें वह कागद उठाय लावो, तब राजा जायके मंदिरको तारों किंवाड खोलिकें वा कागदकों उठाय लायो, सो पंडितनकों बचवायो, ओर राजानें आप बाँच्यो । तब सबनको संदेह निवृत्त भयो । तब राजानें कह्यो जो धन्य श्रीवल्लभाचार्यजीहें, जो जिनके कहेमें श्रीजगन्नाथरायजीहें । सो जेसें आप कहें तेसें श्रीजगदीश लिखि दीए । पाछें उन ब्राह्मणनमें एक बहिर्मुख हतो, वह निराकार मायावादी हतो, वानें अनेक प्रश्न कीए । तापाछें वानें कह्यो जो श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें, सो विननें पत्र केसें लिख्यो होयगो तातें हमारे यह लिख्यो प्रमाँण नहीं हे । यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप कहें जो यह बडो मूर्खहे । श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें, तो आप आरोगत काहेसों हें, या प्रकार वाकों समुझाए, परंतु वह तो माँने नाहीं ओर वारंवार पूर्वपक्ष करे । तब वा राजानें श्रीआचार्यजीसों विनती करिकें कही जो महाराज ओर सबनको तो संदेह निवृत्त भयोहे परंतु याको संदेह निवृत्त नहीं भयो । तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो अब फेरि श्रीजगन्नाथरायजीके आगें द्वात, कलम, कागद धरो । सो आप लिखि देंयगे । तब फेरि कागद, द्वात, लेखन श्रीजगदीशके आगे धरे ओर किंवाड लगाए । तब फेरि श्रीजगन्नाथरायजीनें पूर्ववत् आधो श्लोक लिखि दीयो ॥ यः पुमान् भगवद्द्वेषी तं विद्यादन्यरेतसम् ॥ सो क्षणमात्र पीछें मंदिर खुलवायकें श्रीआचार्यजी वह कागद

मँगायकें राजाकों बचवायो तामें यह लिखे जो पुरुष भगवानको द्वेषी होय वह ओरके वीर्यको जाननों। वह अपनें पितासों उत्पन्न नहीं भयो हे। तापाछें राजानें वा ब्राह्मणकी माताको बुलवाइ, ताकों एकांतमें लेजायकें भय दिखाईकें पूछी। जो तूं साँच कहि जो यह तेरो पुत्र कोंनसों उत्पन्न भयोहे, तब वानें डरपिकें सब बात कहिदई जो यह एक म्लेच्छतें पेदा भयोहे। सो सुनिकें वा राजानें वह ब्राह्मण को पुरीतें बाहिर कढवाय दीयो, क्यों जो वानें भगवद्आज्ञा न मानी। तब पुरुषोत्तमपुरीमें जेजेकार भयो। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दिग्विजय विख्यात भयो। सो पुरुषोत्तमक्षेत्रकी बैठकमें श्रीआचार्यजी आप यह चरित्र दिखाए। पाछें तीनबेर श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथपुरीमें पधारे, सो तीन्यों बेर आपनें न्यारे न्यारे चरित्र दिखाए हे। इति श्रीआचार्यजीकी श्रीजगन्नाथपुरीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३५ मी ♣ श्रीपंढरपुरकी बैठकको चरित्र ♣

अब पंढरपुरक्षेत्रमें भीमरथीके तीरपें श्रीमहाप्रभुजीकी बैठकहे। तहां एकसमय श्रीआचार्यजी पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजीके दर्शन करिवेको पधारे। तब भीमरथीके तीरपें आप बिराजे। ओर सेवकनकों आज्ञा कीए जो एक नाव भाडे करिकें लावो सो वा पार दर्शनकों चलेंगे। तब इतनेमें श्रीविट्ठलनाथजी आप पांचवर्षके एक ब्राह्मणके बालकको स्वरूप धरिकें पुंडरीक भक्तकों साथ लेकें भीमरथीके पार आईकें आप श्रीआचार्यजी निकट आय मिले। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु-उठिकें मिले, भेटे फिर एक पट्टा बिछाय दियो तापें आप श्रीविट्ठलनाथजी बिराजे। तब श्रीआचार्यजी

कहें जो आपकों बहुत श्रम भयाहे में तो आपके दर्शनकों आवतही हतो । तब श्रीविट्ठलनाथजी कहें जो में तो मित्रताकों प्रथम प्रगट कियो हुं । जो मित्र आवे ताके सामें जायकें मिलनों । सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भए ओर निकटकी मिश्री भोग धरिकें अबीरसों खिलाए । सो पांडुरंगमाहात्म्यमें कथाहे ओर भविष्योत्तर पुराणमें हुं कहेहें जो पुंडरीक नांम करिके एक ब्राह्मण हतो । वह अपनें माता पिताकों बहुत दुःख देतो । तब एकसंघ वाके गामतें श्रीगंगाजी नहाइवेकों चल्यो, ता संघमें यह पुंडरीक हु चोरीकी लालचतें चल्यो सो तीनमजलतांइ तो वो आयो । तब मारगमें संघतें बिछुर्यो सो भूलिपर्यो । सो जब रात्र परिगई तब वहाँई जंगलमें सोयरह्यो । जब चारघडी रात्र बाकी रही तब वह जाग्यो, सो एक स्थलपें बेठ्यो हतो । तब वानें दोय स्त्री नखतें शिखपर्यंत भूषण भूषित सोंनेंके कलश भरिकें वाके आगें होयकें निकसी । तब वानें विनसों पूछी जो तुम कोन हो ओर कहा जात हो । तब उनमेंतें एक बोली जो हम श्रीगंगाजीहें ओर यह श्रीयमुनाजीहें । सो एक ब्राह्मण अपनें माता पिताकी सेवा करतहे, वाकों सेवामें तें गंगाजी स्नानको अवकाश नहीं होतहें, तातें हम वाकों उहाँई वाके घर स्नान करायवें को जात हें । जो माता पिताकी सेवा करत हे ताकों घरहीमें गंगाजी स्नानको फल मिलतहे । ताको प्रमाण कहेहें (माता गंगा समं तीर्थं पिता पुष्करमेव च ॥ गुरुः केदारतीर्थं च माता तीर्थं पुनः पुनः) ईतनों कहिकें श्रीगंगायमुनाजी तो अंतर्धान भई । तब वा पुंडरीकको ज्ञान उत्पन्न भयो । तब वानें विचार्यो जो माता पिताकी सेवाको एसो प्रतापहे तो अब तो में हूँ माता पिताकी सेवा करूंगो । एसें विचारिकें वो पाछो अपनें घर आयो । तब वाके माता पिता वाकों

देखिकें बहुत खेदयुक्त भए जो दुष्ट दुःख देवेको फेरि आयगयो। ए दुष्ट दोयदिनतें कहुं गयो हतो सो सुखी हते। ता समें घरमें आवतेंही वा पुंडरीकनें अपनें माता पिताकों दंडवत् करी पाँऊँ छीए। पाछें परिक्रमा करिकें माता पितासों कही जो आज ताँइके मेरे सर्व अपराध क्षमा करो। अब में आपकी सेवा करूँगो। पाछें वानें बहुतवर्ष ताँइ अपनें माता पिताकी अनन्यभावसों सेवा करी। सो एसी दीनतासों सेवा करत करत बारह वर्ष होय गए। तब एक दिन श्रीभगवान आप व्यापिवैकुंठमें श्रीलक्ष्मीजीसों कहें जो मेरो एक भक्त भूमिऊपर भयोहे, ताकों दर्शन देवेकों में वहां जातहूँ। वह माता पिताकी सेवा बहुत दिननसों करतहे तातें वाकों आयवेको अवकाश नहींहे। तब श्रीलक्ष्मीजीनें कह्यो जो वा भक्तके दर्शन में हूँ करूँगी। तब श्रीलक्ष्मीजी ओर श्रीठाकुरजी युगलस्वरूपतें आप भूलोकमें पंढरपुर पधारे, तहां वह पुंडरीक माता पिताकी सेवा करत हतो। वाके घर पधारिकें द्वारपें ठाडे रहे ओर वाको नांम लेकें आप कहें जो तेंनें अपनें माता पिताकी सेवा बहुत करीहें तातें तोकों दर्शन देवेकों हम वैकुंठतें यहां आएहें। तातें अब तूं हमारो दर्शन कर। तब वानें भीतरतेंही जुवाब दियो जो महाराज एक चरण तो पिताको दाबिचुक्योहूं, दूसरो चरण दाबिकें आपके दर्शन करूँगो। एसें कहिकें वानें दूसरे हाथसों एक ईंट फेंकीदई ओर कही, जो महाराज आप यापें बिराजो। पाछें माता पिताकी सब सेवा करि आज्ञा लेकें वा पुंडरीकनें आयकें श्रीठाकुरजीकों दंडवत् करी, तब श्रीठाकुरजी आप कहें जो में तेरी भक्ति देखिकें बहुत प्रसन्न भयोहूं। तातें तूं कछु वरदांन मांगि। तब यानें कह्यो जो महाराज मोपें कृपा करीहे, तो मोकों तीन वरदांन देऊ।१ तो

आप मेरे घर सदाँ बिराजो २ महाराज पेहेलें मेरो नाम होय तापाछें आपको नांम होय ३ श्रीगिरिराज तथा श्रीगोकुलचोरासीकोस व्रजमंडलमें आप क्रीडा करो हो सो वा बाललीलाके दर्शन मोकों होय एसी तीनबात वानें मांगी । तब श्रीविठ्ठलनाथजी आप आज्ञा किये जो तथास्तु एकमन्वंतरतांइ में तेरे घरमें बिराजूँगो । ओर पेहेलें तेरो नांम होयगो पीछें मेरो नांम होयगो सो पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजी यह नाम जगतमें प्रसिद्ध होयगो जो कोई या तेरी पुरीमें आवेगो ओर मोसों मिलेगो सो केसोउ पापी होयगो परंतु फेरि यमकी पुरी न जायगो, ओर गोप मंडलीमें स्थापन होयगो ओर जो व्रज लीलाको दर्शन तेनें मांग्यो सो अठ्ठाईसचोकडी पाछें श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारेंगे, तब उनसों में कहूँगो तब तोकों वे व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे एसो आपनें पुंडरीकको वरदांन दियो । तातें वहां अबतांइ लोग गांन करत हें जो (पुंडरीक वरदा हरिविठ्ठल) । तापाछें वा पुंडरीक भक्तके माता पितानकों सदेह वैकुंठकों श्रीविठ्ठलनाथजीनें पठाय दीए, ओर आप श्रीलक्ष्मीजी सहित वाके घर पधारे । सो वाके घरहीमें बिराजे । पुंडरीक ब्राह्मण सेवा करतहो सो अब अठ्ठाइसचोकडी पाछें श्रीआचार्यजी आप पधारे, तब श्रीविठ्ठलनाथजीनें कह्यो जो यह मेरो भक्त पुंडरीकहे, याकों व्रजकी लीलाके दर्शन करिवेकी अभिलाषाहे । याकों मेंनें प्रथमही वर दियोहे जो तोको श्रीवल्लभाचार्यजी व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे । तातें अब आप याकों व्रजलीलाके दर्शन करवावो । तब श्रीआचार्यजी कहें जो आपही याकों व्रजलीलाके दर्शन क्यों न कराए, तब श्रीविठ्ठलनाथजी कहें जो यह अधिकार तो आपकों हमनें दियोहे, जो व्रजलीलाके अधिष्ठाता तो आप

हो। आपकी कृपाविन व्रजलीलाके दर्शन न होय। जब आप अनुग्रह करो तबही होय। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मुसिकायकें कहे जो आपकी आज्ञाहे सोई करेंगे। पाछें श्रीविट्ठलनाथजी आप पुंडरीक सहित अपनें मंदिरमें पधारे। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीविट्ठलनाथजीके मंदिर में पधारिकें सेवा सिंगार करी सात मोहोर जो कृष्णदेवराजाकी भेटमें तें दैवीद्रव्यकी लीनी हती ताके नूपुर अंगीकार करवाए। पाछें श्रीआचार्यजी आप पुंडरीक भक्तकों संग ले ओर पांच वैष्णव आपके संग हते तिन सहित आप पुरीके बाहिर एक योजनके बीचमें अरण्यवन हतो तहां पधारे। तहां एक पीपरको वृक्ष हतो ताके नीचें आप आसन डारिकें बिराजे। तब पुंडरीकके नेत्रनमें संध्योपासनके जलके छींटा लगाए। तातें वाके दिव्यनेत्र होइ गए। तब वाकों व्रजलीलाके दर्शन होनलगे, जो श्रीयमुनाजी, श्रीगिरिराज, श्रीगोकुल, श्रीवृन्दावन, श्रीमथुरामंडल, व्रजचोरासीकोस, बारह वन ओर बारह उपवन, श्रीनंदरायजी, श्रीयशोदाजी, गोपी, ग्वाल, संपूर्ण व्रजलीलाके दर्शन भए सो दोयमुहूर्त तांई वाकों दर्शन करवाए। तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाके दिव्यचक्षु हते सो तिरोधाँन कीए तब वाकों सब लीला अदृश्य भई। तब वानें विनती करी जो महाराज में तो बडो सुखमें हतो सो वा सुखमें तें मोकों क्यों काढे। तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए जो तोकों श्रीविट्ठलनाथजीकी सेवा करनी हे। तोकों तो केवल दर्शन करायवेकी आज्ञा हती तातें तोकों दर्शन करवाए। अब आप श्रीविट्ठलनाथजी ईकोत्तरचोकडीलों या क्षेत्रमें बिराजेंगे, तब ताँई तेरो एसोही स्वरूप रहेगो। पाछे तूँ विनके संग वा लीलामें

आवेगो। एसें कहिकें आपनें वाकूँ श्रीविट्ठलनाथजी के निकट पठायो। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीपंढरपुरकी बैठकमें दिखाये। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीपंढरपुरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣बैठक ३६ मी♣श्रीनासिकके तपोवनकी बैठकको चरित्र♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक नासिकके तपोवनमें पंचवटीमेंहे। तहाँ श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो यहाँ श्रीरामचंद्रजीने तपस्या कीएहे। ओर श्रीसीताजीको हरण इहांईतें भयोहे तातें यहाँहू श्रीभागवतकी सप्ताह करेंगे। या गाममें मायावादी बहुतहें तातें मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे, एसें कहकें आप तहाँ कछुकदिन बिराजे। तब सब पंडितननें सुनी जो यहाँ तपोवनमें श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेहें विननें दक्षिण तथा काशीमें मायामतको खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीयोहे ओर विष्णुसंप्रदायको अंगीकार कीएहें ओर सुनत हें जो अग्निकुंडमेंतें आपको प्रादुर्भाव भयो हे तातें अग्नितें अधिक तेज आपमेंहे सो दर्शनतो करे, परिचर्चा केसें होयगी, तब विन पंडितनमें तें एक पंडितनें कही जो आपुनमें तें चारि जनें एकमतो करिकें चलोगे, तब मायावाद स्थापन होयगो ओर भक्तिमार्ग असत्य होयगो। ओर कदाचित मायावाद को खंडन भयो ओर भक्तिमार्गको स्थापन भयो, क्यों जो वे बडे बडे देशनमें दिग्विजय करिकें पधारेहें सो साक्षात् ईश्वर विनाँ यह कार्य न होय। तो ईश्वरके आगें हारिवेकीहू कछु चिंता नाहीहे। तातें तुम डरपो मति सो सुनिकें वे मायावादी श्रीआचार्यजीके पास आए

ता समय श्रीआचार्यजी आप सप्ताह करिचुके हते। तब वे नासिकके पंडित आये तिनकों श्रीआचार्यजीनें सत्कार करिकें बेठारे। तब विन पंडितननें कही जो महाराज हमारो धन्य भाग्यहे जो आपको दर्शन भयो। तापाछें विनसुँ आपकी चर्चा भई सो घडीचारमें श्रीआचार्यजीनें विन सब पंडितनकों निरूत्तर कीए। तब सब पंडितननें आपसमें कही जो येतो वेदशास्त्रको निरूपण करतहे, सो एतो ईश्वरहे। तातें विनने विनती करी जो हम धन्यहें जो आप ईश्वरको दर्शन हमकों भयो। अब आप कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो तुम रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगंगाजीमें स्नान करि आवो, क्यों जो हमारे संप्रदायमें तुलसीमाला धारणकी आवश्यकताहे। तब सब ब्राह्मण रुद्राक्ष उतारिके स्नान करि आए, तब श्रीआचार्यजीनें सबनको नाम सुनाए ओर तुलसीकी माला पहराई। तब मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए। तातें नासिकक्षेत्रमें जेजेकार भयो। पाछें सब पंडित दंडवत् करिकें अपने घरकों गए। तापाछें श्रीआचार्यजी आप कटाक्षद्वारा अनेक तामसी जीवनको अंगीकार कीए। पाछें कछूकदिन बिराजकें तहाँतें विजय कीए सो दक्षिणको पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु नासिक पंचवटीकी बैठकमें प्रगट कीयो। इति श्रीपंचवटीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३७ मी ♣ श्रीपन्नानृसिंहजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक पन्नानृसिंहजीमेंहें तहाँ एक छोंकरके नीचे आप बिराजे। तहाँ श्रीआचार्यजीके पास श्रीनृसिंहजी पधारे। तब आप ठाडे होयकें नमस्कार कीए। ओर

कहे जो श्रीनृसिंहाय नमः । ओर आप विनती कीए जो आप परिश्रम करिके इहाँ क्यों पधारे । में तो आपके दर्शनके लीये ही आयो हूँ, सो अबही मंदिरमें आवत हतो । तब श्रीनृसिंहजी कहे जो मित्रको यही धर्म हे, जो मित्र पधारे पीछें धीरज केसें रहें आप तो हमारे सर्वस्वहो । आपको प्रागट्य तो दैवीजीवनके उद्धारार्थ ओर सकलतीर्थनको सनाथ करणार्थ हे । तातें यह मेरी आज्ञाहे जो बेगि मंदिरमें पधारिए । यह आज्ञा करिकें श्रीनृसिंहजी आप मंदिरमें पधारे । तब श्रीमहाप्रभु आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो मिश्रीको पणा सिद्ध करो । वामें सुगंध गुलाबजल पधरावो । तब दामोदरदास विनती कीए जो महाराज श्रीनृसिंहजी पणाही आरोगेहे ताको कारण कहा तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो श्रीनृसिंहजी प्रगट होतही युद्ध करि हिरण्यकश्यपुको मारे तब आपको बहुत श्रम भयो । तातें पणो श्रम निवारक हे सो आप आरोगे । तातें आपको पणो बहुत प्रियहे । यह आज्ञा करी श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पणा सिद्ध करवाए । पाछें सब सेवकन सहित आप मंदिरमें पधारे, तब तहाँ एक पंडा श्रीनृसिंहजीको कृपापात्र हतो तासों श्रीनृसिंहजी आज्ञा कीए जो श्रीआचार्यजी पधारेहें, सो वे साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार हे तातें भक्ति रीतिसों विनको मंदिरमें पधराय लावो । तब वा पंडानें जायके साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराज आप मंदिरमें पधारिए । तब श्रीआचार्यजी मंदिरमें पधारे । श्रीनृसिंहजी के दर्शन कीए, पणा आरोगाए । तब श्रीनृसिंहजी आप आधो पणा आरोगे ओर आधो रहिवे दीए । तब श्रीआचार्यजी विनती कीए जो मित्रताकी अधिकता कहा । तब श्रीनृसिंहजी ओर आरोगे । पाछें थोरोसो रह्यो सो आपकों

दियो। पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीनृसिंहजीकी आज्ञा लेकें अपनी बैठकमें पधारे। तहाँ आप सप्ताह कीए। तहाँ श्रीनृसिंहजी सुनिवेकों पधारे, तब श्रीआचार्यजी आप कहे जो आप परिश्रम करी काहेको पधारे। तब श्रीनृसिंहजी कहे जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बोहोत अभिलाषा हती तातें अब समो पायोहे। तब ए वचन सुनिके आप श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भए। आप कृष्णदासमेघनको आज्ञा कीए। जो एक पटा पास बिछाय देऊ। तब कृष्णदासने एक पटा बिछाय दीए। तापर श्रीनृसिंहजी बिराजे। सो जहां ताई सप्ताह भई तहां तांई आप श्रीनृसिंहजी नित्य पधारे। तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें चरणारविंदकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनको उद्धार कीए। पाछें आप श्रीनृसिंहजीकी आज्ञा माँगि तहाँतें विजय कीए, सो दक्षिण पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीपन्नानृसिंहजीकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी पन्नानृसिंहजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३८ मी ♣ श्रीलक्ष्मणबालाजीकी बैठकको चरित्र♣

जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी आप श्रीलक्ष्मणभट्टजी सहित काशीमें बिराजत हते तब तहाँ बहुत पंडित श्रीआचार्यजीसों चर्चा करिवेकों। आवते तब सबनको आप निरुत्तर करते। ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजी आप ब्राह्मण भोजनकरिवेको बुलावते तब वे श्रीआचार्यजीसों वाद झगड़ो करते। तब श्रीआचार्यजी आप सबनके मायावादको निरास करि भक्तिमार्ग स्थापन करते। एकदिन श्रीआचार्यजी आप बिचारे जो अब दक्षणको चले तो

ठीकहे । परंतु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों लक्ष्मणभट्टजीको बहुत स्नेह हतो जो वे क्षण मात्र न देखे तो उनसों रह्यो न जाय । तब श्रीआचार्यजी आप मनमें बिचारे जो पृथ्वीपरिक्रमाको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करनेहें ओर दशों दिशनमें दिग्विजय करि ब्रह्मवादको स्थापन करनोहे सो तो स्वतंत्रता विनु यहकार्य न होई । ओर पिताको तो स्नेह बहुतहे, तातें अकेले परदेश जायवेकी तो वे आज्ञा न देइंगे, तातें अब तो श्रीलक्ष्मणभट्टजी स्वधांमको पधारे तो आछो । तब एकदिन श्रीआचार्यजी आप पित्रुचरण श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कहे जो पिताजी श्रीलक्ष्मणबालाजी होयकें अब काँकरवाडको चलें तो ठीकहे । तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी बहुत प्रसन्न होय कछूकदिनबाद सब कुटुंब सहित श्रीलक्ष्मणबालाजीमें आए, तहाँ एक सुंदर जगे देखिकें बिराजे । तहाँ श्रीलक्ष्मणभट्टजी स्नान करि श्रीईलंमाँगारुजी सहित आचार्यजीको लेंके श्रीलक्ष्मणबालाजीके दर्शन करनेको पधारे । तब श्रीआचार्यजी आप श्रीलक्ष्मणभट्टजी सो विनती कीए जो आप श्रीलक्ष्मणबालाजीको सिंगार करो । तब श्री लक्ष्मणभट्टजीनें शृंगार कीयो ता समय श्रीलक्ष्मणबालाजीको उबासी आई, तातें श्रीलक्ष्मणभट्टजी तों मुखमें लीन होय गये । तब श्रीईलंमाँगारुजी बहुत खेद कीए तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनी मातृचरण श्रीईलंमाँगारुजीको बहुत प्रकारको समाधान करे, ओर कहे जो हमारे पिता तो अक्षरब्रह्मको स्वरूप हते, सो अक्षरब्रह्ममें प्राप्त भये । पाछें आप पिताके वस्त्र लेकें बाहिर पधारे सो वेदप्रणीतमार्गसों विन वस्त्रनकों अग्निसंस्कारादि क्रियाकरकें कछुक दिन बीते । तब आप माताजीसों विनती किये जो अब आप रामकृष्णको लेकें

विद्यानगरमें मामा के घर पधारो, ओर मे हूँ कछूक दिनमें आऊँगो, ओर केशवपुरीसों आज्ञा कीए जो तुमहू कृपाकरिके घर पधारिये, या प्रकार सूतक निवृत्त भये पाछें सबसों बिदा भये। ता पाछें एक ब्रह्मछोंकरके नीचे आप बिराजे, तब आप श्रीआचार्यजी सप्ताहको प्रारंभ कीए, तहाँ श्रीलक्ष्मणबालाजी नित्य कथा सुनिवेको पधारे। तिनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नमस्कार करि आसन बिछायकें अपनें पास पधराए ओर आप कहें जो आप श्रम करिकें केसें पधारे। तब श्री लक्ष्मणबालाजी आज्ञा कीए जो तुमारे मुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हती, सो आज समय आयोहे। तब आप श्रीआचार्यजी सप्ताह कीए सो तहाँ महाअलौकिक आनंद भयो। ता सप्ताह की समाप्ति करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीलक्ष्मणबालाजीके मंदिरमें पधारे, तहाँ सब सेवा सिंगार कीए ओर पंडाकों रूपैया पचीस सामग्री के लिये दीये। तब श्रीलक्ष्मणबालाजीसों आप पूछें जो महाराज आपकों कहा सामग्री प्रियहे। तब श्रीलक्ष्मणबालाजी कहें जो मनोहरके लडुवा करवावो। तातें सोइ सामग्री सिद्धि करवाई थारमें साजिकें पंडानें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराज आप अपनें श्रीहस्तसों भोग धरिये। तब श्रीआचार्यजी आप अपनें श्रीहस्तसों भोग धरे। तब श्रीलक्ष्मणबालाजीनें कही जो अब आपहुं भोजनकों बिराजिये। एसें कहि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बाँह पकरिकें अपने संग भोजनकों बेठारे। परस्पर भोजन कीए ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो। पाछें आचमन करि मुखवस्त्र करि बीडी आरोगाय आरती करी। पाछें श्रीलक्ष्मणबालाजीकी आज्ञा माँगिके श्रीआचार्यजी अपनी बैठकमें पधारे। पाछें तहाँतें विजय

कीए। याप्रकार तीनबेर आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीलक्ष्मणबालाजी पधारे सो तीन्योबेर न्यारे न्यारे चरित्र कीए। इति श्रीलक्ष्मणबालाजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ३९ मी ♣ श्रीरंगजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक श्रीरंगमें कावेरीनदीके तीरपें छोंकरके वृक्षके नीचेंहें। तहाँ आप बिराजे तब आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए जो श्रीरंगजी वैकुंठतें पधारतहें। तब श्रीरंगजी श्रीआचार्यजीसों मिलिवेकों पधारे। तब आप श्रीरंगजीकों देखिकें ठाडे भए ओर प्रणाम करि आसनपें पधराये। ओर कही जो आप परिश्रम करिके यहाँ क्यों पधारेहो। में तो आपके लीये ईहाँ आयोहि हतो, सो मंदिरमें अबही आवतो। तब श्रीरंगजी आप आज्ञा कीए जो आप परिश्रम करि ईतनी दूरसो आएहो ओर हम ईतनी दूर आये सो यामें कहा बडीबातहे। आप काहेकों भूतलपें पधारते। एतो आप दैवीजीवनके उद्धारार्थ पधारेहो ओर श्रीनाथजीके प्रागट्यके सर्व समाचार श्रीरंगजीनें आपसों पूछे, जो कोन रीतिसों आप श्रीनाथजी प्रगटेहें ओर कहा कहा चरित्र कीएहें ओर कोन भाँतिसों बिराजतहें सो आप सब विस्तारपूर्वक कहिये। तब श्रीआचार्यजीने श्रीनाथजीके प्रागट्यकी सर्व वार्ता श्रीरंगजीकों सुनाइ। सो सुनिकें श्रीरंगजी बहुत प्रसन्न भये। पाछें श्रीरंगजीनें कही जो अब मंदिरमें पधारिये। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो आप पधारिए में हूँ पाछेंतें आवतहुं। तब श्रीरंगजी आप मंदिरमें पधारे ओर मुखिया आनंदरामकों आज्ञा कीए जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु साक्षात् पुरुषोत्तम को अवतार पधारेहें,

तातें तुम भक्तिभावकी रीतिसों विनती करिकें विनकों मंदिरमें पधराय लावो। सेवा श्रृंगार सब वोही करेंगे। तब आनंदराम मुखियाने जायकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराज आप कृपा करिकें मंदिर में पधारिये। तब श्रीआचार्यजी आप मंदिरमें पधारे। तब मुखियाजीनें विनती करी जो महाराज सेवा श्रृंगार आपहि करिए, श्रीठाकुरजीकी आज्ञाहे। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीरंगजीको शृंगार कीए तब अद्भुत शृंगार भयो। तब आनंदराम मुखियाकों महा अलौकिक दर्शन भयो। तापाछें मुखियानें विनती करी जो महाराजाधिराज मोहुकों शरण लीजिये। तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो तुम तो श्रीरंगजीके कृपापात्रहो। तब श्रीरंगजीनेंहू कही जो यह दैवीजीवहे, तातें आप याकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजीनें वा मुखियाको नाम सुनाए। तापाछें इनको दस रुपैया सामग्रीके दीये ओर आज्ञा कीए जो अब वेगी सामग्री साजिके ले आवो। तब वो सामग्री सिद्धि करिकें थार साजी लाए ताकों आप श्रीआचार्यजीनें श्रीहस्तसों भोग समर्पे। तब श्रीरंगजीं आज्ञा कीए जो आपहू आरोगिये। तब श्रीआचार्यजी कहें जो आप भोजन करिए। तब श्रीरंगजी आज्ञा कीए जो मुखारविंदरूप तो आपहो ओर भोजनतो मुखारविंदसों होय, सो श्रीरंगजीने आग्रह करिकें आपको श्रीहस्तकमल पकरिकें अपने पास श्रीआचार्यजीकों बेठारे। तब परस्पर भोजन कीए, वा समय अनिर्वचनीय सुख भयो। तापाछें अचवायकें बीडा आरोगाए, तब आनंदराम मुखियासों श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो आरती लावो। तब मुखिया आरती प्रगट करिकें लायो, पाछें श्रीरंगजीकी आरती करि, आज्ञा ले श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप

अपनी बैठकमें पधारे। पाछें आप सप्ताह कीए, तब महाअलौकिक आनंद भयो। तब श्रीरंगजीमें मायावादी हते सो सब भेले होयके चर्चा करन आए तब श्रीआचार्यजी आप सबनको सत्कार करिके बेठारे। पाछें चर्चा भई सो घडी दोयमें श्रीआचार्यजी आपनें सबनको निरुत्तर कीए। तब आप मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए। तब श्रीरंगजीमें जेजेकार भयो। एसो माहात्म्य देखिके अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरण आए। पाछें श्रीआचार्यजी श्रीरंगजीसों बिदाहोय विजय कीए सो विष्णुकांची पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीरंगजीकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीरंगजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४० मी ♣ श्रीविष्णुकांचीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक सुरभीनदीपें छोंकरके नीचेहें तहां आप बिराजे। तब आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो सात पुरीहे तामें साडेतीन पुरी तो शिवकीहे ओर साडेतीन पुरी विष्णुकीहें। सो अब विष्णुकी पुरी कहेतहें १ श्रीमथुरापुरी २ अयोध्यापुरी ३ द्वारिकापुरी ओर आधी विष्णुकांची तामें विष्णुकांचीके मालिक वरदराजस्वामीहें। तहां वरदराजस्वामीके अलौकिक दर्शनहें, सो दर्शनकों तो यहां आएहें। परंतु मंदिरमें पधारनों न बनेंगों। तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज आप मंदिरमें पधारिवेकी नांही किए याको कारण कहाहे। तब श्रीआचार्यजी आपकहें जो जयदेवजी कवि भएहे सो यहांही भएहें। वे वरदराजस्वामीके कृपापात्र

हते । वीननें २४ अष्टपदी कीएहें ओर निजमंदिरकी चोवीस सिढीहें, सो एक एक सिढीपें एक एक अष्टपदी लिखीहे । तातें भगवन्नामपें हमसों पांव केसें दीयो जाय तातें पधारिवो नहीं होयगो । तब दामोदरदास विनती कीए जो श्रीवरदराजस्वामीने पधरावेंगे । सो यह बात श्रीवरदराजस्वामीनें मंदिरमें बेठे जांनी । तब आप विचारें जो श्रीआचार्यजी आप मंदिरमें न पधारेंगे तो मोकों ईनके श्रीहस्तको स्पर्श न होयगो । तातें श्रीवरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पधरायवेको आप सामें पधारे । श्रीआचार्यजीसों मिलकें आप आज्ञा कीए जो आप निजमंदिरमें क्यों नही पधारे । तब श्रीआचार्यजी कहें जो आपके दर्शनतें तो जीव कृतार्थ होयजातहें, परंतु भगवन्नाम ऊपर पांव केसें दीजिये तब तो श्रीवरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीको श्रीहस्त पकरिकें अपने मंदिर में ले चलें । सो मंदिर में जाय अपने सिंघासनपें आधि गादी पें पधराए ओर तहां एक हस्तसिंगार नाम मुखिया हतो, वासों श्रीवरदराजस्वामी संभाषण करते, तातें आप वासों आज्ञा कीए जो अब तुम सब पंडानको लेकें बाहिर निकसी जावो । तब पंडा मुखिया सब बाहिर निकसि आए । पाछें दोय मुहुर्त तांई श्रीवरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वार्ता कीए । तापाछें श्रीवरदराजस्वामी कहें जो अब श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य सब कहिये । तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीगोवर्धननाथजीके प्राकट्यको सर्व प्रकार श्रीवरदराजस्वामीसों कहें, सो सुनिके श्रीवरदराजस्वामी बहुत प्रसन्न भए । तब दोयमुहुर्त पाछें हस्तसिंगारमुखियाको आप बुलाए तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाको सात मुद्रा भेंटके दीए ओर कहे जो याकी सामग्री लेकें श्रीवरदराजस्वामीको अंगीकार

करवाओ । तब मुखियाजीने पूछी जो महाराज कहा सामग्री अंगीकार करवावे, तब श्रीआचार्यजी कहे जो श्रीवरदराजस्वामीकी इच्छा होय सो करो। तब श्रीवरदराजस्वामीकी आज्ञा भई जो ढोकलाकी सामग्री सिद्धि करो, सो सामग्री सिद्धि करिकें धरी सो भोग धरे पाछें समय भयो तब हस्तसिंगारमुखिया भोग सरावन गयो, तब श्रीवरदराजस्वामी आज्ञा कीए जो तुम भोग मति सरावो । तब श्रीआचार्यजी आप भोगसरावन गए तब श्रीवरदराजस्वामी आज्ञा कीए जो आप यहां प्रसाद लेऊ तब श्रीआचार्यजी ओर श्रीवरदराजस्वामी दोनों संग मिलिकें भोजन कीए ता समय महाअलौकिक सुख भयो । ता समें जो श्रीवरदराजस्वामीको कृपापात्र मुखिया हतो सो तहां ठाडो हतो । वानें यह सुख देख्यो सो हस्तसिंगारमुखिया वह सुख देखिकें मुर्छित भयो। तब श्रीआचार्यजी ओर श्रीवरदराजस्वामी भोजन करिचूके पाछें जलपांन करी बीडा आरोगे । पाछें आप हस्तसिंगारमुखियाकों सावधान कीए । तब मुखियानें विनती करी जो महाराज में तो बडे सुख में हतो जो श्रीयमुनाँजी तथा श्रीगिरिराजजीके दर्शन करत हतो। ता सुखमेंतें आपनें मोकों क्यों निकास्यो । तब श्रीआचार्यजी कहें जो जितनो अधिकार होय तितनोंही प्राप्त होय। अब कितनेकदिन तांई तुम श्रीवरदराजस्वामीकी सेवा करो । तापाछें इनकी आज्ञा होय सो करो । तब तुमको यह सुख प्राप्त होयगो । तब तो कों व्रजलीलाको दर्शन होयगो । तापाछें कालांतर करिकें वाकों व्रजलीलाको संबंध भयो सो जेसें पुंडरीकब्राह्मणकों याही देहसों व्रजलीलाकों दर्शन करवायो सो तो श्रीविट्ठलनाथजीकी आज्ञासों वाको अधिकार विशेष हतो, ओर याको अधिकार न

हतो तातें जन्मांतर करिकें याकों व्रजलीलाको संबंध भयो । यह व्रजलीलामें प्राप्त भयो । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीवरदराजस्वामीकी आज्ञातें अपनी बैठकमें पधारे । तहाँ आप सातदिनलों श्रीभागवतकी सप्ताह कीए। यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विष्णुकांचीकी बैठकमें प्रगट कीए । इति श्रीविष्णुकांचीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४१ मी ♣ श्रीसेतुबंधरामेश्वरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी आप विष्णुकांचीसों विजय कीए सो सेतुबंधरामेश्वर पधारे । तहाँ सेतुबंधरामेश्वरमें एक छोंकरके नीचें आप बिराजे, तहां आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो श्रीरघुनाथजी आप लंका पधारे ता समय समुद्रको सेतु बांध्यो । तब यहां श्रीरामेश्वरजीकी आपनें स्थापना कीएहें, सो श्रीरामेश्वरजी श्रीरामचंद्रजीको स्वरूपहें तातें बिभीषण नित्यदर्शन करिवेकूं आवतहें, एसें कहकें आप तहां बिराजे । पाछें दूसरे दिन तहां श्रीभागवतकी सप्ताहको प्रारंभ कीए; तब श्रीरामेश्वरजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कथा सुनिवेकों पधारे तब श्रीआचार्यजी कहें जो आप परिश्रम करिकें क्यों पधारे, तब श्रीरामेश्वरजी कहें जो आपनें जीवनपें बडो अनुग्रह कीयोहे । आपको दर्शन यहां कहांतें होय, तातें आप हमहूकों श्रीभागवतको श्रवण कराइये यह मेरो मनोरथहे । तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो सप्ताह होयगी सो कृपा करिकें सुनिए। सो जहाँतांई श्रीभागवतकी कथा होती तहाँ ताँई श्रीरामेश्वरजी आप सुनिवेकों पधारते । सो श्रीआचार्यजीके निकट बिराजते ओर कथाकी समाप्ति भए पीछें मंदिरको

पधारते । तहां एक श्रीरामेश्वरजीको कृपापात्र भक्त हतो उनकों श्रीरामेश्वरजी आप साक्षात् दर्शन देते । पाछें वह खांन पांन करतो, सो एक दिन तीनप्रहरतांई मंदिरमें वो बेठ्यो रह्यो । परि वाकों श्रीरामेश्वरजीको दर्शन न भयो । पाछें जब आप पधारे तब वा भक्तने विनती करी जो महाराज अब तांई आपको दर्शन न भयो ताको कारण कहा तब श्रीरामेश्वरजी कहें जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहां पधारेहें सो में विनकी कथा सुनिवे गयो हतो, सो अबही आयो । तब तोकों दर्शन भयो हे, तातें अब तूँ प्रातःकाल आयो करि नांतर तीसरे प्रहर आयो करि तब तोकों दर्शन होयगो नहीं तो नहीं होयगो। सो जहांतांई श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वहां पारायण करते तहांतांई श्रीरामेश्वरजी वहां बिराजे । पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सप्ताह समाप्त करि चरणारविंदकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनकों अंगीकार कीए । तापाछें पुरोहितकों बुलायकें तीर्थक्षेत्र में विधिपूर्वक स्नान करि श्रीरामेश्वरजीकी आज्ञा मांगि तहांतें आगें मलयाचलपर्वतपें पधारे । यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेतुबंध रामेश्वर की बैठकमें कीए। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेतुबंध रामेश्वरकी की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४२मी ♣ श्रीमलयाचलपर्वतकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक मलयाचलपर्वतपें हे तहाँ आप बिराजे। तहां आसपास चंदनको वन हे तहाँ तामसीजीवन के उद्धारार्थ आप पधारे तहाँ एक चंदनके वृक्षके नीचे बिराजिकें कृष्णदास सों कहें जो यहाँ श्रीहेमगुपालठाकुरजी बिराजतहे । तब श्रीहेमगुपालजीने जाँनी जो

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारेहें, तब वे मिलिवेकों आए सो श्रीहेमगुपालजी ओर श्रीआचार्यजी परस्पर मिले तब अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें श्रीहेमगुपालजीनें कह्यो जो तुम एसी विकट जगे पधारेहो जो यहां तामसीजीव बहुतहें । सो वे आपसमें लड़तहें । तातें आपके लिए फलाहार में लाऊंगो । आप वैष्णवकों मति पठाइयो । काहेतें जो यहांके तामसीजीव बहुत झेहेरीहें । तब श्रीआचार्यजी विनती कीए जो आप प्रसन्न रहिये । आपके प्रतापते मेरे सेवकनकों कोऊ नाम न लेयगो ओर महिनानताँई हम यहां बिराजेंगे । एसे श्रीमुखके वचन सुनिकें श्रीहेमगुपालजी बहुत प्रसन्न भए ओर कहे जो यहां आसपास चंदनको वनहे तोहू मेरी गरमी नहीं मिटतहे । परंतु आपके दर्शनमात्रतें मेरे रोम रोम शीतल भयेहें, सो आपको पधारनों यहां कहांते भयो । आपतो केवल दैवीजीवनके लियें इहां पधारेहो ओर तिनहीके लिये आपको भुतलपें प्रागट्यहे ओर मायामत खंडनार्थ ओर भक्तिमार्ग स्थापनार्थहे सो पृथ्वीपरिक्रमाको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करतहो। फेरि आप पूछे जो श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य सब लीलासहित श्रीगिरिराजमें भयोहें सो ये समाचार विधिपूर्वक हमकूँ सुनाइये। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सर्व समाचार विस्तारपूर्वक श्रीहेमगुपालजीकों सुनाए, तब श्रीहेमगुपालजी बहुत प्रसन्न भये ओर कहें जो आप मंदिरमें पधारिये । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विनती कीए जो आप पधारो, में अरगजा सिद्धि करवायकें आपकों आयकें समरपूँगो । तब श्रीहेमगुपालजी अपने मंदिर में पधारे । पाछें श्रीआचार्यजीनें कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो

तुम अरगजा सिद्धि करो ओर दामोदरदाससों आज्ञा कीए जो तुम केरा ओर नारियल सँमारो । सो सामग्री ओर अरगजा सिद्धि भयो । तब श्रीआचार्यजी सब सेवकन सहित श्रीहेमगुपालजीके मंदिरमें पधारे सो श्रीहेमगुपालजीकों अरगजा समर्पे ओर सामग्री आरोगाए। पाछें आज्ञा मांगि श्रीआचार्यजी अपनी बैठककों पधारे । पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीभागवतकी पारायणको आरंभ कीए। तब श्रीहेमगुपालजीठाकुरजी कथा सुनिवे पधारे । तब श्रीआचार्यजीनें आपकुं आसनपें पधराए तब श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती सो समय मिल्योहे । सो जहांतांई कथा होय तहांतांई श्रीहेंमगुपालजी बिराजें । पाछें मंदिरकों पधारे । जा दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कथाकी समाप्ति कीए वा दिन इंद्र श्रीहेमगुपालजीके दर्शनकों आयो हतो सो वा दिन वाको दर्शन न भयो, तब इंद्र उहांई बेठि रह्यो, सो जब श्रीहेमगुपालजीठाकुरजी कथाकी समाप्ति पाछें मंदिरमें पधारे, तब दर्शन भयो । तब इंद्रने साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराजाधिराज अबतांई आप कहां पधारे हते जो आपको दर्शन नहीं भयो, ताको कारण कहा । तब श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए जो यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेहें । तिनके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती सो समय आय मिल्योहे । विननें श्रीभागवतकी सप्ताह कीएहें सो में कथा सुनिवे गयो हतो सो अबही आयोहूँ । तब इंद्रनें साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको केसो स्वरूप हे, जो आप कृपा करिकें कहिए । तब श्रीहेंमगुपालजीठाकुरजी कहें जो साक्षात्

श्रीपूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदरूपहें, ओर तेरो यज्ञमेंटिकें श्रीगिरिराजको प्रत्यक्ष स्वरूप धरि सहस्त्रभुजा धारणकरिकें भोजन कीए ओर श्रीगिरिराज उठायकें गोप गो तथा व्रजभक्तनको रक्षण कीनो तब तूँ शरणि जायपड्यो, तातें तेरी पीठिथाप स्वर्गलोकको पठायो। सोई साक्षात् भावात्मकपुरुषोत्तम दैवीजीवनके उद्धारार्थ भूतलपें प्रगट भयेहें, तिननें मायामत खंडनकरि भक्तिमार्गको स्थापन कियोहे। तातें अपनों नाम श्रीवल्लभाचार्यजी धर्योहे, सो चंपारण्यमें आपको प्रागट्य भयोहे। तब ब्रह्मा ओर तुमसब दर्शनको गए हते, सोई अब तूँ भूलिगयो। वेई श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेहें, एसें श्रीमुखके वचन सुनिकें इंद्रनें दंडवत् करी ओर आज्ञा मांगी जो महाराज में वहां श्रीआचार्यजीके दर्शनकों जाऊं तब श्रीठाकुरजी कहें जो तूँ सुखेन जाइ। तब इंद्र पावन चलिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु जहां बिराजे हते तहां आयकें साष्टांग दंडवत् करी ओर गद्गद् कंठ होयकें विनती करी जो महाराज आपके दर्शन कहां। ये तो श्रीहेमगुपालजीकी कृपासों आपके दर्शन भये। तब श्रीआचार्यजीनें इंद्रको समाधान करि स्वर्गकों पठायो। पाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीए जो इंद्र दर्शनको आयो हतो। पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सप्ताहकी समाप्ति करि चरणारविंदकी रजद्वारा तामसी जीवनको उद्धार कीए, पाछें कछूक दिन बिराजे। फेरि श्रीहेमगुपालजीकी आज्ञा ले आगें दक्षणकों पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें मलयाचलकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीमलयाचलकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४३ मी ♣ श्रीलोहगढकी बैठकको चरित्र ♣

अब मलाबार देशमें लोहगढ जाकों अब कोंकण गोवा केहेत हें तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आछी रमणीयजगे देखिकें बिराजे, तहां छोंकरको वृक्ष हे ताके नीचें एक शिला हे तहाँ हाथीके पांवको चिह्नहे ओर आसपास बहुत गहवर बन हे तहां तामसीजीव हजारन रेहेत हते तहां आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए जो यह स्थलबहुत रमणीयहे तातें यहां सप्ताह करिकें अनेक तामसीजीवनको तथा दैवीजीवनको अंगीकार करें। तब कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराजाधिराज इहां कोई जलको स्थल दिसत नांही हे, तब आप कहें जो या पर्वतके ऊपर झरनां बहुत झरत हें ओर मेरे समीप एक पर्वतकीटेकरीहे ताके नेंक दूरिपें एक बडो तलावहे ओर शिलापें हाथीके पांवहें ताकें पास एक बडी शिला हे वा शिलाके नीचे एक बडी गुफा हे तामें तीन कुंड हें, एकतो अप्सराकुंड हे तहां नित्य अप्सरा स्नानकरनकूं आवति हें, ओर एक गंधर्वकुंड हे तहां गंधर्व स्नानकरिवेकों आवत हें ओर एक देवताकुंड हे, इंद्र सबरे देवतानसहित पूर्णमासीकेदिन स्नानकरिवेकों आवतहे। ऐसें कहिकें आपनें वहां श्रीभागवतकी पारायणको प्रारंभ कीए। ताकी सात दिनमें सप्ताह कीए तब महाअलौकिक आनंद भयो। पाछें श्रीआचार्यजीनें अपने चरणारविंदकी सुगंध फेलाए सो सुगंध लेतमात्रही हजारन तामसीजीवनकी पशुयोनि छुटि गई सो गोपालदासजी श्रीवल्लभाख्यानमें गाए हें (ते तामसनांअघ हर्यां परताप पदरज गंध) यह महाअलौकिक माहात्म्य देखिकें सब भगवदीय दंडवत् करिकें विनती कीए जो महाराज यह

सामर्थ्य आपकीहे जो एक क्षणमें हजारन जीवनको उद्धार कीए। तापाछें कछूकदिनमें तहांतें विजय कीए जो आगें पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें लोहगढकी बैठकमें दिखाए। इति श्रीआचार्यजीकी लोहगढकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४४ मी ♣ श्रीताम्रपर्णीनदीके तीरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक ताम्रपर्णीनदीके तीरपें छोंकरके नीचेहे तहाँ श्रीआचार्यजी श्रीभागवत को पारायण कीए तहांतें तीनकोसपें एक बडो शेहेरहे ता शेहेरको राजा बहुत बीमार हतो तब वा राजाने पंडितनसों तथा जोतीशीनसों पूछी जो मेरो शरीर आछो होय ऐसो उपाय बतावो तब जोतीशीननें कही जो राजाजी तुमारे तो सब ग्रह बिगडेहें तात बिचारिकें कहेंगे एसें कहिकें सब पंडित अपनें घरकों गए। एक पंडित तहाँ बेठ्यो रह्यो। वानें कही जो राजाजी में कहों सो तुम करो तब बचोगे। तब वा राजानें कही जो तुम कहोगे सोई में करूँगो। तब वा पंडितनें कही जो एक सोंनेको पुतरा अपनी बराबरिको बनवावो वाको तुमारो गहनों पोशाख सब पहरावो फेरि वा पुतराको दान ब्राह्मणको करो सो जो ब्राह्मण दान लेयगो सो मरिजायगो ओर तुम बचोगे। सो सुनिके ताहीसमय वा राजाने दोयमण सोंना मंगवाय सुनार बुलवाइके एक पुतरा बनवायो। वाकों आपनों गहनां पोशाख सब पहराए। तब अपनें पुरोहितसमेत सब पंडितन को बुलायके कही जो या पुतराको दान लेउँ, तब जो ब्राह्मण दान लेवेको जाय ताके सन्मुख वा कालज्वर आवे। तब सब पंडितननें कही जो हमको यह दान नहीं चहियत। तब

राजानें अपनें पुरोहित को बुलायो ओर कही जो तुम बिना यहदान कोंन ले सकेगो। तब वा पुरोहित दान लेनको ठाडो भयो सो गिरिपर्यो। तब वा पुरोहितने कही जो मोको तो यह दांन चहियत नांही। तापाछें जा पंडितने यह दान बतायो हतो ताहीको राजानें बुलायो ओर कही जो तुमही यह दान लेउ तब वा पंडितने वा पुतराके सामनें देख्यो सो महाविक्राळ कालकोस्वरूप देखी पर्यो तब वो थरथर कांपिवे लग्यो ओर राजातें कही जो तुमको मारनों होयतो वेसेई मारो, परि हमकों यह दांन तो नांही चाहिये। तब राजा उसास लेके चुप होई रह्यो ओर कह्यो जो अब काहूमें ब्रह्मतेज रह्यो नांही अब मेरो मृत्यु निश्चे होयगो। सो यह निश्चे करिकें राजा ताम्रपर्णीनदीके किनारे गयो, तहां देखे तो कोटिकंदर्पलावण्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिराजेहे। तब राजानें कही जो 'निर्विप्रमुर्वीतलं' याकालमें ब्राह्मणनमें ब्रह्मतेज रह्यो नाँहीहे। सो सुनतही तत्काल श्रीआचार्यजी आप वा राजातें कहें जो अरे राजा यह कहा बात करोहो जो जगत कहा नास्तिक व्हे गयोहे। तब वा राजानें श्रीआचार्यजी तें विनती करी जो महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर दीखोहो, परंतु राजाको दान करनो ओर ब्राह्मणन को दान लेनों यह धर्म हे सो में दान देतहूँ सो कोउ लेते नांही। तब श्रीआचार्यजी आप वा राजासों कहें जो अब या समय तो आप इहांसों घर जाओ, सबेरे हम वहाँ आइकें तुमारो दान लेइँगे। तब वह राजा प्रसन्नहोयकें अपनें घर गयो। पाछें प्रातःकाल श्रीमहाप्रभुजी आप सब सेवकन सहित तहाँ पधारे। तब तहाँ राजाने खबरकरनवारे तैयार राखे हते तिननें खबर दई। तब राजानें श्रीआचार्यजीको वा पुतराकेनिकट

पधराये ओर संकल्प कियो। तब पुतरानें श्रीआचार्यजीके सन्मुख एक अँगुरी बताई, तब आपने हंसिकें तीन अँगुरीयां दिखाई। तब पुतरानें माँथो नीचो कियो। तापाछें श्रीआचार्यजीनें सुनार बुलाइकें वा पुतराके टूक करवाये सो देखिवेकों जो हजारन ब्राह्मण आये हते तिन सबनकों बांटि दीए। तापाछें राजानें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराज वा पुतरानें एक अँगुरी ऊँची करी ओर आपनें वाके सामनें तीन अंगुरी ऊँची करी ताको कारण कहाहे। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो राजा तुम बडे साहसीहो, तुम अपनों प्राण बचाइवेके लिये ब्रह्महत्यातें नाहीं डरपे। सो जो ब्राह्मण मरिजातो तो तुमकों ब्रह्महत्या लगती, तो तुम महापातकी होते। फिर आपनें कही जो पुतरानें जो एक अँगुरी बताई सो वानें यह पूछी जो तुम एककाल गायत्री साधो हो, तब हमनें तीन बताई जो हम त्रिकाल गायत्री साधेंहें। तब वानें माथों नीचो कियो, सो एसो करडो दाँन कबहु न करनों, जो ओर कोऊ एसो दान लेतो तो मरिजातो। हमनें जो न्यारे न्यारे टूक करवायके बांटे सो अब सब ब्राह्मण थोरो थोरो भुगत लेइगें परंतु कोऊ मरेगो नांहीं। तब राजानें दंडवत् करिकें विनती करी जो कृपानाथ मोकों शरणिलीजिये। तब आप राजाकों सेवक कीए। यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आए। यामें पंडितनकों यह जताए जो प्रतिग्रह लेनों महाकठिनहे। तापाछें राजानें बहुत भेंट करी। पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपकी बैठकमें पधारे, तहाँ तीनदिनलों आपने गायत्री जप कीयो तब सब सेवकननें विनती करी जो महाराजाधिराज आप तो ईश्वरहो सो आपनें राजा ओर

ब्राह्मण दोनों को बचाए। तब आप कहें जो हमारी देखादेखी एसो दान कोइ लेईगो ताको निश्चे मृत्यु होयगो। तापाछें वहांके सब पंडित आप श्रीआचार्यजीके सेवक भए। यह चरित्र ताम्रपर्णीनदीपें कीए। इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी ताम्रपर्णीनदीके तीरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४५ मी ♣ श्रीकृष्णानदीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक कृष्णानदीके तीरपें पीपरके वृक्षके नीचेहे तहां आप बिराजेहे। तब श्रीआचार्यजीने दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो यहाँ तैलंगब्राह्मण मायावादी बहुतहें, तिनसों वाद विवाद करकें मायामत खंडनकरि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे। पहले तो यहां सप्ताह करेंगें सो सुनिकें मायावादी आप सब यहां चले आवेंगे। तब सहजहीमें चर्चा होयगी एसी इच्छा किये। पाछें श्रीआचार्यजीनें वहां श्रीभागवतके पारायणको आरंभ कियो यह समाचार मायावादी पंडितननें सुने जो श्रीवल्लभाचार्यजी दिग्विजय करत इहां पधारेहें, सो कृष्णानदी के तीरपें बिराजेहें। तातें आसपासके सब पंडितनकों बुलाए ओर विचारी जो आपको तेज बडो भारी सुनेहें जो विनके सामनें काहूसों बोल्यो नाहीं जात। तातें सब मायावादी पंडितनमें विचारिकें एकमतो करिकें चले, सो कृष्णानदीपें आए। तहां चार्यो संप्रदायके वैष्णवहु सब आपके दर्शनकों आए। तिन सबननें विनती करी जो महाराजाधिराज ये मायावादी हमकों बहुत दुःख देतहें। यहां मायावादीनको बहुत जोरहे ओर आप विष्णुस्वामीकी संप्रदायके आचार्यहो तातें आप हमारो रक्षणकरिकें मायामतको खंडन कीजे। तब श्रीआचार्यजी

कहें जो हम याके लिये तो यहां आएहीहें। आज सप्ताहकी समाप्ति हो चुकीहे, ओर मायावादीहु आवतहें। पाछें तहां थोरीसी बेरमें मायावादी पंडितहु सब आय पोहोंचे, तिन सबनकों आप श्रीआचार्यजीनें आदरकरिकें बेठारे। पाछें चर्चा भई, तब प्रहर एकमें आप श्रीआचार्यजीनें सेंकडान पंडितनकों निरुत्तर कीए। तब मायामतको खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीए, तातें चार्यों संप्रदायके वैष्णव मन में बहुत प्रसन्न भये। पाछें विननें विनती करी जो महाराजाधिराज कृपाकरिकें हमकों शरणि लीजिये। तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको माहात्म्य देखिकें अनेकजीव सेवक भए। तब मायावादीनको निश्चे भयो जो एतो वेद पुराणको निरूपण करतहें एतो ईश्वर हें तिनकें दर्शन आज हमकों भए अब कृपा करिकें हमकों शरणि लीजिये। तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए जो रूद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आवो, तब सब मायावादी रुद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आए। तब आपनें कृपा करि सबनकों नाम सुनायो ओर तुलसीकी माला पहराई। तब कृष्णानदीके तीरपें जेजेकार भयो। तब सब पंडित दंडवत् करिकें अपनें अपनें घर गए पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कृष्णानदीके तीरसों विजय कीए। इति श्रीकृष्णानदीके तीरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४६ मी ♣ श्रीपंपासरोवरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक पंपासरोवरपें वटके नीचेंहे तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजे। आप श्रीहस्तसों पाक करत हते, तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो ढाकके पतौआ लावो। तब कृष्णदासमेघन पतौआ लेंनकों गए सो दूरि निकसि

गए, तहां देखें तो एक भयंकर पक्षी पर्यो हे, वाकों कृष्णदासनें देख्यो तब मन में बिचार्यो जो यह पक्षी कोई कालांतरको दीखेहे। वाकेही पास ढाकको वृक्ष हे सो तहाँ जायकें ढाकके पतौआ तो ले आऊँ, एसें बिचारिकें कृष्णदास तहां गए, तब वह पक्षी बोल्यो जो में रामावतारको बेठ्योहूँ सो में बहुत दुःख पावतहों। तातें तुम श्रीमहाप्रभुनसों विनती करो तो मेरो उद्धार होय। तुम भगवदीय द्वारा मेरो उद्धार होयगो। सो सुनिकें कृष्णदासजीनें कही जो हाँ में आपसों विनती तो करूँगो, पाछें तो ईच्छा आपकी। तापाछें कृष्णदासजी पत्ता लेकें गये सो विननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी जो महाराज एक पक्षी रामावतारको बेठ्योहे। वानें विनती करीहे जो मेरो उद्धार करो। अबमें बहुत दुःख पावतहों। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तो परम दयालहें, सो आज्ञा कीए जो चरणोदकको जल लेकें वाके ऊपर छिरको। तब कृष्णदासनें चरणोदकको जल ले जायकें वाके ऊपर छिरक्यो। तब ताही समय वाकी पक्षियोनि छुटिगई ओर दैवीस्वरूप भयो। वाही समय वैकुंठतें विमान आयो सो विमांनमें बेठिकें वो पक्षी वैकुंठको गयो। तब आप कहें जो तेरे द्वारा वाको उद्धार भयो याके लियेंही तोकों पतौआ लेन पठायो हतो। फेरि श्रीआचार्यजी आप वहां सप्ताह कीए, तब महाअलौकिक आनंद भयो। तापाछें आपनें कटाक्ष द्वारा तामसीजीवन को उद्धार कियो। पाछें एक दिन बिराजिकें पंपासरोवरसों विजय कीए। यह चरित्र श्रीमहाप्रभुननें पंपासरोवरकी बैठकमें प्रगट कियो। इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी पंपासरोवरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४७ मी ♣ श्रीपद्मनाभजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक श्रीपद्मनाभजीमेंहें तहां एक रमणीयस्थल देखिकें छोंकरकेनीचें आप बिराजे । तब दामोदरदाससों आज्ञा कीए जो श्रीपद्मनाभजीके नाभीकमलमेंतें ब्रह्मा भयो सोई पोढानाथको स्वरूप येहे, सो शेषशाई शेषकी सिज्यापें पोढेहें, यह कहिकें आप बिराजे । इतनेंमें श्रीपद्मनाभजी पधारे, तब श्रीआचार्यजी ठाडेहोयकें प्रणाम कीए। जो श्रीपद्मनाभाय नमः । पाछें श्रीपद्मनाभजीकों आसनपें पधराए । आपहू श्रीआचार्यजी आसनपें बिराजे । फेरि आपनें विनती करी जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहांतांई क्यों पधारे । में तो आपके दर्शनकेलियेही यहां आयोहू। सो मंदिरमें दर्शन करिवेकों आवत हतो। तब श्रीपद्मनाभजी कहें जो आप परिश्रमकरिकें दक्षिणतें यहां तांई पधारे तो में यहां तांई आयो यामे कहा बडीबात करी । आप जा पें कृपाकटाक्ष करो ताके मनोरथ पूर्ण होय । पाछें श्रीआचार्यजी आप कहें जो सबेरे में मंदिरमें आऊँगो । तब श्रीपद्मनाभजी अपनें मंदिरमें पधारे । पाछें श्रीआचार्यजी आप कथा कहिकें अपनी बैठकमें पोढे । सबेरे उठि स्नान करि नित्यनेमसों पहुँचे। तब श्रीपद्मनाभजीको मुखिया आनंदराम बडो कृपापात्र हतो, तासो आप श्रीपद्मनाभजी भाषण करते । ता मुखियासों आपनें कही जो श्रीआचार्यजी यहां पधारेहें, विनकों भक्तिमार्ग की रीतिसों विनती करिकें मंदिरमें पधरायलाऊ । तब मुखियानें आयकें श्रीआचार्यजीसों साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो कृपा करिके आप मंदिरमें पधारिये । तब श्रीआचार्यजी श्रीपद्मनाभजीकें मंदिर में पधारे ।

तब मुखियानें विनती करी जो महाराज सेवा शृंगार सब आप कीजे। तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीपद्मनाभजीको शृंगार कियो, तब अद्‌भुत दर्शन भयो। पाछें श्रीआचार्यजीनें दसरुपैया सामग्रीके दीए, जो याको वेगि थार साजिकें लावो। तब मुखिया थार साजिकें लाए सो श्रीमहाप्रभुजी आप भोग समर्पे। तब श्रीपद्मनाभजीनें आज्ञा करी जो आप प्रसादलेउ। तब आपनें परस्पर भोजन कियो। ता समें अनिर्वचनीय सुख भयो। सो अलौकिक दर्शन आनंदराममुखियाकों भए, तब मुर्छित भयो ता समय वाकों व्रजलीलाको दर्शन भयो। श्रीगिरिराज श्रीयमुनांजी तथा श्रीवृन्दावनके दर्शन भए, तहां श्रीआचार्यजी आप भोजन करि आचमन करि बीडा आरोगे, पाछें सिंघासनपें बिराजे। तब श्रीपद्मनाभजीकों श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागट्यके समाचार कहे। पाछें श्रीआचार्यजीनें मुखियाको सावधान कियो तब वा मुखियानें कही जो महाराज आपकी कृपासों महाअलौकिक दर्शन भयो अब कृपा करिकें मोको शरणि लीजिये। तब श्रीआचार्यजीनें आज्ञा करी जो तुमतो श्रीपद्मनाभजीके कृपापात्रहो, श्रीपद्मनाभजीकी सेवासों तुमको सुख प्राप्ति होयगो। श्रीआचार्यजीके एसे वचन सुनिकें मुखिया अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो। तब श्रीपद्मनाभजीनें श्रीआचार्यजीसों आज्ञा करी जो यह जीव दैवीहे। आपयाकों नाम सुनावो। तब श्रीआचार्यजी वा मुखियाकों नांम सुनाए। पाछें मुखियासों आज्ञा करी, जो आरती लाऊ। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीपद्मनाभजीकी आरती करी, पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें अपनी बैठकमें पधारे। श्रीआचार्यजीनें वहां एक सप्ताह करी,

श्रीपद्मनाभजी नित्य सुनिवेकों पधारते । पाछें सप्ताह की समाप्ति करि तांमसी जीवनको अंगीकार कीए। पाछें कछूकदिन बिराजके श्रीपद्मनाभजीकी आज्ञा लेकें तहांते आगें पधारे । यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें श्रीपद्मनाभजीकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीपद्मनाभजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४८ मी ♣ श्रीजनार्दनकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक जनार्दनजीमें कुंडके पासहे तहां एक छोंकरके नीचें आप बिराजे । दूसरेदिन आप श्रीजनार्दनजीके दर्शनकों पधारे, सब सेवकनसहित आपनें दर्शन कीए । तब श्रीजनार्दनजी आज्ञा कीए जो आप भीतर पधारिये । तब श्रीआचार्यजी आप भीतर पधारे । तहां श्रीजनार्दनजीको कृपापात्र एक पंडा हतो ,ता पंडासों आप आज्ञा कीए जो तुम वस्त्राभूषण सब श्रीमहाप्रभुजीकों सोंपो सो शृंगार श्रीमहाप्रभुजी करेंगे ओर तुम जायकें रसोई सिद्धि करो तब वह पंडा रसोई बालभोगमें गयो । तब श्रीआचार्यजी आप शृंगार कीए सो अद्‌भुत शृंगार भयो । तब श्रीजनार्दनजीनें कही जो शृंगारके मिसकरि आपके श्रीहस्तको स्पर्श करायो नांतर हमकूं इतने दूर आपके श्रीहस्तको स्पर्श कहांतें होतो । तब पंडानें विनती करी जो महाराजाधिराज सामग्री सिद्धि भईहे, तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीये जो थार साजिकें लावो, तब पंडा थार साजिकें लायो सो श्रीमहाप्रभुजी आप भोग समर्पे । तब श्रीजनार्दनजीनें आज्ञा करी जो मुखारविंदरूप तो आपहो, तातें आप बिनां भोजन केसें करें । तातें आप भोजन को बिराजो । तब श्रीआचार्यजी आप विनती कीए जो एसें केसें बनें । तब श्रीजनार्दनजीनें बहुत आग्रह

करिकें कही तब श्रीआचार्यजी मनमें बिचारे जो भगवद्‌आज्ञा हे सो सर्वोपरीहे, सो उलंघन न करनी । तब परस्पर भोजन कीए । तब अनिर्वचनीय सुख भयो । वा समयकों दर्शन पंडाको भयो, तब वा पंडाको मूर्च्छा आई पाछें श्रीआचार्यजी अचवाईकें परस्पर बीडा आरोगे। तब जनार्दनजीनें आज्ञा करी जो श्रीगोवर्धननाथजीके प्राकट्यकी वार्ता सब कहिए। मोकों सुनिवेकी बहुत अभिलाषा हे। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीजीके प्राकट्यकी सब वार्ता कही सुनाई। तब श्रीजनार्दनजीकी आरती करि आज्ञा लेकें अपनी बैठकमें पधारे । तहां सप्ताहको आरंभ कीए । श्रीजनार्दनजी आप कथा सुनिवेकों पधारे । तब श्रीजनार्दनजीनें कही जो मोकों आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हती, सो समय आज मिल्यो हे । तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीके वचन सुनिकें बहुत प्रसन्न भए । पाछें आप सप्ताह की समाप्ति कीए । तहां महाअलौकिक आनंद भयो । पाछें श्रीआचार्यजी आपनें चरणारविंदकी रजसों अनेक तामसी जीवन को उद्धार कीए। तहां सहजमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करे। तब श्रीजनार्दनजीमें जेजेकार भयो । यह माहात्म्य देखिके अनेक जीव शरण आए पाछें आप श्रीजनार्दनजीकी आज्ञा ले आगें पधारे। इति श्रीजनार्दनजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४९ मी ♣ श्रीविद्यानगरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक विद्यानगरमें विद्याकुंडके ऊपरहे तहां प्रथम आपनें या रीति सों मायामत खंडन कियोहे। एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिचारें जो

दक्षिणमें कृष्णदेवराजा महापंडितहे, जाकेयहां चार्यों संप्रदायके आचार्यसों मायावादी झगडो करतहें, तहां मायावादी प्रबल होय रहेहे तातें वहाँ पधारनों एसो बिचारी आप दक्षिणमें पधारे। बीचमें दामोदरदास को गाम हतो तामें विनके घरके नीचे होयके जायवेको राजमार्ग हतो, वे दामोदरदास पूर्वके बिछुरे हते, सो गोखमें बैठे बैठे श्रीआचार्यजीके दर्शनको विरह करत हते विनके पिता तो भगवद्चरणकों प्राप्तभए हते। विन दामोदरदास के बडेभाई तीन हते सो ऊननें बिचार्यो जो द्रव्यहे सो क्लेशको मूल हे, तातें याकों बांटि लेंय तो भैयान में हित रहेगो, एसो बिचारिके अपने द्रव्यके चार बांट कीए। तब दामोदरदासतें कहें जो तुम अपनें बांटेको द्रव्य लेऊ, तब दामोदरदासनें कह्यो जो तुम आछो जानों सो करो, वे तो यही बिचारते जो कब श्रीमहाप्रभु पधारे ओर कब मोकुं दर्शन होय। तब ईतनेंहीमें श्रीआचार्यजी आप राजमार्ग में दामोदरदासकी गोखके नीचे होयके पधारे। तब दामोदरदासकों श्रीआचार्यजीकों दर्शन कोटिकंदर्पलावण्यको भयो, सो देखतहीं दामोदरदास गोखतें नीचे उतरिके भाजिकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत् कीए। तब आप श्रीमुखतें कहें जो दमला तूँ आयो। पाछें आप शेहेरके बाहिर पधारे, तब दामोदरदास हूँ आपके चरणारविंद पीछे पीछे चले। तहां एक सुंदर चोतरा हतो ता ऊपर आप जायकें बिराजे। तब दामोदरदास दंडवत् करिकें सामने बेठे ओर विनती करी जो महाराज अब तुरत मोकों आपनों कीजे। तब श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों नाम सुनाए, पाछें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासको संग लेकें विद्यानगर

पधारे । तहां प्रथम श्रीआचार्यजी अपनें मांमांके घर पधारे । तब मांमांने अति हर्षसों पधराये, ओर कह्यो जो या राजाके दांनाध्यक्ष हमहें, ओर इहां सांप्रत बहुत मत मिलेहें ओर तुमहू बहुत पढे हो तातें में राजासों तुमारो मिलाप कराऊँगो । तब आप मुसिकाईकें चूप करिरहे । पाछें रात्रिकों मांमांनें विनती करी जो ऊठो भोजन करो । तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो हम तो स्वयंपाकीहें, अपनें हाथसों करिकें लेतहें । यह सुनिके मांमांकों बहुत बुरी लागी ओर कह्यो जो तुमारे बडे बडे लेत हते ओर तुम एसे बढिके बोलतहो । तब आपतो साक्षात् ईश्वरहें सो सब सहन कीए कछू उत्तर न दीयो । ताही समय मांमांने राजद्वारमें जायकें राजासों कह्यो जो काल्हि कोऊ नयो ब्राह्मण न आवन पावे, ओर नए ब्राह्मणसों चर्चा न होय क्यों जो बहुत दिनन सों मायावादी ओर वैष्णवनको झगडो होय रह्योहे ओर बारहवर्षसों सिरकारमें तें खरच उठतहें । मायावादी अति प्रबलहे तातें अब वैष्णवसंप्रदायको खंडन होयगो ओर मायामतको तिलक होयगो । यह सुनिके राजानें खवासतें कह्यो जो काल्हि कोऊ नयोब्राह्मण मति आवन दीजियो, ओर दरवांनते कहीदेऊ जो काल्हि कोऊ नयो ब्राह्मण न आवन पावे । मांमां सब बातको बंदोबस्त करि अपने घर आयो । तब श्रीइलंमाँजीनें आपतें बहुत कही जो सब तैयारी करायदेऊँ सो श्रीहस्तसों रसोई करिकें भोजन करो । तब श्रीआचार्यजी कहें जो अबतो सबेरे बात या बिरियाँ तो कछू नहीं खायगे । तापाछें आपतो पोढे । अर्धरात्रके समय श्रीगोवर्धननाथजी तहां पधारे, श्रीआचार्यजीकों जगायकें कहे जो तुम एसे गर्वित बचन सुनिकें याके घर क्यों रहे । में तो

तिहारे पीछेंपीछें डोलतहों एसे कोटानकोटि राजा आपके चरणारविंदकी अभिलाखा करतहें। एसें कोंन हे जों आपको राजासों मिलाप करवावेगो। तातें आप विद्याकुंडपे पधारिये। एसी आज्ञा करि श्रीगोवर्धननाथजी तो पधारे। ताही समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ऊठिकें कृष्णदासकों ओर दामोदरदासकों संग लेकें आप विद्याकुंड ऊपर पधारे। तहाँ देहकृत्य करि स्नान करि नित्यनेम कीए। पाछें आप प्रातःकाल अपनें कमंडलुकों आज्ञा कीए जो तुम राजा कृष्णदेवकी सभामें खबरी करो। तब कमंडलु ताही समय राजाकी सभामें अंतरिक्षसुं गयो। तब राजा सब सभासहित ऊठि ठाडो भयो ओर कमंडलुको साष्टांग दंडवत् करी। तब वा कमंडलुको तेज देखिकें राजानें विचार्यो जो यह तो साक्षात् ईश्वरको कमंडलु हे। पाछें राजानें वा कमंडलुसों विनती करी जो अब तुम अपनें स्वामीकों पधरायके लावो। तब फेरि कमंडलु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आईकें ध्वनी करी जो महाराज आप पधारिये। तब श्रीआचार्यजी सब सेवकनकों साथ लेकें राजाकृष्णदेवकी सभामें पधारे। राजाकृष्णदेवनें शतमणसुवर्ण को सिंघासन बनाईकें कर्यो हतो, वा राजाके मनमें यह अभिलाखा हती जो मायामतको खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेगो ताकों या सिंघासनपें पधरायके कनकाभिषेक करूँगो। ईतनेंमें श्रीआचार्यजी आपहू दरवाजे के पास पधारे सो कोटानकोट सूर्यको तेज देखिकें पोरिया दोरे तिननें राजासों जायकें कही जो साक्षात् ईश्वर पधारेहें। तब राजा ऊठिकें दोर्यो सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको तेज देखिकें साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराजाधिराज कृपा करिकें वेग

पधारिये, ओर मायामत खंडन करिये। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गजगती चालसों वेगि पधारे। तब सब सभा ऊठिकें ठाडी भई तब राजानें बिनाहीं वाद किए विनती करी जो महाराज कृपा करिकें सिंघासनपें बिराजिये। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो बहुत आछो। पाछें आप सिंघासन ऊपर बिराजे ओर कहें जो राजा यह कहा झगडो हे। तब राजानें विनती करी जो महाराज वैष्णवनकी ओर मायावादीन की चर्चा होतहे। तब श्रीआचार्यजी कहें जो वैष्णव संप्रदायतो हमारोहे, जाकों चर्चा करनी होय सो हमारे समीप आयकें बेठो। तब राजानें मायावादीनसों कही। अब तुम सब बेठिकें चर्चा करो। तब विननें प्रश्न कीए सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप एक उत्तर में सब मायावादीनकों निरुत्तर कीए। तब सब पंडित हाथ जोरिकें कहे जो महाराजाधिराज आपतो साक्षात् ईश्वर हो, आपको दर्शन हमकों आज भयोहे। या प्रकार आप विद्यानगरमें मायामत खंडन करि ब्रह्मवाद को स्थापन कीए। तब तहां जेजेकार भयो। तातें राजा कृष्णदेवनें बहुत सेवक करवाए, ओर आपहू सेवक भयो। तब राजा कृष्णदेवनें श्रीआचार्यजीकों [१] कनकाभिषेक करायो ओर विनती करी जो महाराजाधिराज यह सब द्रव्य आपकोहे। तब आप आज्ञा कीए जो यह तो स्नानजल भयो तातें आप सुनार बुलाइकें टूक टूक करवायकें हजारन ब्राह्मण आएहें तिनसबनकूं बांटि देऊ, सो सुनिकें सब ब्राह्मण कहें जो यह ईश्वर बिनां कोन करे। तब शतमण सुवर्ण

---

[१] श्रीमद् वल्लभाचार्यजीनें कृष्णदेव राजाए कनकाभिषेक कर्यो छे तेवा ४० ग्रन्थोना प्राचीन सप्रमाण पुरावावाळुं अमारा तरफथी प्रकट थयेल "कनकाभिषेकनो इतिहास" सचित्र ए पुस्तक वाचों.

बांटि दीए। तब प्रशंसा करत सब ब्राह्मण अपनें घर गए। कृष्णदेवराजानें विनती करी महाराजाधिराज कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये। तब आप राजाकृष्णदेवकों नांम सुनाए। तब राजानें मोहोरनको थार भरि आपकें आगें धर्यो। वामें तें आप सातमोहोर काढि लीए। तब राजानें विनती करी जो महाराज सात मोहोर आप क्यों उठाए ये तो सब मोहोरें आपकीहें तब आप आज्ञा कीए जो इन मोहोरनकी हमारी आडीसों कटिमेखला बनवाईकें श्रीजगन्नाथरायजीकों अंगीकार करवावो। एसो माहत्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरण आए। पाछें आप विद्याकुंडपें पधारे। तहां सांझकों माधवाचार्य ओर रामानुजाचार्यनें आयकें विनती करी, जो महाराज आपनें हमारे धर्मकी रक्षा करी, तातें आप भक्तिमार्गके रक्षक भए। तातें आप हमारी गादीपें बिराजो। हम सब आपकी आज्ञामें रहेंगे। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें बिचार्यो जो चार्यो संप्रदायके मुर्द्धन्य विष्णुस्वामी हे, तातें विष्णुस्वामी संप्रदायके लियें तो हमारो प्रागट्य हे ओर विष्णुस्वामीके शिष्य बिल्वमंगल भए हें। इतनेंमें बिल्वमंगलजी हू आए, आईकें श्रीआचार्यजीकों नमस्कार करिके कही जो कृपासागर विष्णुस्वामी सेवामार्ग प्रगट करिकें बहुत दिनातांई वे भूतलपें बिराजे। परि कोई एसो शिष्य न भयो जो वो मार्ग चलावे। या बातको विष्णुस्वामीकों बहुत ताप रह्यो। पाछें आप तो स्वधांमको पधारे। तब मोसों आज्ञा कीये जो मेरे शिष्य तो सब ऐसे भए जो अपनें अपनें देहके सुखार्थी भए प्रभुनकों न विचारें, ओर संप्रदायके ग्रन्थनकोहु

अवलोकन न किये । सेवकनको तो मुख्यधर्म यहहे जो स्वामी जासों प्रसन्न होयसो करनों । याप्रकार विष्णुस्वामीको बहुत विरह भयो, तब स्वप्नद्वारा उनको भगवद्‌आज्ञा भइ जो दक्षण में तैलंगकुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम को प्रागट्य होईगो, सो बहुतकालतें जो दैवीजीव बिछुरेहें तिन दैवीजीवन के उद्धारार्थ ओर भक्तिमार्ग धर्ममार्ग स्थापनार्थ आप पधारेंगे । तिनको भूतलपें संवत १५३५ माधव मास कृष्ण ११ मध्याह्नकालके समय जेष्ठानक्षत्र रविवारके दिन स्व इच्छातें चंपारण्यमें अग्निकुंडमेंतें प्रादुर्भाव होयगो । तिनको नांम श्रीवल्लभाचार्यजी होयगो, सो सेवामार्ग प्रगट करेंगे । एसी भगवदआज्ञा भई, तब मोसों आप श्रीविष्णुस्वामी कहे जो में तो स्वधांमकों जातहों परि तुम रहियो तुमकों काल बाधा न करेगो । सो जब आप श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट होईकें विद्यानगर पधारेंगें, सो वे सभा जितिकें जब दिग्विजय करी भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे ओर मायामतको खंडन करेंगे तब तुमकुं अनुभव होयगो । तातें तुम विद्यानगरमें विद्याकुंडपें जैयो । तहां तोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन को दर्शन होयगो । तादिन तिनसों तूं विनती करी विष्णुस्वामीके मार्ग को अंगीकार कराईयो । यह मोकों आज्ञा करि श्रीविष्णुस्वामी निजधांम पधारेहें । यह वृत्तांत कहिकें बिल्वमंगलनें अपनों वृत्तांत कह्यो जो महाराज में श्रीविष्णुस्वामीजी की आज्ञातें वृन्दावनमें ब्रह्मकुंडके ऊपर ईमलीके वृक्षके नीचे बेठिके आपको स्मरण करत हतो, सो मोकों बेठे बेठे साढेसातसें वर्ष भएहे । अब मोको भगवद् आज्ञा भई

जो तू विद्यानगर जाई तोकों श्रीआचार्यजीको दर्शन होयगो सो में यहां आयो हूँ। एसो बिल्वमंगल को वृत्तांत सुनिकें श्रीआचार्यजी आप श्रीबिल्वमंगलजीके ऊपर बहुत प्रसन्न भए ओर कही जो श्रीविष्णुस्वामीके लिये तो मेरो प्रागटयहे तब विष्णुस्वामीकी आडीतें श्रीबिल्वमंगलजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों तिलक कियो। पाछें चार्यों संप्रदायके आचार्य मिलिकें "श्रीवल्लभाचार्यजी" नांम धरे ओर विनती करी जो महाराज चार्यों संप्रदाय आपकी हे ओर हम आपके आज्ञाधारीहें सो महाराज हमारी संप्रदायके दीक्षित आपहो। तब बिल्वमंगलनें विनती करी जो अब में स्वधांमको जात हों, एसें कहि वाही समें बिल्वमंगल स्वधांमको पधारे तब विद्यानगरमें जेजेकार भयो यह माहात्म्य देखिके अनेक जीव शरण आए। पाछें चार्यो संप्रदायके आचार्य अपनें अपनें घरकों गए। पाछें श्रीआचार्यजी आप कछूक दिन बिराजिके विद्यानगरसों विजय कीए। इति श्रीविद्यानगर की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५० मी ♣ श्रीत्रिलोकभानजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक त्रिलोकभानजीमेंहे तहां एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचे आप बिराजे। तहां मायावादी बहुत हते वे सब शक्तिके उपासक हते। तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो यहां मायावादी बहुत प्रबलहें, तातें मायामतकों खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप

तहां श्रीभागवतकी सप्ताहको आरंभ कीए, तब महाअलौकिक आनंद भयो। सो मायावादीननें सुन्यो, जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारेहें तब वे सब मिलिकें श्रीआचार्यजीके पास आए। तब आपनें सबनकों सत्कार करिकें बेठारे। तापाछें चर्चा भई सो घडी एक में श्रीआचार्यजीने सब मायावादीनकों निरुत्तर कीए। या प्रकार सहज में मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए। तब तहां जेजेकार भयो तब पंडाननें विनती करी जो महाराज कोई मनुष्य होय वासों जीत्यो जाय, आपतो साक्षात् ईश्वरहो। अब कृपाकरिकें हमकों शरण लीजिये। जब आप उद्धार करोगे तब होयगो। महाराज अबतो हम आपकी शरणांगतहें, तब श्रीमहाप्रभुजी आपतो परमदयालुहे, तातें आज्ञा कीए जो स्नान करि आवो। वे सब स्नान करि आए, तब सबनकों नांम सुनाए। ओर तुलसीकी माला पहराए। तब तहां जेजेकार भयो। पाछें दंडवत् करिकें सब अपनें घरकों गये। तब श्रीत्रिलोकभांनजी ठाकुरजी श्रीआचार्यजीके पास पधारे, तब श्रीआचार्यजी ठाडे होयके दर्शन कीए ओर प्रणाम करि विनती कीए जो महाराज पट्टापें बिराजिये। तब श्रीठाकुरजी वहां बिराजे तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो जो मायावादतो आप खंडन कीएहो, तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो यह सब आपको प्रतापहे, जापें आप कृपा कटाक्ष करो सो सनाथ होय। तब श्रीठाकुरजी कहें जो आप मंदिरमें पधारिये। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीठाकुरजीसों विनती करी जो आप मंदिरमें पधारिए। मेहुँ पाछें ते आवत हों। पाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों कहे जो हर्यो मेवा सिद्धि करो।

तब सामग्री सिद्धि करिके कृष्णदासमेघननें श्रीआचार्यजीकों विनती करी जो महाराज पधारिये, सामग्री सिद्ध भइहे । तब श्री आचार्यजी सब सेवकन सहित पधारे सो जायकें श्रीत्रिलोकभानजीके दर्शन कीए तब त्रिलोकभांनजी आज्ञा कीए जो आप श्रृंगार करिये । तब श्रीआचार्यजीने श्रृंगार किये तासमय सबनकों अद्‌भुत दर्शन भयो । पाछें आपनें श्रीठाकुरजीकों सामग्री आरोगाई । पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी अपनी बैठकमें पधारे । तहां कछुकदिनलों बिराजिकें तहांते विजय कीए सो तोताचलपर्वतपें पधारे । इति श्रीत्रिलोकभानजीकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५१ मी ♣ श्रीतोताद्रीपर्वत की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक तोताचलपर्वतके पास बहुतसो वनहे तहां बटके नीचे आप बिराजेहे । तहां कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराज जलको स्थल कहुं दिसत नांहीं । तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए जो मेरे समीप यह कदंबकोवृक्ष हे ता कदंबके दक्षण आडी एक बडी शिला हे । ता शिलाकों ऊठावो । ताके नीचें एक कुंड निकसेगो । वा कुंडमें बहुत जलहे । तब कृष्णदासने जायकें वह शिला ऊठाई तब ताके नीचें एक बडो कुंड निकस्यो, तामें सिढी बहुत सुंदर बनीही । तब सब सेवकननें वा कुंडको नांम वल्लभकुंड धर्यो । ये समाचार सब मायावादीननें सुने जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारेहे, सो विननें दक्षिणके विद्यानगरमें तथा काशीमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियोहे ओर सुनीहे जो

अग्निकुंडमेंसों आपको प्रागट्यहे तातें अग्निसरीखों आपको तेजहे । सो आपनमेंतें द्वे पंडित जायकें देखि आवो जो आपको डेरा कोनसी जगेहे एसो बिचारिकें विनमेंतें द्वे पंडित गए सो जायकें आगें देखें तो एक बटके नीचें आप बिराजेहें । सो तहां आय विननें दर्शन करिके विनती करी जो महाराज यहां निर्जल स्थलमें कहां आए बिराजे । सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजीके सेवक कृष्णदासनें कही जो तुम वा कदंबके नीचें जायकें देखो तो सही जोकेसो सुंदर कुंड जलसों भर्योहे । तब तो वे मायावादी मनमें विस्मय होयकें नमस्कार कर अपनें स्थलकों गए, आयकें विननें सब समाचार अपनें साथकेनतें कहें, जो वे तो साक्षात् ईश्वरहें, सो सुनिकें सब पंडित वहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आए । तब वहां नयो कुंड देखिकें बहुत प्रसन्न भए । तब सबननें यह विचारी जो इन पथरान में जल कहांतें भयो जो आपनें तो कोई दिन देख्यो नांही, ओर बडेनके मुखतेंहु सुन्यो नाहीं, जो यहां जलहे, तातें यह तो ईश्वरको अंश हें । पाछें श्रीआचार्यजीके निकट जाय आपको साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज हमकों तो अब शरण लीजिए । तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए तुम रूद्राक्ष उतारिकें स्नान करि आवो, तब वे सब रूद्राक्ष उतारिकें स्नान करिआए । तब श्रीआचार्यजीनें विनकों नांम सुनाए ओर तुलसीकी माला पेहेराए । तब तोताचलपर्वतपें जेजेकार भयो । तहां आप मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए । पाछें सब पंडित दंडवत् करिके अपनें अपनें घरकों गए । तब तहां श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए तब महाअलौकिक आनंद

भयो । इति श्रीतोताचलकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५२ मी ♣ श्रीदरवसेनजीमें की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक दरवसेनजीमेंहे तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे । तहां बहुत विकट जगेहे ओर तहां सर्प व्याघ्रादिक तामसी जीवहू बहुत रेहतेहते । ओर आसपास झाडीहू बहुतहे । तहां एक रमणीय स्थल देखिकें आप बिराजे । तब तहां श्रीदरवसेनजीठाकुर पधारे तब श्रीआचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकों प्रणाम कियो ओर आसनपें पधरायकें विनती करी जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहां क्यों पधारे । तब श्रीठाकुरजी कहें जो एसी विकट जगेमें आप जीवनके उद्धारार्थ पधारेहो । नांतर आपको प्रसंग हमकों कहांते होतो । परंतु यहां विकट जगे बहुत हे तातें मेरी विनती हे जो यहां जीतनें दैवीजीव हे सो सबनको उद्धार आप करीये । फेरी दैवीजीव या वनमें कोऊ आवे नाहीं, कारन जो आपके वंशमें सबही पुरुषोत्तम होयंगे, सो यहां दैवीजीव होयतो विनके उद्धारके लिये आपके वंशके बालक पधारे तामें मोकोंतो दरशनको लाभ होय, परन्तु आपको परिश्रम होय सो ठीक नाहीं । एसी आप श्रीठाकुरजीकी वात्सल्यता देखिकें बहुत प्रसन्न भए । तातें तहां चरणारविंदकी रजद्वारा हजारन जीवनको उद्धार कीए । पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सप्ताह कीए तहां श्रीठाकुरजी आप नित्य पधारते तासों अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें श्रीआचार्यजी आप सूरत पधारे । इति श्रीदरवसनेजीकी

बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५३ मी ♣ श्रीसूरतकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कांकरवाड होयकें पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजीके दर्शन करिकें पंचवटी होयकें सूरत पधारे। तहां तापीके किनारे अश्विनीकुमारके आश्रमके पास बिराजे। तापीमें स्नान कीए पाछें तहां श्रीभागवतको पारायण कीए। तब तहां एक स्त्री अकस्मात आई, सो तापीमें स्नान करि श्रीआचार्यजीकों दंडवत्करि वामभुजाकी ओर ठाडी होयकें पंखाकी सेवा करन लागी। तब ताकूं कृष्णदासजी बरजे। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदासकों नांहीं कीए। सो जहांतांई कथा होय तहांतांई पंखा करे ओर आपको श्रीमुखारविंद निरखे। जब कथा होय चूके तब दंडवत् करि अपनें आश्रममें जाय सो वाकी कृष्णदासनें बहुत चौकसी करी परन्तु निश्चे न भयो जो वे स्त्री कहांतें आवेहें ओर कहां जायहे। या रीतिसों सातदिनतांई वानें सेवा करी, जब पारायणकी समाप्ति होय चूकी तब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दंडवत् करि चरणोदक ले अपने आश्रमको गई। तब कृष्णदासनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराजाधिराज यहां जो वह स्त्री आयकें कथामें पंखाकी सेवा करत हती सो लौकिक स्त्री तो नांहीं ही, वह तो अलौकिक स्त्री ही सो कोन ही सो आप कृपा करिकें कहिये। तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें कहें जो वह तो श्रीतापीजी नदीही, वह श्रीसूर्यनारायणकी पुत्री हे। सो इनकों सप्ताह

सुनिवेकी महाअभिलाखा हती, सो यहां सप्ताह सुनिवेकों आवती। यह सुनिकें सब सेवक साष्टांग दंडवत् कीए ओर विनती कीए जो महाराज आपको अभिप्राय तो आप कृपा करिके बतावो तब ही जान्यो जाय। यह माहात्म्य देखिकें वहां अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भए। इति श्रीसूरतकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५४ मी ♣ श्रीभडोंच (भरुच०) की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक भडोचमें नर्मदानदीके किनारे भृगुक्षेत्रमेंहे तहां छोंकरके नीचे आप बिराजे। तहां अकस्मात एक स्त्री आई नखतेंलगाय शिखतांई हीरा मोतिनके आभरण पहरेही तानें अति हर्षसों आपकों साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराजाधिराज आपको जो प्रागट्यहे सो दैवीजीवन के उद्धारार्थ, मायामत खंडनार्थ ओर सकल तीर्थ सनाथ करणार्थहे। सो आप कृपाकरि नर्मदास्नान करिवेको पधारिये। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहें जो बोहोत आछो अब ही हम स्नान करिवेकों आवतहें। तब वह स्त्री दंडवत् करी अपनें स्थानकों गई। तब दामोदरदासनें विनती करिकें श्रीआचार्यजीतें पूछी जो महाराज वह स्त्री विनती करी गईहे सो वह कोन हती। आप कृपा करिकें कहिये। तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो वह श्रीनर्मदाजी नदीही सो विनती करि गई हें। पाछें आप नर्मदानदी में स्नान करनेको पधारे तब श्रीनर्मदानदी बहुत प्रसन्न भई। तहां स्नान किये पाछें आप वहां सप्ताह कीए

तब महा अलौकिक आनंद भयो। पाछें वहां मायावादीपंडित सब जुरिके आए तब उनसों चर्चा भइ सो घडी एकमें श्रीआचार्यजी आप सबनकों निरुत्तर कीए। तहां आपनें मायामत को खंडनकरि भक्तिमार्गको स्थापन कीए। तब भडोंचमें जेजेकार भयो पाछें आप तहांतें विजय कीए, सो मोरबी पधारे। इति श्रीमहाप्रभुजीकी भडोंच (भरुच) की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५५ मी ♣ श्रीमोरबीकी बैठकको चरित्र प्रारंभ ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी आप मोरबी पधारे तहां कुंडके ऊपर छोंकरके वृक्षके नीचे बिराजे। कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो यह राजामयुरध्वजको गांमहे। वो राजा बडो सत्यवादी हरिभक्त हतो। यहां श्रीकृष्णचंद्र अर्जुन सहित पधारेहे। तातें यहां सप्ताह होयगी। पाछें आप वहां सप्ताह कीए, तहां बाला ओर बादा नामके दोऊभाई पुष्करणा ब्राह्मण हते वे बडे भगवदीय हते वे दोऊ श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आए उनकों साक्षात् दर्शन भयो तब उनदोऊ भाईननें आपसों विनती करी जो महाराज हम बहुत कालतें भटकत फिरतहें आपतो परम कृपालुहो हमारो ऊद्धार कीजिये। तब आप आज्ञा कीए जो तुम स्नान करी आवो तब वे स्नान करि आए। पाछें आप कृपा करिकें दोनोंकों भगवन्नाम सुनाए। तापाछें ब्रह्मसंबंध करवाए, पाछें बालाको नांमतो बालकृष्णदास ओर बादाको नाम बादरायणदास धर्यो। विनकों श्रीआचार्यजीने एतन्मार्गीय ग्रन्थ

पढाए, पाछें विननें आपसों विनती करी जो महाराज कृपा करिकें हमकूँ सेवा पधराय दीजिए तब श्रीमहाप्रभुननें विनकों सेवा पधराय दई। ताको विस्तार चोराशी वैष्णवकी वार्तामें लिख्योहे। इति श्रीमोरबीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५६ मी ♣ श्रीनवानगरकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक नवानगरमें नागमती नदीके तीरपेंहे। तहां एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरकें नीचें आप बिराजे। तहां श्रीभागवतको पाठ कीए। ता समय राजा जामतमांचीनें आयकें साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराजाधिराज मेरे धन्य भाग्यहे जो आपके दर्शन मोकों भए। साक्षात् जाकों वेद शास्त्र निरुपण करत हे ताके दर्शन मोकूँ भए। आपके दर्शन मात्रतें मेरी बुद्धि निर्मल भई अब कृपा करीकें मोकों शरण लीजिए हम बहुतकालतें भटकत फिरतहें। तब राजाकी आरति देखिकें श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो स्नान करि आवो तब वो राजा स्नान करि आयो। तब श्रीमहाप्रभुजी आप कृपा करिकें वा राजाकों नांम सुनायो, पाछें ब्रह्मसंबंध करवायो ओर तुलसीकी माला गरेमें डारी। तब राजानें विनती करी जो महाराज मोकों यहाँ शेहेर बसावनोंहे सो आप आज्ञा देऊ तहाँ बसाऊँ। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें जो याही समय मुहूर्त आछोहे तातें तुम जायकें अब ही शेहेर बसायवेको मुहूर्त करो जातें तुमारो राज्य निर्भय होईगो। तब राजा दंडवत् करिकें अपनें घर जाय शेहेर को मुहूर्त कियो। सो शेहेर अद्यापी

बसतहे। पाछें श्रीआचार्यजी आप तहांते विजय कीए सो खंभालिया पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजीने नवानगरकी बैठकमें प्रगट कीए। इति श्रीआचार्यजीकी नवानगरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५७ मी ♣ श्रीखंभालियाकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक खंभालियामें कुंडके ऊपर छोंकरके वृक्षके नीचेंहे। तहां आप बिराजे। दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो यह स्थल बहुत रमणीयहे, तातें यहां सप्ताह करेंगे। तहां साँझके समय एक ब्राह्मणनें आईके साष्टांगदंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराज ईहां रात्रिकों आप मति रहियो। ईहाँ ईमलीपें एक प्रेत रेहेतहे सो रात्रिकों इहां जो रेहेतहे ताकों वह प्रेत खाय जातहे। तातें मेरी यह विनती हे जो रात्रिमें आप शेहेरमें बिराजो एसें कहि वह ब्राह्मणतो चल्यो गयो। पाछें आप रात्रिको वहां कथा कहिवेकों बिराजे। तासमय कृष्णदास अपरस धोइवेकों गये, तहां वह प्रेत आयो, सो वह आसपास चार्यो बगलकों डोले तब कृष्णदासनें कह्यो जो तूं ईतऊत चार्यो ओर क्यों डोलतहें तोकों आवनोंहोय तो आउ। में ईहांई ठाडोहों। तब वह प्रेत बोल्यो जो तुमतो बडे महापुरुष हो तातें मेरे ऊपर कृपा करो जो मेरो उद्धार होय। में बहुत दुःख पावतहों। पाछें कृष्णदास अपरस धोईकें आए। सो सुकाईकें श्रीआचार्यजी तें विनती करी जो महाराजाधिराज वह प्रेत आयोहे विनती करतहे जो मेरो उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी आप कहें

जो तूँ चरणोदक लेकें वाके ऊपर छिरक। तब कृष्णदासने वेसेंही कियो, तब वाकी प्रेतयोनि छूटि गई ओर दैवीस्वरूप भयो, तब वैकुंठतें विमांन आयो, सो विमाँनमें बेठिकें वैकुंठकों गयो। तब वह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी जे जे बोलत गयो। तब सब सेवकनने साष्टांग दंडवत् कीए। तातें भगवदीय गाएहें जो ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणतें मुक्ति भए, करुणामय नाथ सदा आनंदनिधि कंदे ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप तहां सप्ताह कीए तब महाअलौकिक आनंद भयो। पाछें आप तहांसों विजय कीए सो पिंडतारक पधारे। इति श्रीखंभालियाकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५८ मी ♣ श्रीपिंडतारकमेंकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाभुनकी बैठक पिंडतारकपें छोंकरकें नीचें हे। आप यहां बिराज के दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो जब श्रीकृष्णचंद्र द्वारिकामें आयके बिराजे तब सर्वतीर्थ श्रीद्वारिकाजीके आसपास आपके दर्शन करणार्थ रहे, ओर दुर्वासाऋषी हू यहां रेहेतहें। यह आज्ञा करिकें आप श्रीआचार्यजी तहां बिराजे, तहां श्रीभागवतको पारायण कीए। तब एक ब्राह्मण नित्य कथा सुनिवेकों आवतों, वासों आप आज्ञा कीए जो तुम कहां रेहेतहो। तब वा ब्राह्मणनें विनती करी जो महाराजाधिराज में तीर्थक्षेत्र रेहेतहों। सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेको बहुतदिननतें मेरो मनोरथ हतो, सो आज समें मिल्योहे। सो सुनिकें आप मुसिकाईकें चूपकरिरहे, सो जहांतांई सप्ताह होइ तहांतांई वो रहें फेरि दंडवत् करिकें पाछें जांय सो

काहूकों न दिसें। एकदिन कृष्णदासनें विनती करी जो महाराजाधिराज वह ब्राह्मण आवेहे सो कोंनहे, सो आप कृपा करिकें कहिये। तब आप आज्ञा कीए जो वा दिन हमनें कही सो तूँ समझ्यो नाहीं जो यह तीर्थक्षेत्रमें रेहेत हैं, सो वह पंडितस्वरूपसों तीर्थराज आवतहें। सो जितनें तीर्थहें सो साक्षात् स्वरूपात्मकहें, सो सुनिकें सब सेवक दंडवत् कीए। पाछें श्रीआचार्यजी आप अपनें कटाक्षद्वारा अनेक पशु पक्ष्यादि जीवनको उद्धार कीए। पाछें आप तीर्थ क्षेत्रमें स्नान कीए तब तीर्थपुरोहित आयो तासों कृष्णदासनें पूछी जो तूं कोंनहें तब वाने कह्यो जो में तीर्थपुरोहितहों वा तीर्थपुरोहितनें श्रीआचार्यजीको प्रताप देखिकें कही महाराज मेरो उद्धार करिये। में आपकी शरण हूँ तब श्रीमहाप्रभुजी आप आज्ञा कीए जो तेरो उद्धार तीर्थराज करेंगे ओर जाकी तूँ पीठिकापें हाथ धरेगो ताके हाथसों पिंड तरेंगे। पाछे आप वा पुरोहितकों भलीभांतिसों दक्षणा दीए। पाछें तहांतें विजय कीए सो मूलगोमती पें पधारे। इति श्रीपिंडतारककी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ५९ मी ♣ मूलगोमतीजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक मूलगोमतीके किनारें एक छोंकरके नीचेंहे आप तहां बिराजे हते तहां कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराज यह मूलगोमती केसें बाजेहे। तब आप आज्ञा कीए जो मूलगोमती श्रीवैकुंठतें पधारी सो राजाके इहां प्रगटी, तब अपनें पितातें कहें जो मेरो ब्याह मेरी इच्छातें होयगो। पाछें विनको श्रीद्वारिकानाथजीकी आज्ञा भई जो तुम

यहांतांई आऊ, तब विननें पितासों कही जो अब में जलरूप होयकें समुद्रसों जायकें मिलोंगी । या मिसतें श्रीकृष्णचंद्रके चरणारविंदको संबंध मोको होयगो । यह कहि श्रीगोमतीजी जलरूप होय श्रीद्वारिकाजी पधारे । तासों यह मूलगोमती बाजतहें । श्रीआचार्यजी वहां बिराजे हते । तहां एक संन्यासी आयो सो श्रीमहाप्रभुनको दंडवत् करिकें बेठ्यो । तब आप आज्ञा कीए जो यहां तुम कहां रेहेते हो ओर कहांसों आएहो । तब वा संन्यासीनें विनती करी जो महाराज पहले में दक्षणमें रेहेत हतो ओर श्रीविष्णुस्वामीको शिष्यहो, गृहस्थ हतो । मेरे बेटा लुगाई सब मरिगए । तब में गृहस्थसों बेरागी भयो । तब मनमें बिचार्यो जो अब तो अपनों कल्याण होय तेसें करनों । सो में घर छोडिकें श्रीद्वारिकापुरी आयो । यहाँ आयके श्रीद्वारिकानाथजीके दर्शन कीए। पाछें एकांत स्थल देखिकें बेठ्यो । तहां श्रीभागवतको पाठ करतो । तब द्वेचार बिरियां काल आयो सो में नहीं गयो । मोको इहां बेठे सातसोवर्ष भएहें । पाछें श्रीभगवद्आज्ञा भई जो वर मांगि । तब मेंनें यह वर मांग्यो जो मोको श्रीकृष्णचंद्रकी बाललीलाकें दर्शन होय ओर श्रीगिरिराजकी तरहटीमें वास होय । तब आज्ञा भई जो यहतो तेनें बहुत कठिन वर मांग्यो जो बडेनकोहूँ दुर्लभहे । परंतु हमारो वर खाली न जायगो । जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यहां पधारेंगे तब तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगें । सो अब आप पधारेहो, मोको स्वप्नमें आज्ञा भईहे जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारेहें । सो सुनिके आप संन्यासीसों कहें जो तुम साधनमें परिगये, तातें तुमको इतनी ढील भई । अब तुम स्नान करि आवो तब वह बेरागी श्रीगोमतीजीमें स्नान करि

आयो, तब आपनें वाको नांम सुनाए पाछें आप सप्ताह पूर्ण कीए तब महाअलौकिक आनंद भयो । पाछें आप वा संन्यासीसों आज्ञा कीए जो आजतें तीसरे दिन तेरो मृत्यु होयगो । पाछें तेरो जन्म श्रीगिरिराज में व्रजवासीके घरमें होइगो । तहां हरजीग्वाल तेरो नाम धरेंगें । तहां हमारे पुत्र श्रीगुसाँईजी आप तेरो उद्धार करेंगे । सो सुनिके वह संन्यासी साष्टांग दंडवत् करी अपनी पर्णकुटीको गयो । पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहांसों विजय कीए सो श्रीद्वारिकाजी पधारे । इति श्रीमूलगोमतीजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६० मी ♣ श्रीद्वारिकाजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकाजी पधारे, तहां गोमतीजीके किनारे छोंकरके नीचे बिराजे । पाछें श्रीद्वारिकानाथजी आपसो मिलिवेकों पधारे । तब श्रीआचार्यजी ठाडे होयके प्रणाम कीए । तब आप श्रीद्वारिकाधीश आगें आय मिले । तब श्रीआचार्यजी कहे जो प्रभु इतनों परिश्रम क्यों कीए में तो आपतें मिलिवेको आवत हतो । तब श्रीद्वारिकानाथजी कहें जो आप इतनों परिश्रम करिकें यहां पधारे ओर हम सामनें आए यामें हमकुं कहा बडो परिश्रम भयो । अबतो चातुर्मास आप यहांई बिराजो । तब श्रीआचार्यजी कहें जो आप प्रसन्न होउगे सो करेंगे । तब श्रीद्वारिकानाथजी आप प्रसन्न भए ओर आज्ञा कीए जो मंदिरमें बेगि पधारिये । तब आप विनती कीए जो आप पधारो में हूं पाछेंतें आवतहूं । तब श्रीद्वारिकानाथजी अपनें मंदिरमें पधारे श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासमेघनसों कहे जो सामग्री सिद्ध करो

तासमें श्रीद्वारिकानाथजीको कृपापात्र सेवक गोविंददासब्रह्मचारी हतो तासों श्रीद्वारिकानाथजी आप आयकें कहें जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहां पधारेहें सो वे साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतारहें तातें तूँ सामें जायकें भक्ति भावसों विनको पधराय लाऊ। तब गोविंददासब्रह्मचारीनें आयकें श्रीआचार्यजीको साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो राज मंदिरमें बेगि पधारिये। आप प्रभुने मोकों पठाए हे। तब श्रीआचार्यजी ताहीसमय पधारे। ब्रह्मचारीनें विनती करी महाराज सेवा श्रृंगार सब आपही कीजे। क्यों जो श्रीठाकुरजी आप आज्ञा कीएहें। तब आप श्रीद्वारिकानाथजीको श्रृंगार कीए तब सबनकों अद्भुत दर्शन भयो। पाछें श्रीआचार्यजी भोग धरि भोग सराय आरती करिकें अपनीं बैठकमें पधारे। तहां श्रीद्वारिकानाथजी नित्य आपकी बैठकमें पधारते। पाछें गोविंददासब्रह्मचारी नित्य श्रीआचार्यजीतें विनती करे जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हें, सो कृपा करिकें सुनाइये। तादिनसों गोविंददासके आग्रहतें आप श्रीआचार्यजी पुस्तक खोलिकें कथा कहिवे बिराजते। पाछें तहां श्रीगोवर्धननाथजी पधारिकें श्रीद्वारिकानाथजीसों कहें जो गोविंददासब्रह्मचारी तो राजलीला संबंधी सेवकहे, सो जब आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो तब वाकों व्रजलीलाको संबंध होयगो तातें आप जायकें विनसों बातें करो। तब श्रीद्वारिकानाथजी गोविंददासतें बातें करन लागे सो सुनिकें श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधे। ता पाछें श्रीद्वारिकानाथजी मंदिरमें

पधारे, तब श्रीआचार्यजी गोविंददासके ऊपर अप्रसन्न भए। पाछें फेरि गोविंददासनें श्रीआचार्यजीसों कथाकी विनती करी, परंतु आप कथा न कहें। श्रीआचार्यजीके सेवक नित्य थारकी जूठनि लेकें पीछें महाप्रसाद लेते। तो वा दिन कृष्णदासमेघनसों श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए जो आज काहुकों जूठनि मति दिजो। तब कृष्णदासनें थार मांजिकें धरिदियो। वादिन काहू सेवकनें महाप्रसाद नाहीं लियो। पाछें श्रीआचार्यजी जब श्रीद्वारिकानाथजी के मंदिरमें पधारे तब श्रीद्वारिकानाथजी आज्ञा किये जो यामें सेवकनको अपराध कहा, जो आपनें आज जुठनिकों नाहीं करी। मोसों तो श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा किये जो गोविंददासब्रह्मचारी राजलीला संबंधीहे सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो तब व्रजलीलामें अंगिकार होयगो तातें तुम जायकें वातें बातें करो। तातें मेंनें विनतें बातें करी। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीद्वारिकानाथजीके वचन सुनिकें प्रसन्न भये। पाछें अपनी बैठकमें पधारे। तब आप दामोदरदासतें कहें जो दमला तुमारी सिफारस तो बडीठोरसों भईहें। पाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीये जो अब सबनको जुठनि दीजो। ता दिनतें फेरि पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कथा कहेंनकों पधारे। जब कथा केहेन लागे तब श्रीसुबोधिनीजीको फलप्रकरण कहें तब बडो रसावेश भयो तातें सेवकनकों देहानुसंधान न रह्यो। इतनेंमें एक मेघघटा चढि आई तब श्रीआचार्यजी बिचारें जो कथामें बहुत रसावेश भयोहे तामें प्रतिबंध नहीं होय तो आछो। तब आपकी इच्छा जांनि तहां शेषजी सहस्त्रफनसों आय छत्रकीनांई छाया कीए। सो चारि घडीतांई वर्षा भई, परन्तु श्रीआचार्यजीके

सेवकनपें एक बुंदहु न परी । जब आप कथा कहिचूके तब सब सेवक सावधान भए, देखें तो वर्षा बहुत भई हे ओर आसपास जल बहुत बर्षोंहे सो देखिकें दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज बेरबेर आप इतनों परिश्रम क्यों करत हो। यहां आसपास तो वर्षा बहुत भई हे ओर इहांतो एकहु बुंद नाहीं परि । तब आप कहें जो यामें हमनें कछू परिश्रम नाहीं कियो । यह तो शेषजीनें सेवा कीनीहे । यह सुनिकें सब सेवक साष्टांग दंडवत् कीए। पाछें श्रीआचार्यजी अन्नकूट ओर प्रबोधिनी वहांही कीए। यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव आपकी शरण आए पाछें आप श्रीद्वारिकानाथजीसों बिदा होयके तहांसों विजय कीए सो गोपीतलैया पधारे। इति श्रीद्वारिकाजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६१ मी ♣ श्रीगोपीतलैयाकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजी गोपीतलैया पधारे तहां छोंकरके नीचें बिराजे। तब कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराज यह गोपीतलैया बाजतहे ताको कारण कहाहे । श्रीगोपीजन तो सदैव ब्रजमेंही बिराजतहें ओर गोपीचंदन तो यहां होतहें याको कारण कृपा करिकें कहिये। तब श्रीआचार्यजी कहें जो यह पुरातनी कथाहे। एकसमय श्रीद्वारिकाधीशनें श्रीरुक्मिणीजीके आगें ब्रजभक्तनकी बहुत सराहना करी, तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही जो महाराज हमतो राजाकी बेटीहें ओर आपकी स्वकीया हें तातें आपकी आज्ञा में तत्परहें । तब श्रीठाकुरजी कहें जो सबकछु हो परन्तु ब्रजभक्तन की होड कोऊ न करेगो । जिननें लोकवेदकी दृढ सांकरी तृणवत् करि तोरी डारी ओर जब मेनें वेणुनाद कर्यो,

तबही सब ब्रजभक्त पधारे। सो तुम स्वकीया हो तोहु तुमसों आयो न जायगो। तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही जो आप वेणुनाद करोगे तहां हम आवेंगे हमकों कोनको डर हे। तब श्रीद्वारिकानाथजी गोपीतलैयापें आय वेणुनाद कीए। तब श्रीरुक्मिणीजी आदिदेकें अष्ट पटराणी ओर सोलहहजार स्त्री सब आभुषण साजिकें बेठी हती सो वेणुनाद सुनिकें त्वरासों ठाडी होयकें चलीं। तब उग्रसेनसहित सब यादवनको समाज देखीकें मनमें संकोच भयो। जो ए पूछेंगे तो हम कहा जुवाब देयँगी, एसी लज्जासों आपुसमें संकोचित होय सब अपनें मंदिरमें पाछी जाय बेठी। तब वेणुनाद सुनिकें ब्रजमेंतें कुमारिकानके युथेयुथ पधारे। तब विनसों श्रीठाकुरजीनें रमण कीयो। पाछें विनकुमारिकाननेंहु लीलामें प्रवेश कियो। सो विन कुमारिका भक्तनके पास यहां सदैव आप बिराजतहें तातें यहां गोपीचंदन होतहे। तब कृष्णदासजीनें विनती करी जो महाराज यह दर्शन तो अवश्य करे चाहियें। तब श्रीआचार्यजीनें भगवदीयनकों दिव्यचक्षु दीए तातें श्रीद्वारिकानाथजी अलौकिककुमारिकानसों रास करतहें एसो दर्शन करवाए। तब भगवदीयनकों महा अलौकिक आनंद भयो। तातें काहुकों शरीरकी सुधि रही नांही। तापाछें आपने सबनकों सावधान कीए तब सेवकनने दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज आप यहां सप्ताह कीए सोहू महाअलौकिक आनंद दिये। पाछें आप गोपीतलैयासों विजय कीए सो शंखोद्धार पधारे। इति श्रीगोपीतलैयाकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६२ मी ♣ श्रीशंखोद्धारकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बैठक शंखोद्धार में शंखतलैया के किनारे छोंकरके वृक्षके नीचेंहे तहां आप बिराजे। तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो इहां श्रीठाकुरजीनें शंखासुर दैत्यको वध करिकें शंख लियो, तब शंखतलैयामेंसों प्रगट भए। तातें श्रीशंखनारायणजी नामतें यहां बिराजतहें। सो यहाँ के मालिक श्री शंखनारायणजी हें। ओर यह रमणकद्वीपहू बाजत हें। तातें श्रीद्वारिकानाथजी यहां सदैव रमण करत हें, तातें यह जांनि परतहें जो कोईक दिन पाछें श्रीद्वारिकानाथजी यहां बिराजेंगे, एसें कहिकें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु शंखतलैयामें स्नान कीए। श्री शंखनारायणजी के दर्शन कीए तापाछें श्रीशंखनारायणजी को श्रृंगार करि भोग धरि भोगसराय बीडी आरोगाय आरती करि, पाछें अपनी बैठकमें पधारे। तब श्रीशंखनारायणजी श्रीआचार्यजीके पास पधारे ओर कही जो आपनें श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी कीनीहे तामें तें वेणुगीतको प्रकरण सुनाइये। तब श्रीआचार्यजी विनती कीए जो एक श्लोकको व्याख्या तीनदिनलों कहेंगे। पाछें आपनें एक श्लोक को व्याख्यान कीए सो तीन दिन तीन रात्रि व्यतीत भए काहुकों देंहानुसंधान न रह्यो एसो रसावेश भयो। पाछें जब सब सावधान भए तब श्रीआचार्यजीसों श्रीठाकुरजी कहें जो यह बात तो आपसोंई बने। पाछें श्रीआचार्यजीनें सप्ताह कीए, तब महाअलौकिक आनंद भयो। श्रीशंखनारायणजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारतें, पाछें सप्ताहकी समाप्ति करि श्रीशंखनारायणजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी तहांसो

विजय कीए सो नारायण सरोवर पधारे। इति श्रीशंखोद्धारकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣बैठक ६३ मी♣श्रीनारायणसरोवर की बैठक को चरित्र♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक नारायणसरोवरपें मार्कंडेयऋषिजीके आश्रमके पास छोंकरके वृक्ष के नीचें आप बिराजे। तहां दामोदरदाससों आप आज्ञा कीए जो यहां श्रीआदिनारायणजी बिराजेहें, वे नारायणसरोवरमेंतें प्रगट भएहें। तातें हम यहां सप्ताह करेंगे। एसें कहिकें श्रीआचार्यजीनें नारायण सरोवर में स्नान करि सप्ताह को प्रारंभ कीए तब अनिर्वचनीय सुख भयो। तहां श्रीकोटेश्वरजीमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते। तहां श्रीमहादेवजी को एक बडो कृपापात्र सेवक हतो वाको साक्षात् श्रीमहादेवजी दर्शन देते तापाछें वो खांन पांन करतो। एक दिन वाकों सांझतांई दर्शन न भए। जब रात्रिको श्रीमहादेवजी पधारे, तब वानें दर्शन कीए तब वा भक्तनें विनती करी जो महाराज अबतांई आपके दर्शन न भए, ताको कारण कहाहे। तब श्रीमहादेवजी कहें यहां श्रीआचार्यजी पधारेहें, में विनकी कथा सुनिवेकों जात हों तातें तोकों दर्शन करनों होयतो बेगो आयो करि। पाछें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो सिंध प्रांतमें दैवी जीव बहुत हें, परन्तु वहां हमारो पधारनों न होईगो ताको कारण यहहे जो सरस्वतीजी को उल्लंघन हम कबहू न करेंगे कारण वो तो श्रीभगवद्वाणीको प्रवाहहें। तातें चरणारविंदकी रजद्वारा वहां के लक्षावधि दैवी जीवनकी तामसी योनी छुट जायगी। फिर पाछें हमारे वंशजद्वारा सबनको

अंगीकार करेंगे । तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज आपकी ईच्छा में आवे सोई करो । पाछें चरणारविंदकी रजकी सुगंधी फेलाय सिंधसों लगाय पंजाब देशतांईके लक्षावधि जीवन की तॉमसी योनी छुट गई । इति [१]श्रीनारायणसरोवरकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६४ मी ♣ श्रीजूनागढकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक जूनागढमें गिरनारपें रेवतीकुंड के किनारे छोंकरके नीचेंहे तहां आप बिराजे । तब गिरनार पर्वत ओर रैवताचल विप्रको स्वरूप धरिकें आए । तानें साष्टांग दंडवत् करी ओर कह्यो जो महाराज आपको प्रागट्य सकल तीर्थनको सनाथ करणार्थ हे तातें या रैवताचल पर्वतको सनाथ कीजे । तब आप आज्ञा कीए जो रैवताचल हमतो तुमारेही लीयें आएहें । तब आप पधारिकें एक शिलापें बिराजें । तब रैवताचलको परम आनंद भयो तब वों नवनीत तेहूँ अधिक कोमल भयो । तातें आपके चरणारविंदके चिह्न ऊपर आए । पाछें श्रीआचार्यजी दामोदरकुंड में स्नान करिवे पधारे, तब स्नान करतमें श्रीदामोदरजीको स्वरूप आपकों प्राप्ति भयो । सो अब जूनागढमें श्री रघुनाथलालजी के मांथे बिराजत हें । तापाछें श्रीआचार्यजी अपनी बैठक में पधारे तहां सप्ताहको आरंभ कीए । तब एक योगेश्वरनें आईकें साष्टांग दंडवत् करी ओर कही जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेको बडी इच्छा हती

---

[१] आ स्थळे वादो ने वालो ए बे भाइने शरणे लीधा छे. तेमज नगरठठ्ठाना दिवान नारायणदासने पण अहींज शरणे लीधा छे। (जुओ चोराशी वैष्णवनी वार्ता.)

वळी अहीं थी श्रीमहाप्रभुजी नगरठठ्ठा, रोहरी तथा बीजे स्थळे सिंधमां पधार्यानुं श्रीवल्लभचरित्रना पुस्तक ऊपरथी जणाय छे. जुओ "तीर्थयात्रानों हेवाल" ए पुस्तक.

सो कृपाकरिकें सुनाइए। तब आप सप्ताह कीए। वह योगेश्वर नित्य कथा श्रवण करवेकों आवतो। एक दिन कृष्णदासमेघननें विनती करी जो महाराज वह योगेश्वर आवतहे सो कोन हे। तब श्रीआचार्यजी कहें जो वे द्रोणाचार्यजीके पुत्र अस्वत्थामां यहां गिरनारमें रहतहें, वे कथा सुनिवेकों आवतहे। तब कृष्णदासजी साष्टांग दंडवत् कीए। यह आज्ञा करि आपनें चरणारविंद की रजद्वारा तहां अनेक जीव अंगीकार कीए। इति श्रीजूनागढ की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६५ मी ♣ श्रीप्रभासक्षेत्रकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजी प्रभासक्षेत्र पधारे तहां देहोत्सर्ग के ऊपर छोंकरकें नींचे गुफा में बिराजे। आप आज्ञा कीए जो यादवास्थली यहांही भईहे। यहां श्रीदाऊजी शेषरूप पधारे हे। इहां सप्ताह अवश्य होयगी। पाछें आप त्रिवेणीजीमें स्नान करि नित्यनेम कीए। पाछें आप सप्ताह कीए। तहां श्रीसोमनाथमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेको पधारते। सो एक आडी बिराजते जहांतांई कथा होती तहांतांई बिराजते। पाछें अपनें स्थानको पधारते। तहां श्रीमहादेवजीको एक कृपापात्र भक्त हतो, ताकों श्री महादेवजी साक्षात्कार हते, सो वाकों दर्शन हो तो तब वह महाप्रसाद लेतो। एक दिन तीन प्रहरतांई मंदिर में बैठ्यो रह्यो। पाछें श्रीमहादेवजी पधारे तब वाकों दर्शन भए तब वा भक्तनें विनती करी जो महाराज अबतांई तो आपको दर्शन न भयो, ताको कारण कहा तब वासों श्रीमहादेवजी आज्ञा कीए जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहां पधारेहें तहाँ में कथा सुनिवे गयो हतो, सो अब आयो। तब तोकुं दर्शन भयो। तब भक्तनें विनती करी

जो महाराज मोकों श्रीमहाप्रभुन को दर्शन करवाईये । तब श्रीमहादेवजी कहें जो तूं देहोत्सर्गतीर्थपेंजाय तहां तोको दर्शन होयगो, ओर तूं उनकी शरण जैयो । तब वह भक्त श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आयो, आयके श्रीआचार्यजीके दर्शन कीए साष्टांग दंडवत् करिके विनती करी जो महाराज कृपा करिकें मोकों शरण लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आप कहे जो तुम श्रीमहादेवजी के कृपापात्र होयकें हमारे शरण आयवेकी क्यों केहेतहो । तब वानें विनती करी महाराज मोकों श्रीमहादेवजीनें ही पठायोहे । तब आप आज्ञा कीए जो तुम स्नान करि आऊ तब वह स्नान करि आयो तब श्रीआचार्यजीनें वाकों नांम सुनायकें वैष्णव कियो । पाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए तब महाअलौकिक आनंद भयो । पाछें श्रीआचार्यजी आप प्रभासक्षेत्रकी पंचतीर्थी परिक्रमा कीए ऐसे माहात्म्य देखिके तहां अनेक जीव आपके शरण आये । इति श्रीप्रभासक्षेत्रकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६६ मी. ♣ श्रीमाधवपुरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक माधवपुरमें कदंबकुंडके ऊपरहे तहां आप बिराजे । तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो यहां श्रीरुक्मिणीजीतें श्रीकृष्णको ब्याह भयोहे सो चौर्यतासों भयोहे । वा ब्याहकी ठोर यहहे ओर आप श्रीकृष्ण रुक्मिणीजी सहित गठजोरासों स्नानकीए । येही कदंबकुंडहे । पाछें सब ऋषिमंडलनें स्नान कीयोहे । एसें कहि पाछें श्रीआचार्यजी आपनें श्रीमाधवरायजीके दर्शन कीये । तब श्रीआचार्यजीनें साष्टांगप्रणाम करिकें विनती किये जो महाराज

आप इहां कहां बिराजत हो । तब श्रीमाधवरायजी कहे जो एक ब्राह्मण यहां मोकों नित्य एकलोटा जलसों स्नान करावतहे । वाकों आप सेवाप्रकार सिखावो। तब दूसरेदिन फिर श्रीआचार्यजी आप गांममें पधारे । तहां माधवरायजीके दर्शन कीए । तब वह ब्राह्मण आयो, तासों आप आज्ञा कीए, जो इन श्रीमाधवरायजीको आछी जगे पधरावो ओर सेवा शृंगार आछी रीतसों करो । तातें इनके पाछें तुमारोहु निर्वाह आछी भांतिसो चलेगो । तब वा ब्राह्मणनें विनती करी जो महाराज मो तें कछू नहीं बनेहे । तातें जेसे आप कहो तेसें करो । तब आपनें छोटीसी जगे बनवाई दई, तामें आपकी आज्ञा प्रमाँण श्रीमाधवरायजीकों पधराए, ओर धोती ऊपरणा धराए । पागको श्रृंगार कीयो, तब वा ब्राह्मणसों आपनें कही जो तुम याही रीतसों नित्य सेवा करियो ओर जो मिले ताको भोग धरियो। पाछें श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें अपनी बैठकमें पधारे । कदंबकुंड में स्नान करि सप्ताहको आरंभ कीए। तहां श्रीठाकुरजी नित्य श्रवण करिवेको पधारते, तहां महा अलौकिक आनंद भयो एसो माहात्म्य देखिके अनेक जीव आपके शरण आए । पाछें तहांसों आप श्रीमाधवरायजीकी आज्ञा लेकें विजय कीए सो गुप्त प्रयागक्षेत्रमें पधारे। इति श्री माधवपुरकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६७ मी ♣ श्रीगुप्तप्रयाग की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक माधवसरस्वतीपेंहे । तहां आप स्नान कीए पाछें श्रीमाधवरायजीके दर्शन करि आप

मूलद्वारिकाको पधारे। तहांतें गुप्तप्रयाग पधारे तहां प्रयागकुंडके ऊपर छोंकरके नीचे बिराजे । तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए जो सारस्वतकल्पमें मुख्य प्रयाग राज तींर्थ एही हते । यहां श्रीगंगा यमुना कुंडहें । पाछें आप प्रयागराजमें स्नान करि अपनी बैठकमें पधारे । दूसरे दिन सबेरे आपनें श्रीभागवत की पारायणको आरंभ कीयो । तब एक ब्राह्मण आयो वाने आयके साष्टांग दंडवत् करी ओर विनती करी जो महाराज में बहुत दिननसों आपको भजन स्मरण करत हतो, सो सब दिननको फल आजि सिद्धि भयोहे । तब आप आज्ञा कीए जो तूं पहलें कहां रेहेत हतो, ओर यहां कबको आयोहे । तब वा ब्राह्मण ने विनती करी जो महाराज में पहलें पंढरपुरमें रेहेत हतो, तब मेंनें अपनें मनमें यह बिचार्यो जो सब शास्त्रनमें मुख्य श्रीमद्‌भागवतहे, सो श्रीमद्‌भागवतको में नित्य पाठ करतो । तब श्रीविठ्ठलनाथजी प्रसन्न भये ओर आज्ञा कीए जो तूं वर मांगि । तब मेनें यह वर मांग्यो जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन होय । तब आप आज्ञा कीए जो तेंनें एसो वर मांग्योहे जो काहुतें दियो न जाय । परंतु मेरो वरदान खाली न जायगो । तातें प्रभासक्षेत्रके पास गुप्तप्रयागहे तहां तूं जायके बेठ । थोरेसे दिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होयगो, तिनको नांम श्रीवल्लभाचार्यजी जगत में प्रसिद्ध होयगो । वे पृथ्वीपरिक्रमाके मिस तें सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगे । तब तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगे । तब मेनें विनती करी जो महाराज में केसें जांनुगो । तब आप श्रीविठ्ठलनाथजी आज्ञा कीए जो जादिन श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेंगे तादिन हम तोकों जतावेंगे । सो में वाही दिनसों आपको भजन स्मरण करतहों ।

सो आज मोकों श्रीविठ्ठलनाथजीनें जताए जो तूं जाके लीयें भजन स्मरण करत हे सोई श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारेहें, तेरो सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे । तातें महाराज अब में यहां आयोहूं । सो मेरी यह विनती हे जो आप मेरो उद्धार कीजे । तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए जो अब तूं प्रयाग कुंड में स्नान करि आव । तब वह ब्राह्मण स्नान करि आयो तब श्री आचार्यजी आप वाकों नांम सुनाए ओर आज्ञा कीए जो आजतें आठमें दिन तेरो काल होयगो, तब श्रीगिरिराजकी तरहटी में तेरो जन्म होयगो । तहां गोपीनाथदास ग्वाल तेरो नांम होईगो । तब श्रीगुसांईजी तेरो अंगीकार करिकें श्रीनाथजीकी गायनकी सेवामें राखेंगे । तब तोकों श्रीनाथजी आप सबलीलाको अनुभव करावेंगे । एसी आप श्रीआचार्यजी आज्ञा किये, तब वा ब्राह्मणनें साष्टांग दंडवत् करिकें कह्यो जो ("निजेच्छातःकरिष्यति") पाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए, तब महाअलौकिक आनंद भयो । तब वह ब्राह्मण दंडवत् करिके अपनें आश्रमकों गयो । ता पाछें वाको काल भयो पाछें श्रीआचार्यजी अपनें चरणारविंदकी रजद्वारा तहां अनेक तामसीजीवनको अंगीकार कीए। फेरि आप गुप्त प्रयागसों विजय कीए सो गुजरात में तगडीमें पधारे। इतिश्रीगुप्त प्रयागकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ६८ मी ♣ श्रीतगडीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक तगडीमेंहे । तहां एक ब्राह्मण गृहस्थ हतो ताके घरके आगें एक चोतरा बहुत सुंदर हतो तापें आप बिराजे, ओर रात्रकों वहांहीं पोढें । तब वा ब्राह्मणकें

दस पांच गाय तथा दस पांच भेंसि हती तातें वाकें पांचशेर मांखन नित्य होतो। तब शीतकालके दिन हते सो सवारेंई ऊठिकें वा ब्राह्मणकी स्त्री मंथनकरिकें कूवापें जलभरनकों गई सो कूवा दूरि हतो तातें विनकों आवत विलंब भयो। तब वा ब्राह्मण के लरिका दोय हते, एकतो वर्ष पांचको ओर एक वर्ष सातको हतो। वे दोऊ लरिका जागे सो वे जायकें मथनियांमेंतें मांखन खायवे लगे सो देखिकें वा ब्राह्मणकों प्रेम उत्पन्न भयो। तब वा ब्राह्मण नें बाहिर आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज आप भीतर पधारिकें देखिये जो श्रीकृष्णचंद्र ओर बलदाऊ मांखन खातहें। तब श्रीआचार्यजी आप पधारिकें देखें तो वे दोऊ लरिका मांखन खायरहेहे। तब आप आज्ञा कीए जो तुमकों भगवद्लीला स्फुर्ति भईहे, तातें तुम स्त्रीके सांमे जाऊ काहेतें जो स्त्रीको स्वभाव लोभी होतहे, तातें रंचक मांखन के लिए बालकनकों मारेगी, सो ठीक नाहीं। ओर तुमकों श्रीकृष्ण बलदाऊको स्नेह प्रगट भयोहे, तातें अब तुम जायकें स्त्रीकों समुझावो, जो वह इन बालकनकों कंठसों लगाय प्यार करीकें कहे, जो बलिजाऊँ श्रीकृष्ण बलिरांम जो तुमनें भली करी जो मांखन खायो। तब वह ब्राह्मण स्त्रीके सामनें गयो वानें स्त्रीकों समुझायकें सब वृत्तांत कह्यो ओर यह कही जो अपनें द्वार महापुरुष पधारेहें उनकी कृपातें यह भाग्योदय भयोहे। तब वा स्त्रीनें कह्यो जो ठीकहे में प्यारकरिकें वेसेंई करुंगी। तब वह स्त्री आई सो वाने जल एक आडी धरि उन स्त्रीपुरुषने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् करी। पाछें वा स्त्रीनें घरके भीतर जायकें ऊन बालकनकों कंठसों

लगायकें कह्यो । जो बलिजाऊं लाल, तुमनें भली करी जो मांखन खायो । ता समय उन स्त्री पुरुषनको तथा श्रीआचार्यजी के सब सेवकनकों अलौकिक लीलाको दर्शन भयो । पाछें वा ब्राह्मणनें विनती करी जो महाराज कृपा करिके हमकों शरण लीजिये । तब श्री आचार्यजी आप कृपा करि कें उन स्त्री पुरुषनकों तथा उन दोऊ बेटानकों नांम सुनाए ओर निवेदन करवाए । पाछें आप तहां सप्ताह की ये तब अनिर्वचनीय सुख भयो । ता पाछें उन चार्योन कों लीला में प्राप्त कराये । तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज थोरेही दिनमें आपनें आज्ञा दीनीं । तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो वे जीव लीलासंबंधी हते सो लीलामें प्राप्त भए । पाछें श्रीआचार्यजी त्रगडीतें विजय कीए सो गुजरातमें नरोडामें पधारे । इति श्रीत्रगडीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

बैठक ६९ मी श्रीनरोडाकी बैठक को चरित्र

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक नरोडामें गोपालदासके घरमें आप बिराजे तहांहे । तहां आपने गोपालदासकों साक्षात् स्वरूपानंदको अनुभव करवाए । पाछें आप नाम देवेकी वाकों आज्ञा दीए । तब गोपालदासनें विनती करी जो महाराज अब कृपा करिकें मोकों एक भगवद्स्वरूप पधराय दीजीये । तब आप [1]श्रीठाकुरजीको स्वरूप पधराय दीए । विन गोपालदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बधाई तथा चोखडा बहुत कीएहें । वे गोपालदासजी आनंद में मग्न रहते, पाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए तब अनिर्वचनीय सुख

---

[1] आ श्रीठाकोरजी ते श्रीराजनगर - अमदावादमां बिराजता श्रीश्यामलालजी छे । जुओ "तीर्थयात्रानो हेवाल"

भयो । तापाछें आप नरोडासों विजय किए सो गोधरा पधारे । इति श्रीनरोडाकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७० मी ♣ [२]श्रीगोधराकी बैठक को चरित्र प्रारंभ. ♣

अब गोधरामें राणाव्यासके घरमें आप बिराजे हते । विनराणाव्यासको छेओ शास्त्रनको ज्ञान हतो वे बडे पंडित हते । दक्षिणमें तथा काशीमें सब पंडितनकों जीते हते, तातें विनके मनमें बहुत गर्वभयो जो मेरे समांन कोऊ पंडित नहींहे । तब फेरिविननें काशीमें सभा करी तब राणा व्यास हारिगए । तब मनमें बडो ताप क्लेश भयो जो अब में मुख कहा दिखाऊँ तातें श्रीगंगाजीमें डूबि मरूँ यह निश्चय करिकें श्रीगंगाजीके तट ऊपर जाय बेठ्यो । ता समय श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासमेंघनकों साथ ले संध्यावंदन करिवे श्रीगंगातटपें पधारे हते तहां राणा व्यास बेठे हते, तब भगवद् इच्छासों कृष्णदासनें श्रीमहाप्रभुनसों विनती करी जो महाराज जो प्राणी आपघात करिकें श्रीगंगाजी में डूबिकें मरतहे ताकों कहा फल सिद्धि होतहे । तब आप कहें जो आत्महत्यावारेकों तो श्रीगंगाजीहू मुक्त न करें । वोतो सात जन्म तांइ वेसेइ कियो करे, फेरि नरक प्राप्ति होय ओर ताको यहलोक परलोक दोऊ बिगरें ओर उद्धार कबहुँ न होय । यह सब बात राणाव्यासनें सुनी, तब राणाव्यासनें आयकें श्रीआचार्यजीको साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज आप तो साक्षात् ईश्वरहो । आपनें यह आज्ञा तो केवल मेरे अर्थ करीहे, नहीं तो में अबही गगाजी में डूबिकें मरत हतो । तब आप

---

[२] आ बैठक हाल गुप्त छे.

कहें जो एसो तोपें कहा संकट हतो । तब राणाव्यासनें विनती करी जो महाराज में दक्षण में तथा पूरब में सब पंडितनकों जीत्योहूँ । अब मेंनें काशीमें सभा करी तब में हारिगयोहूँ । तातें मेंनें अपनें मन में यह विचार कियो जो अब श्रीगंगाजीमें डूबि मरनों । तब श्रीआचार्यजी कहें जो यहतो तेरो बडो अज्ञानहे । मरेंतें कहा होय । जीवेगो तो फेरि जीतेगो । पाछें आप कहें जो अब तूं श्रीगंगाजीमें स्नान करि आऊ, तब वह श्रीगंगाजीमें स्नान करि आयो, तब श्रीआचार्यजी आप वाकूँ नाँम सुनाए । पाछें आपनें चतुःश्लोकी ग्रन्थ पढायो ओर आज्ञा कीए जो अब तूं सबेरेमें जाईकें सभा करियो । तूं जीतेगो । तब प्रातःकालही वह राणाव्यास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दंडवत् करिकें सभामें गयो । तहां जायकें बेठ्यो । तब वहांके पंडितननें कही जो काल्हितो हारिगयो हतो, ओर आज फेरि क्यों आय बेठ्योहे । तब वानें कही जो कालि हारिगयो तो कहा भयो, आज फिर वाद करूँगों । पाछें समग्रसभा भेली भई, तब वादारंभ करिकें क्षणमात्रमें राणाव्यासनें सब पंडितनको निरुत्तर करिदीए । तातें वो अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो ओर जाँनी जो यह सब प्रताप श्रीआचार्यजीकोहे । तब वा राणाव्यासनें श्रीमहाप्रभुनकेपास आयकें साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज आपकी कृपातें मेनें सब पंडितनकूं निरुत्तर कीए । तब आप कहें जो तूं गंगाजी में डुबतो तो सभा कोंन जीततो । तूं जीयो तो जीत्यो । पाछें राणाव्यासनें श्री आचार्यजीसों विनती करी जो महाराज मोकुँ आप श्रीभगवद्स्वरूप पधराय दीजिये । तब आपनें

श्रीबालकृष्णजीको स्वरूप पधराय दीए तिनकी राणाव्यास गोधरामें सेवा करते । जब श्रीआचार्यजी आप गोधरा पधारते तब राणाव्यासके घर बिराजते। तहां रजपुतानीको आपनें अंगीकार कीयो । ओर श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजी को प्रसंग राणाव्यासनें पूछ्यो तब श्रीआचार्यजी आप व्याख्यान कीए सो व्याख्यान करत करत तीनदिन ओर तीनरात्रि व्यतीत भई, एसो रसावेश भयो काहूकों देहानुसंधान न रह्यो । पाछें आपनें सब को सावधान कीए ओर सप्ताह कीए तब महा अलौकिक आनंद भयो। पाछें श्री आचार्यजी आप गोधरासों विजयकीए सो खेरालू पधारे । इतिश्रीगोधराकी बैठक को चरित्रम समाप्त ॥

♣ बैठक ७१ मी ♣ श्रीखेरालूकी बैठक को चरित्र. ♣

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक खेरालू में जगन्नाथजोशीके घरमेंहे । वे जगन्नाथजोशी की माताके ऊपर आप बहुत प्रसन्न रहते । तातें वाके घरमेंही बिराजते । आप तहां पाक करिकें भोगधरि परमप्रीतिसों आरोगते । ओर आप कथा कहते ता कथा में रसावेश बहुत होतो ता समें जगन्नाथजोशीनें एक श्लोक युगलगीत को पूछ्यो ताको व्याख्यान करत आपको तीन प्रहर व्यतीत भये, सो वचनांमृतकी अद्भुत वर्षाकीनी, ताते काहु सेवकनको देहानुसंधान न रह्यो। पाछें श्रीआचार्यजी आपनें सबनको सावधान कीए । पाछें तहां आप सप्ताह कीए तबतो तहां महा अलौकिक आनंद भयो । पाछें श्रीआचार्यजी आप खेरालूसों विजयकीए सो सिद्धपुरपट्टन पधारे ॥ इति खेरालूकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७२ मी ♣ श्रीसिद्धपुरपट्टनकी बैठक को चरित्र ♣

एक समय श्री आचार्यजीमहाप्रभु खेरालूतें सिद्धपुर पधारे तहां बिंदुसरोवरपें जायकें बिराजे। तहां आप दामोदरदाससों आज्ञाकीए जो यह श्रीकर्दमऋषिको आश्रमहे। यहां श्रीकपिलदेवजीनें देवहुतीजीको सांख्ययोग को उपदेश दीयोहे तब श्रीदेवहुतीजी जलरूप होयके बिंदुसरोवरमें प्रवेश कीए एसें कहिकें पाछें श्रीआचार्यजी बिंदुसरोवर में स्नान कीए। तहां नित्यनेम कीए। पाछें वा स्थल पें आपने सप्ताह करी। तब अनिर्वचनीय सुख भयो। तब मायावादीननें सुनी जो यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेहें सो विननें पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, इन चार्योदिशानमें दिग्विजय करिके मायामत को खंडन करि भक्तिमार्ग को स्थापना कीए हे। सो साक्षात् ईश्वर को अवतार सुनेहें। ईश्वर बिनु ईतनों कार्य न होय, तातें आपुन सब मिलिकें चलो चर्चा करेंगे, ओर जो कदाचित् आपन हारिजांयगे तो विनकी शरण जांयगे। पाछें दसपांच पंडित मिलिकें श्री आचार्यजीके दर्शनको आए। नमस्कार करिके सन्मुख बेठे। तब चर्चा भई सो क्षणमें आपनें सब मायावादीन को निरुत्तर करिके ब्रह्मवाद को स्थापन कीए। तब सिद्धपुर में जेजेकार भयो। एसो माहात्म्य देखिके अनेकजीव आपकी शरण आए। पाछें आप तहांते विजय किए सो अवंतिकापुरी पधारे। इति श्रीसिद्धपुरपट्टन की बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७३ मी ♣ श्रीअवंतिकापुरीकी बैठक को चरित्र ♣

एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अवंतिकापुरी उज्जैन

पधारे, तहां गोमतीकुंडकेऊपर पीपरके वृक्ष के नीचें बिराजे। पाछें क्षिप्रानदी में स्नान करि गोमतीकुंडकेऊपर पधारे, तब आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए जो दमला यह अवंतिकापुरी हे, सो श्रीमहादेवजीकी साढेतीन पुरीनमेंकी पुरीहे। यहां के मालिक श्रीमहांकालेश्वरजीहे, तातें यहां मायामतकों खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन होयगो, ओर दैवीजीव ही बहुतहे तिनको उद्धार होयगो। यहां पहलें सप्ताह होयगी, परन्तु यहां कछू छाया नांहीहे। तब दामोदरदासजी कहे जो महाराज आपकी इच्छातें अनेक वृक्ष होतहें सो एक वृक्ष करनों यामें कहा बडी बातहे। तब ईतनेहीमें एक पीपरको पतौआ उडतो चल्यो आयो सो ता पतौआको श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप रेतीमें गाडे ओर वाके ऊपर संध्याको जल छिरकिकें कह्यो जो काह्लि सवारें हम सप्ताह को प्रारंभ करेंगे तहातांई तूं बडो वृक्ष होयजैयो। पाछें श्रीआचार्यजी आप बगीचीमें पधारे तहां पाक करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पे। पाछें रात्रिकूं कथा भई पाछें पोढे सवारें में ब्रह्ममुहुर्त होतही श्रीआचार्यजी आप स्नानकीए, तब देखें तो वा पीपर के पतौआमेंतें बडोपीपरकोवृक्ष होयगयोहें। ओर वाको फेलाव बडेबीचमें होयगयोहे सो देखिकें वा वृक्षके नीचें श्रीआचार्यजी बिराजे। तहां श्रीभागवतको पारायण कीए पाछें जो कोई गोमतीजीमें स्नान करनकों आवतों सो वा नूतनवृक्षकों देखिके अपनें मनमें बडो आश्चर्य करतो जो यहां गोमतीकुंडपें अबतांई तो कोई वृक्ष न हतो ओर यह एकरात्रिमेंही इतनों बडो वृक्ष भयो जो सेंकडानवर्षको वृक्षहोय ताहूको एसोफेलाव नाहीं होय जेसो याको हे। तातें यहतो कछु कारण हे

या प्रकारसों आपसमें सब जन बतराँनलगे, ओर कही जो यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेहें, एसें सुनिवेमें आइहे सो उननें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, दिशानमें दिग्विजय करी मायामतको खंडन करि ब्रह्मवाद को स्थापन कियोहे ओर एसीहु सुनीहे जो वे अग्निकुंडमें सों भगवदवतार प्रगट भएहें देखो एकरात्रिमें ईतनोबडो वृक्ष भयोहे सो यह उनहीनें कियो होयगो एसो प्रगट ईश्वर को प्रताप देखिकें वहांके मायावादी सब अपनें मनमें भय पाए। तब वे बिचारें जो उनसों चर्चा करिवेकों अपनों सामर्थ्य नाहीं हे, जो उनके तेजके आगे आपनसों बोल्यो न जायगो। कारण जो विनकुं भस्म करते कहा वार लागे, तातें अपनें प्राणनकी रक्षा चाहो तो या गामतें भाजि चलो। तब सब पंडित अवंतिका छोडिकें आसपासके गाँमनमें भाजिगए। तहां श्रीमहादेवजीके दोय कृपापात्र पंडित रहे। उनकों श्रीमहादेवजी साक्षात् दर्शन देते तब वे खांन पांन करते। तहां श्रीआचार्यजी सप्ताह कीए सो श्रीमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेको आवते। जब आप कथा कहिचूकते तब श्रीमहादेवजी अपनें स्थानकों पधारते। सो एकदिन उन सेवकनकों दर्शन न भयो तब वे बेठेरहे। जब श्रीमहादेवजी पधारे तब उनकों दर्शन भयो तब उन सेवकननें विनती करी जो महाराज अबतांई दर्शन न भयो ताको कारण कहाहे। तब श्रीमहादेवजी कहें जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहां पधारे हें सो वे कथा कहतहें सो में सुनिवे गयो हतो तहांतें अबहीं कथा सुनिकें आयोहूं। तब उन पंडितननें कही जो महाराज श्रीमहाप्रभुजीके मारें सब पंडित गाम छोडिकें भाजिगएहें। हमनें एसें सुनिहे जो उननें मायामत खंडन

करिकें भक्तिमार्ग को स्थापन कियोहे, ओर आपतो तहाँ नित्य कथा सुनिवेकों जातहो तब श्रीमहादेवजी आज्ञा कीए जो हमकों पहले भगवद्आज्ञा भई हती जो मायामत प्रगट करो ओर अब आपकी इच्छा एसीहे जो मायामत खंडन करि भक्तिमार्ग को स्थापन करनों तासों श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् ईश्वरको अवतार भयोहे । उनकी इच्छामें आवे सो करें । पाछें उन दोऊ भक्तनसों श्रीमहादेवजीनें कही जो में तो प्रातःकालही कथा सुनिवेकों जातहों, तातें तुमको आवनों होयतो वेगेही आइयो, नांतर में जब कथा सुनिके आउंगो तब दर्शन होयगो । जबतांई सप्ताह पूर्ण होयगी तबतांई में नित्य कथा सुनूँगों, या प्रकार श्री महादेवजी नित्य कथा सुनते जब कथा संपूर्ण भई तब श्रीमहादेवजी नमस्कार कीए। तब श्रीआचार्यजीनें श्रीमहादेवजीसों विनती कीए जो महाराज अवंतिकापुरीके मालिक तो आपहो ओर मायावादीतो यहांतें सब भाजिगएहें, विनमेंतें तो कोऊ दीसत नाहींहें । ओर हमकों तो मायामत को खंडन करिकें ब्रह्मवाद को स्थापन करनों हे तातें आपही चर्चा करो। नांतर आपके मायावादीनकों बुलावो । तब श्रीमहादेवजी कहें जो आप तो षड्गुणसंपन्न हो । आपनें पहलेंही ईश्वरता दिखाई जो एकरात्रिमें इतनों बडो पीपरको वृक्ष कियो सो देखिकें यह भय पायके सब भाजि गएहें । जीवकी कहा सामर्थ्यहे जो ईश्वर के सांमें आवें । तब श्रीआचार्यजी कहें जो हम सब शास्त्रनतें जीतेंगे। तब श्रीमहादेवजी अपनें स्थानकों पधारे पाछें सब मायावादी पंडितनकों श्रीमहादेवजीनें स्वप्नमें जताई जो तुम सब क्यों भाजिगएहों । में तो तुमारी पक्षपें हूँ तुम निर्भय होयकें आवों ओर

श्रीआचार्यजीसों चर्चा करों। पाछें सब मायावादी अवंतिकामें आए। सब मिलिकें एकमतो कीए, जो अपनी रक्षा तो श्रीमहांकालेश्वरजी करेंगे। तब सबमिलि श्रीआचार्यजीके पास आए तब श्रीआचार्यजी सबनको बेठारें ओर श्रीमहादेवजीहु गुप्त पधारे सो हु आसनपें बिराजे। तब श्रीआचार्यजीनें सबन तें आज्ञा करी तो तुम सबन सों तो चर्चा न होयगी तातें तुम सबनमें तें जो षट्शास्त्रके वक्ता होय सो एक एक जन चर्चा करो। तब सबन नें मिलिकें एक संग प्रश्न कीए सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप मुसिकायकें बहु मुखकरि उत्तर दीए, सो एकही वचनमें सब पंडित कों निरुत्तर करिदीए। तब तो अवंतिकापुरीमें जेजेकार भयो। ओर श्रीमहादेवजीहु बडे प्रसन्न भए। याप्रकार श्रीआचार्यजी आप अवंतिकापुरीमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए। तब सब पंडितननें मिलिकें श्रीआचार्यजीकों दोनों हाथ जोरिकें विनती करी जो महाराज हमकों शरण लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें जो तुम रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगोमतीकुंड में स्नान करि आवों तब सब पंडित रूद्राक्ष उतारिकें श्रीगोमतीकुंड में स्नान करि आये। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सबनकों नांम सुनाए ओर तुलसीकी माला देकें वैष्णव करे। जब विन पंडितननें रुद्राक्ष उतारीही तब वाकों बडो ढेर भयो हो। पाछें सब पंडितननें मिलिकें श्रीआचार्यजीसों विनतीकरी जो महाराज जाकों वेद शास्त्र निरूपण करतहे सोई साक्षात् श्रीकृष्णचंद्र के अवतार कों हमकों आज दर्शन भयो। पाछें अनेक जीव श्रीआचार्यजीकी शरण

आए पाछें दंडवत् करि सब पंडित अपने घर को गए। पाछें श्रीमहादेवजीनें श्रीआचार्यजी सों कही जो महाराज पहलें आप यह आज्ञा करत हते जो हम शास्त्ररीतिसों पंडितनकों जीतेगें ओर पाछें तो आपने ईश्वरता दिखाई ताको कारण कहा। तब श्रीमहाप्रभुजी कहें जो महाराज एक प्राचीन बातहे सो आप सुनिये। जब श्रीरामानुजाचार्यजी दिग्विजय करिकें काशीमें पधारे तब श्रीशंकराचार्यजीसों चर्चा भई, सो श्रीशंकराचार्यजी तो आपको अवतारहे। आपको तो पांच मुख को अधिकार हे, तातें श्रीशंकराचार्यजीने पांचमुख करिकें प्रश्न कीए। तब श्रीरामानुजाचार्यजीहु श्रीशेषजीको अवतारहे, विनकों सहस्त्रमुखको अधिकारहे, तातें विननें सहस्त्रमुखसों श्रीशंकराचार्यजीकों निरुत्तर किये, तेसें अबही जो वे एकएकजनों प्रश्न करतो तो एकएकको उत्तरदेते। परंतु एकसंग विननेन्यारे न्यारेविषयनकेप्रश्न कीये, तब आपतो पास बिराजेहीहते, सो आपने विनकों क्यों नहीं समुझाए। तातें हमने तितनें मुखसों एकसंग सबनको निरूत्तर कीए। ओर फेरिहु आज्ञा करतहो जो आपनें ईश्वरता दिखाई। तब एसे वचन सुनिकें श्रीमहादेवजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीआचार्यजीकों मिलिकें अपने स्थानकों पधारे। यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी शरण आये। तब अवंतिकापुरी में जेजेकार भयो

१. आ पीपळानुं वृक्ष थोडां वर्ष उपर सुकाई गयुं हतुं तेथी गामना वैष्णवोए मळीने एक वैष्णव पंडित ब्राह्मण ने बोलावी फरी थी सप्ताह करावी त्यारे ते शुष्कवृक्षनां थडमाथी तृण फणगा पुटियाने थोडा दिवसमां तो मोटो घटाटोप जेवो जबरजस्त पिपळो थई गयो। जुओ "तीर्थ यात्रानो हेवाल" वळी अहीआं गाममां श्रीनाथजीनुं मदिर छे। आ स्वरूप इन्द्रदमननुं छे। जो "श्रीनाथजीनों इतिहास" श्रीमहाप्रभुजीनी बैठकोनु वधु विस्तारवाळुं वर्णन वांचवा माटे तीर्थ यात्रानो हेवाल ऐ पुस्तक ने दरेक बैठक चरित्र वांचती वखते साथे राखिने वांचवा भलामण छे।

ओर वह[१] पीपरकोवृक्ष जो रोपण कीयोहे सो अद्यापि हु दर्शन देतहे। या प्रकारको चरित्र करि आप श्रीपुष्करजी पधारे। इति श्रीअवंतीकापुरीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७४ मी ♣ श्रीपुष्करजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक पुष्करजीमें वल्लभघाटके ऊपर छोंकरके नीचेंहे। तहां कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीए जो पुष्करजीहें सो सबतीर्थनके पितारूप हें एसो पुराणनमें वर्णन कियोहे “माता गंगासमंतीर्थं पिता पुष्करमेव च” श्रीब्रह्माजीकी उत्पत्ति नाभी कमलसों भइहे सो यहांही भइहे। ओर यहां श्रीब्रह्माजी ओर सावित्रीजीको मंदिरहे। तातें यहां कछुकदिन बिराजेंगे। तब पुष्करजी ब्राह्मणको स्वरूप धरिकें आपकें पास आये, विननें विनती करी महाराज आप दैवीजीवनके उद्धारार्थ मायामत खंडन करि ब्रह्मवाद स्थापनार्थ पृथ्वितलपें प्रकट भएहो तातें आप पधारिकें मोकों सनाथ करिये। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आज्ञा कीए जो आपतो तीर्थराजहोयकें क्यों घबरातहो, तब पुष्करजीनें कही जो महाराज कलिकालकरकें सर्वतीर्थ सामर्थ्यहीन भएहें, सो आपके संबंधतें सबतीर्थ सामर्थ्यवान होंईगें। पाछें पुष्करजी आज्ञालेकें अपने स्थानकों पधारे। पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सबसेवकन सहित पुष्करजीमें स्नान करिकें आनंदकों प्राप्त भए। पाछें श्रीआचार्यजी आप तहां सप्ताह कीए तब अनिर्वचनीय सुख भयो। वहां पुष्करजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते। तहां श्रीआचार्यजी आप अनेक तामसीजीवनकों उद्धार कीए। पाछें आप पुष्करजीसों बिदाहोयकें कुरुक्षेत्र पधारे। इति श्री पुष्करजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७५ मी ♣ श्रीकुरुक्षेत्रकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक कुरुक्षेत्र में कुंडके ऊपरहे, तहां आप बिराजके कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो यह क्षेत्र हे सो बडो धर्मक्षेत्र हे। यहां कौरवपांडवन को महाभारत युद्ध भयोहे। श्री भगवाननें श्रीमद्‌भगवद्‌गीता अर्जुनकुं सुनायके विराट स्वरूपको दर्शन यहांही दियो हतो तातें यहां सप्ताह करेंगे। पाछें श्रीआचार्यजी आप तहां श्रीभागवतको पारायण कीए तब महा अलौकिक आनंद भयो। वादिनाँ कथामें युगलगीतको प्रसंग चल्यो, ता समय एसो रसावेश भयो जो काहु सेवकनकों देहानुसंधान रह्यो नांहीं। तब श्रीआचार्यजी आपनें सबसेवक को सावधान कीए ओर वहांहु आपनें चरणारविंदकी रजद्वारा अनेकदैवीजीवन को उद्धार कीए। पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहांतें विजय कीए सो हरिद्वार पधारे। इति श्रीकुरुक्षेत्रकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७६ मी ♣ श्रीहरिद्वारकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक हरिद्वारमें कनखलक्षेत्रके ऊपरहे। तहां आप संवत् १५७६ के सालमें पधारे। तब कुंभके बृहस्पति हते तातें तहां लक्षावधि मनुष्य गंगास्नान करिवेकों आए हते सो चारिघडी पीछलीरात्रिको स्नानकों पर्वकाल हतो। तब श्रीआचार्यजी आप अपने मनमें विचारें जो भीडतो बहुत भइहे जो लक्षावधि मनुष्य स्नानकों आएहे तातें यहां कछु अलौकिक चरित्र दिखावें तो प्रसिद्धी बहुत होयजाय। परंतु गुप्त कार्यकरनों। तहां योगमाया ओर काल

दोउ आय प्राप्त भये ओर कहें जो महाराज कहा आज्ञाहे । तब आप योगमायाको आज्ञा कीये जो तुम सबनको निद्रावश करी लेउ, ओर कालकों आज्ञा कीए जो ब्रह्ममुहुर्तको स्नानको पर्वकालहे सो जहांतांई हम स्नान करिकें कनखलतीर्थके ऊपर जायकें बिराजें ओर सब प्रजा स्नान कर चुके तहांतांई पुण्यकाल रहे । क्यों जो ये श्रद्धा करिकें दूरदूरतें सब जन आएहें । तातें इनकों स्नान में अवार होय तोहू अश्रद्धा न उपजे । जो अश्रद्धा होइगी तो तीर्थको फल न होयगो । तातें हम स्नान करिकें गये पाछें ओर सब स्नान करें । तहां तांई पर्वकाल स्थिररहे । एसें आप करो । तब योगमाया ओर काल तथास्तु कहकें गये । पाछें आप तहांतें ऊठिके हरिकीपोरीनपें पधारे तब दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेघन, वासुदेवदासछकडा, माधवभट्टकाश्मीरी, गोविंददुबेसांचोरा ब्राह्मण, सबसमाज संग हतो तिन सहित आप तहां स्नान कीए । पाछें संध्या करि एक मुहुर्तलों पंचाक्षरको जप कीए । ता समय संपूर्ण सृष्टि निद्रावश देखी पाछें आप कनखलक्षेत्रपें अपनी बैठक में पधारे । तब योगमायाको आज्ञा कीए जो अब सबनकी निद्रा खोलिदेउ । तब योगमायानें सबनकी निद्रा खोलिदई।तब सब जागे जो देखें तो स्नानको समय भयोहे । तब सब पुण्यकालमें स्नान कीए । तापाछें पर्वकालको तिरोधान भयो तब हरिद्वारमें जेजेकार भयो । यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजीकी शरण आए । पाछें आप तहांसों विजय कीए सो बद्रिकाश्रम पधारे । इति श्रीहरिद्वारकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७७ मी ♣ श्रीबद्रिकाश्रमकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक बद्रिकाश्रममेंहे तहां आप बिराजे। तादिन वामनद्वादशी हती। तातें कृष्णदासमेघनसों आज्ञाकीए जो इहांसों फलाहार खोजिके लावो। तब श्रीबद्रिनाथजी बिचारे जो मेरे आश्रममें श्रीवल्लभाचार्यजी पाहुने पधारेहें तातें भोजन करें तो आछो। तब कृष्णदासमेघनसों श्रीबद्रिनाथजीनें ब्राह्मणभेषसों कही जो तुम कहां जातहो, तब कृष्णदासनें कही जो महाराज में फलाहार लेंवेको जातहों, तब श्रीबद्रिनारायणजीनें कही जो बोहोत आछी बातहे, जासुं स्वामी सुखपावें सोई सेवकको कर्त्तव्यहे। परंतु फलाहार तो या झाडी में कछु मिलत नाहीं। तब कृष्णदासनें आयकें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराजाधिराज फलाहार तो यहां कछु मिलत नाहींहे। तब श्रीबद्रिनाथजीहु श्रीआचार्यजीसुं मिलिवे पधारे। विननें हु कही जो मेंनेंहु आपके लिए फलाहार बहुत खोज्यो, परंतु कहुं मिलत नाहीं। तातें अब आप रसोई करिकें भोजन कीजे। तब श्रीआचार्यजी आप विनती कीए जो जयन्तीके दिन अन्नको भोजन केसें बने। तब श्रीबद्रिनाथजी कहें जो “उत्सवान्ते च पारणम्” तब श्रीआचार्यजी आपनें मनमें बिचारी जो अब भगवद्आज्ञा एसीही भइहे, तातें श्रीवामनजीको जन्म भये पाछें आप भोगसमरपि भोगसराय भोजन कीए। पाछें सेवकननेंहु महाप्रसाद लिए पाछें तहां आप सप्ताह कीए तब महा अलौकिक आनंद भयो। पाछें श्रीबद्रिनाथजी आज्ञाकीए जो यहां जितनें दैवीजीव होई तिन सबनको अंगीकार करिये। तब आप मुसिकायकें कहें जो

आपकी इच्छा होयगी सोई करेंगे । तब श्री आचार्यजीनें अपनें चरणारविंद की रजद्वारा अनेक तामसीजीवनको अंगीकार कीए । पाछें आप श्रीबद्रिनाथजीकी आज्ञा लेकें तहांसों विजय कीए । इति श्रीबद्रिकाश्रमकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७८ मी ♣ श्रीकेदारनाथकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक केदारनाथमें केदारकुंडके ऊपरहे तहां आप बिराजे । तहां श्रीभागवतको पारायण कीए सो सुनिवेकों श्रीकेदारनाथजी पधारते । सो श्रीमहाप्रभुनके निकट आए बिराजते । जहांतांई कथा होती तहांतांई बेठे रहते पाछें नमस्कार करिके अपनें स्थानकों पधारते । तब एकदिन कृष्णदासमेघननें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराज यह योगेश्वर नित्य कथा सुनिवे आवतहे सो कौंनहे सो कृपा करिकें कहिये । तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें आज्ञाकीए जो ये श्रीकेदारनाथजी पधारतेहें सो जहांतांई कथा भई तहांतांई श्रीकेदारनाथजी नित्य सुनिवेकों पधारे । पाछें जब कथा संपूर्ण भई तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनें चरणारविंद की रजकी सुगंध फेलाय एक क्षणमें सहस्त्रावधी जीवन को उद्धार कीए । पाछें आप श्रीकेदारनाथजीसों बिदा होय विजय कीये! सो व्यासाश्रमकों पधारे । इति श्रीकेदारनाथजीकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ७९ मी ♣ श्रीव्यासाश्रमकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक व्यासाश्रममेंहें तहां आप बिराजें । तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो तुम यहां

ठाडेहोय रहियो । में श्रीवेदव्यासजीके दर्शन करिकें आवतहों । यह आज्ञा करिके आप श्रीवेदव्यासजीके आश्रममें पधारे । तब व्यासजी श्रीआचार्यजीकों पधारे जाँनिकें सामनें पधारि आदर किये ओर निकट बेठायकें कही जो आप श्रीभागवतकी श्रीसुबोधिनीजी टीका कीएहो सो मोकों सुनाइये । तब आपने विनती कीए जो महाराज भ्रमरगीतको एक श्लोक कहूँगो । तब आप एक श्लोकको व्याख्यान कीए सो तीन दिन ओर तीन रात्रि व्यतीत होय गए । तब श्रीवेदव्यासजीनें कही जो आप अद्‌भुत वर्षा किये । तब श्रीआचार्यजी आप व्यासजीसों प्रणामपूर्वक बिदा होयकें पाछें पधारे तब आयकें देखें तो कृष्णदास तहांइँ ठाडोहे । ओर सब सेवक मूर्छित परेहें । तब श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासतें कहें, कृष्णदास तूँ बेठ्यो नाहीं तब कृष्णदासनें विनती करी जो महाराज आपकी आज्ञा हती जो तूँ यहाँ ठाडो रहियो, तातें में ठाडोहूँ । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वातें अत्यंत प्रसन्न होयकें कहें जो कृष्णदास तूँ कछूँ मांगि । में तेरेपें प्रसन्नहूँ । तब कृष्णदासनें तीन वस्तु मांगि १ जो महाराज मेरो मुखरता,दोष जाय, २ मार्ग को सिद्धान्त हृदयारूढ होय ओर ३ मेरे पूर्व गुरुके घर पांऊँधारिए । तब आप श्रीआचार्यजीनें दोय वस्तु तो दीए * परंतु गुरुके घर पधारिवेकी नांहीं करी, ताको

---

* कृष्णदासना गुरुने घेर पधारवानी पोते आज्ञा आपी नथी एम आ स्थळे लखे छे, परंतु श्रीगुसांइजीए श्रीवल्लभाष्टक नामनो ग्रन्थ रच्यो छे तेमा "प्रादुर्भुतो भवानित्यनुभवनिगमाद्युक्तमानैरवेत्य" ए श्लोक ऊपर चतुर्थलालजी श्रीगोकुलनाथजीए संस्कृतमां टीका करी छे. तेमां आ प्रसगनुं घणु विस्तारथी वर्णन कंर्यु छे के "त्रय मपिदत्तं" कृष्णदासजी एक वखत पोताना गुरुने घेर गया नमस्कार करी बेठा, एटले तेमना गुरुए पूछ्युं "मां विहाय कथं त्वयान्यो गुरुः कृत" के मने छोडिने ते बीजा गुरु कर्या. कृष्णदास कहे छे "मद्‌गुरुस्तमेव गुरुप्रसादस्य

कारण कृष्णदासकी वार्तामें प्रसिद्ध लिख्यो हे । पाछें आप सब सेवकनको सावधानं कीए ओर तहां आप सप्ताह कीए तब बडो अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें आप हिमाचल पधारे । इति श्रीव्यासाश्रमकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ८० मी ♣ श्रीहिमाचलपर्वतकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक हिमाचलपर्वतके ऊपरहे । तहां आप बिराजे तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए जो यहां सप्ताह करेंगे। पाछें आप कथाको प्रारंभ कीए तब हिमाचलपर्वत ब्राह्मणको स्वरूप धरिकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आयो । आपकों साष्टांग दंडवत् करिकें विनती करी जो महाराज कृपा करिकें मोकुं सनाथ कीए । तातें अब श्रीभागवत सुनाईए । तब आप कृपा करिकें आज्ञा कीए जो सुखेन आयो करो पाछें दूसरे दिन आप सबेरेमें स्नान करि नित्यनेम करि श्रीभागवतको आरंभ कीए। तब हिमाचलपर्वत नित्य कथा सुनिवेकों आवते । जब कथाकी समाप्ति भइ तब श्रीआचार्यजी आप तहां हजारन जीवनको उद्धार किए। पाछें आप तहां सो

भगत्रापकत्वात्त्वत्प्रसादान्मम पुरुषोत्तम प्राप्तिर्जातित्याचार्याः" मारा गुरु तो तमे छो तमारी कृपाथी मने पुरुषोत्तम प्राप्ति थइ. अर्थात् श्रीआचार्यजी गुरु नथी ए तो साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम छे. त्यारे गुरु कहे छे. "ते पुरुषोत्तमा इति त्वदुक्ते कि प्रमाणं?„ श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तम छे तेनुं प्रमाण शु? त्यारे कृष्णदास "ज्वलदग्निम् अंजलिना गृहीत्वेद मुक्तवान 'यदि ते पुरुषोत्तमास्तदामामग्निर्न ज्वालयिष्यति नो चेज्जवालयिष्यती' त्युक्तवा मुहूर्तमात्रं तथा स्थितवान्."

हाथमां अग्नि लेइने कहे छे जो श्रीआचार्यजी पूर्णपुरुषोत्तम होय तो अग्नि मने भस्म न करशो. नहि तो भस्म करजो. एम कही एक मुहूर्त सुधी हाथमां अग्नि राखी त्यारे गुरु कहे "सत्यत्वं ज्ञात्वा" सत्य छे। श्री आचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम छे। श्रीआचार्यजी पोते अग्नि स्वरूप छे। तेथी अग्निद्वारा पोते कृष्णदासना गुरुने घेर पधार्या छे. ८४ वैष्णवनी वार्तामां आ वर्णन नथी। एम आ ऊपरथी जणाय छे. माटे वैष्णवोने विनंती के "श्रीवल्लभाष्टकनी संस्कृत टीकाओना आधारे गुजराती टीका मारा तरफथी प्रगट थइ छे ते मगावी वांचवी.

विजय कीए सो व्यासंगगाजीपें पधारे । इति श्रीहिमाचलपर्वतकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

बैठक ८१ मी श्रीव्यासगंगाके तीरकी बैठकको चरित्र

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक व्यासगंगाके तीरपे छोंकरकें नीचेंहे । तहां आप बिराजे । तब दामोदरदाससों आज्ञाकीए जो यह व्यासगंगा बाजेहे । तब दामोदरदासनें विनती करी जो महाराज याको कारण कहाहे । तब आप आज्ञाकीए जो श्रीवेदव्यासजीको जन्मस्थान यहिहे, ओर आपने समाधिभाषा (श्रीमद्भागवत) हू यहाँई कियोहे । तांते हमहु यहां सप्ताह करेंगे । पाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीगंगाजीमें स्नान करिकें श्रीभागवतकी सप्ताहको आरंभ किये तब महाअलौकिक आनंद भयो । ता समय एक स्त्री रत्नजडित आभूषण पेहरिकें एक पंखा हाथमें लेकें नित्य आवे सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको साष्टांग दंडवत् करिकें वामभुजाकी आडी ठाडी रहे ओर पंखाकी सेवा करे । वाको कृष्णदासमेघननें बरजी तब आपनें कृष्णदाससों नाहीं किये । पाछें वा स्त्रीनें सातदिनतांई वाहीरीतिसों पंखाकी सेवा करी । जहांतांई कथा होय तहांतांई वो पंखा करे । पाछें अंतरध्यान होयजाय सो काहूको दिसे नाहीं । एक दिन सब सेवकननें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराज यह अलौकिक स्त्री कोंनहे, जो नित्य पंखाकी सेवा करतहे आप कृपाकरिकें जनावो तो जान्यो जाय । तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकायकें आज्ञकीए जो ये श्रीगंगाजी आवतहें । तब सब सेवकननें दंडवत् करी । पाछें तहां आप सप्ताह की समाप्ति करी

तब कृपा कटाक्षद्वारा हजारन जीवनको अंगीकार कीए । पाछें आप श्रीव्यासगंगासों मुद्राचलमधुमूदनजीकों पधारे । इति श्रीव्यासगंगाकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ८२ मी ♣ श्री मुद्राचलपर्वतकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक मुद्राचलपर्वत के ऊपर छोकरकें नीचेंहे, तहां आप बिराजे । तहां जो श्रीमधुसूदनठाकुरजी बिराजतेहें तिनके दर्शनकों पधारे । पाछें वहां श्रीआचार्यजीनें श्रीभागवतकी पारायणको आरंभ कियो तब श्रीमधुसूदनजी कथा सुनिवेकों पधारे । तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीठाकुरजीकों प्रणाम करि अपनें पास आसनपें पधराए । ओर विनती कीए जो आप परिश्रमकरिकें क्यों पधारेहो । तब श्रीठाकुरजीनें कही जो तुम इतनों परिश्रम करिकें एसी विकट जगेमें यहां तांइ पधारे हो, तातें मोकों कहा अधिक श्रम भयो जो आपके निकट आयो । अब मोकों श्रीमद्‌भागवत सुनाईये । तब श्रीआचार्यजी आप यह विनती कीए जो महाराज बहुत अवकाश तो नहींहे, परंतु सप्ताह तो करेंगे । तब श्रीठाकुरजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारतें, तातें महा अलौकिक आनंद हो तो । पाछें श्रीआचार्यजी आप कथाकी समाप्ति करी ओर चरणारविंदकी रजद्वारा हजारन तामसीजीवनको उद्धार किए । पाछें आप सबसेवकन सहित श्रीमधुसूदनजीके दर्शनकों मंदिर में पधारिके श्रीठाकुरजीको सेवा श्रृंगार किए । पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा ले मुद्राचलसों विजय किए सो व्रजमें पधारे । तब श्रीगोवर्धननाथजी आप

आज्ञा किये जो अब सबकुटुंबसहित यहां आयकें मेरी सेवा करो । अब मेरो प्रागट्य आपके यहां बेगि होयगो । यह आज्ञा पायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप काशी पधारे, तहांतें श्रीअक्काजीकों पधरायकें अडेलमें आय बसे। इति श्रीमुद्राचलपर्वत की बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ८३ मी ♣ श्रीअडेलकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक अडेलमेंहे, तहां आप वास करिकें बिराजें । सो श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा करते तहाँ नित्य मायावादी आवते सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों चर्चा करते । तब आप उनको निरुत्तर करि देते । पाछें आप मनमें बिचारें जो माताइलंमांगारूजीको मन सेवामें बहुतहे, परंतु ब्रह्मसंबंध विनां सेवाको अधिकार नाहींहे,तातें माताकों ब्रह्मसंबंध केसें करायो जाय। तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीनवनीतप्रियजीसों विनती करी जो आप हमारी माताजीकों ब्रह्मसंबंध कराय दीजो । इतनेंमें तो मायावादी आय गए, तब आप तो विनसों चर्चा करिवे लगे सो जब उत्थापनको समय भयो तब श्रीनवनीतप्रियजीनें इलंमांगारूजीतें कह्यो जो उत्थापन को समय भयोहे तातें तुम सेवामे न्हाओ । श्रीआचार्यजी तो मायावादीनसो चर्चा करतहें । तातें तुम स्नान करिकें झट सेवामें आवो । तब इलंमांगारूजीनें श्रीनवनीतप्रियजीसों विनती कीनीं जो कृपानाथ मोकों सेवा में न्हायवेकी श्रीआचार्यजीकी आज्ञा नाहींहे वे जानेंगे तो मोसूं लरेंगे । तातें सेवामें केसें जाऊं । तब

श्रीनवनीतप्रियाजीनें आज्ञा करी जो में तुमसों केहेतहों तातें तुम स्नान करिकें बेगि आवो। तुमसों आचार्य नाहीं लरेंगे, विनको में कहूंगो तब माता इलंमाँगारूजी तुरत स्नान करिकें श्रीनवनीतप्रियाजीके मन्दिरमें गई। तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें विनके हस्तमें तुलसी दई सो दुसरे स्वरूपके चरणारविंदमें निवेदन करवायके समर्पे। पाछे श्रीनवनीतप्रियाजीनें माता इलंमांगारूजीसों भेट मांगी ता समय विनके कंठमें जो मोतीनकी माला हती सो श्रीनवनीतप्रियाजीको भेट कीनीं। तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें माता इंलमांगारूजीसों कही जो अब तुम उत्थापनको डबरा लावो। तब वे डबरा लेकें गई। इतनेमें श्रीआचार्यजी आप मायावादीनकों निरुत्तर करिकें तुरत स्नान करिकें सेवामें पधारे। तब इलंमांगारूजीको सेवामें देखे तिनकों आप खीजिकें केहेनलागे जो तुमनें यह कहा कर्यो। तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें श्रीआचार्यजीतें कह्यो जो तुम इनसों क्यों खीजतहो। मेनें इनको ब्रह्मसंबंध करवायोहे। तब श्रीआचार्यजीनें विनती करी, जो महाराज कोन रीतिसों ब्रह्मसंबंध करवायोहे। तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें आपकों सर्वप्रकार समझायकें कह्यो जो तुलसी हाथमें देके, ब्रह्मसंबंध करवायोहे फेरि तुलसी लेकें दुसरे स्वरूपके चरणारविंदमें मेनें समर्पे ओर कंठी भेटकी लीनींहे सो मेनें धरी हे। तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप प्रसन्न होयके कहे जो बहुत आछी करी। तब श्रीआचार्यजीनें माता इलंमांगारूजीसों कही जो अब तुम सुखेन सेवा कियोकरो। तादिनसों माता इंलमांगारूजी

श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवामें न्हाते । केतेकदिन पाछें श्रीआचार्यजीके इहां श्रीगोपीनाथजीकों प्रादुर्भाव भयो। तब बडो अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीआचार्यजीकों जताई जो अब मेरो स्वरूप प्रगट होयगो ओर लीला सृष्टि तो प्रगट भईहे, तातें अब तुम श्रीअक्काजीकों लेकें चरणाट पधारो । एसी आज्ञा सुनिकें श्रीआचार्यजी आप सब भगवदीयन के समाजसहित चरणाट पधारे तहां आप एक रमणीयस्थल देखिकें बिराजे । तब दामोदरदास ओर पद्मनाभदासकों आज्ञा कीए जो यहां श्रीचंद्रावलीजीकी निकुंज हे। यह आज्ञा करिकें आप तहां बिराजे ओर सप्ताह किये। इति श्रीअडेलकी बैठकको चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ८४ मी ♣ श्री चरणाद्रीकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बैठक चरणाटमें हे तहां आप बिराजे। पहलेंतो आप सप्ताह कीए तब महा अलौकिक आनंद भयो। ता समें श्रीगंगाजीके तीरपें एक ब्राह्मण रेहेत हतो सो नित्य विष्णुसहस्रनामको पाठ कियोकरतो। वानें बारहवर्षलों पाठ कियो ओर श्रीगंगाजीके तीरपें बेठ्यो रह्यो, तब एक दिन श्रीठाकुरजी को स्वरूप श्रीगंगाजी के प्रवाहमें तें प्रगट भयो सो देखिकें वा ब्राह्मणनें विनती करी जो महाराज में तो वेरागीहों ओर आपतो महा अलौकिक हो। कोई गृहस्थके वहाँ बिराजो तो भलीभाँतिसों सेवा होय ओर मेरे तो नित्य आधसेर दूध आवतहे सो भोग धरूँगो ओर स्नान कराऊँगो। तब श्रीठाकुरजी आज्ञा कीए जो एक मास तेरे यहां बिराजूंगो पाछें में

कहूँ तहां मोकों ले चलियो, तब मेरी इच्छा होयगी तहां बिराजूंगो। तब वा ब्राह्मणनें एक मासलों श्रीठाकुरजीकी सेवा करी। पाछें श्रीगुसांईजीके प्राकट्यतें एक दिन पहलें रात्रिमें श्रीठाकुरजीनें वा ब्राह्मणसों आज्ञा कीए जो ईहांसों तीनकोसपें चरणाट हे, तहां मोकों ले चलि वहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजेहें तहां मोकों पधराईयो। तब वा ब्राह्मणने कही जो में तो जानत नांही जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहां बिराजतहे। तब श्रीठाकुरजी कहें जो वे तो जगतमें प्रसिद्धहे। तूं जासों पूछेगो सोई बताय देगो ओर में तेरे संगहूं। तलावकेऊपर आप बिराजे हें तहां चलिकें तूं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कहियो जो श्रीठाकुरजी आज्ञा करिके तुमारे ईहां पधारे हें। तब वे आप वाही समय मोकों पधराय लेंईगे ओर तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न होंईगे। तब वह ब्राह्मण ताही समय उठिके स्नान करि संध्यागायत्री करि श्रीठाकुरजीको झापीमें पधरायके तहां तें चल्यो प्रहर दिन चढे चरणाटमें जायपहुंच्यो। तहां जायकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत् करिके विनती करी जो महाराज छोटे मोहोडे बडी बातहे सो कही नाही जातहें। तब आप आज्ञा कीए जो तूं कहीतोसही। तब वा ब्राह्मणनें कही महाराज श्रीठाकुरजी आपके यहां पधराईवेकी आज्ञा कीए हे तब आप कहें जो सुखेन पधरावो। तब वा ब्राह्मणने आपके ईहां झांपी पधराय दई, तब आप बहुत प्रसन्न भए। तब वा ब्राह्मणकों भलिभांतिसो समाधांन करिकें विदा कीयो। पाछें मध्याह्नकालके समय संवत् १५७२ ब्रज पौषवदी ९ भृगुवार वृषभलग्नके समय श्री विट्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो। तासमय भूमंडलपें बडो जेजेकार भयो, सो

गोपालदासजी गाए हें (पौष नोमे श्रीनाथजी श्रीअक्काजी उर ऊपन्यो आनंद ॥ आ चंद श्रीवृन्दावनतणो प्रगटियो ए) ओर भगवदीयनजन बधाई गाय रहेहें, तहां एक कूपहे तामें तें श्रीयशोदाजी, श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभानजी, श्रीकीर्तिजी, नंद, उपनंद, गोप, ग्वालनसहित, दूधदधीके गगरा लेकें पधारे ओर तहां भगवद्मायातें रत्नजडीत मेहेल, डोढी दरवाजे सब बनिगए। पलनांपें मांणिकजडाऊ झूंमका हीरोमोतीनकी झालरि सोंनेरूपेके भांतिभांतिके खिलोना धरेहें। श्रीगुसांईजीको श्रीमुखनिरखिके श्रीचंद्रावलीजी कस्तूरी को तिलक करतहें ओर अपने भावसों सूचित करत हें ओर श्रीस्वामिनीजी दोऊ कपोल परसिके केसरिके कमलपत्र लिखत हें ओर अनेक भावसों सूचित करतहें। पाछें श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तिजी, श्रीविठ्ठलनाथजीकों पलनामें पधराय व्रजभक्तनसहित खिलोंनानसों खिलावतहें। ओर नांनांप्रकार के मंगल गावत हे। पाछें श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभांनजी, नंद, उपनंद, श्रीमहाप्रभुजीकेपास गोप ग्वालसहित वाजिंत्र बजावत आये ओर सब भगवदीय हू समाज सहित आयें तब व्रजभक्तननें श्री महाप्रभुजीकों अक्षत दूर्वासों बधाए। पाछें नंदमहोत्सव भयो ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो। तब भगवदीयननें बधाई गाई (पौष निर्दोष सुखकोष सुंदर मास कृष्ण नौमी सुभ घडी दिन आज। श्रीवल्लभ सदन प्रगट गिरिवरधरन चार्यो विधु वदन सुछबि श्रीवल्लभविठ्ठलराज॥ एसी अनेक बधाई गाए हें। पाछें शेषजी पधारे सो छायाकीए ओर ब्रह्माजी पधारे सो वेद पढिवेलगे ओर श्रीमहादेवजी आप ठाडे होयकें तांडव नृत्य

करिवेलगे ओर इंद्र तेत्रीसकोटिदेवतानसहित आयो सो निशांन बजावतहे ओर फूलनकी वर्षा करत हें। देवांगना गुनगानं करत हें। श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, आदिदेकें अठ्यासीहजार ऋषीमंडल आए सो वेदकी ध्वनी करतहें सो मेघकिसी गर्जना होय रही हे। अप्सरा आयकें नृत्य करतहें ओर गंधर्व गांन करत हें। बंदी, मागध, भाट, याचक, बहुत आएहें सो सबको श्रीमहाप्रभुजी सन्मान करत हें। ओर दूध दधीकी मानों सरिता बहीहे। एसो नंदमहोत्सव भयो ता समय काहूकूँ देहकी सुधि रही नाहीं। अष्ट महासिद्धि नवनिधि द्वार बुहारतहें ओर लक्ष्मीजी द्वारपें बंदनवार बांधत हें, जगे जगे मंगल कलश साजेहें। भुवन भुवन प्रति ध्वजापताका फेहेरातहें। महा अलौकिक आनंद होयरह्योहे। ता समें भगवदीयननें बधाई गाई तिन बधाइनकी एक एक तुक कहीहे॥ जुरिचलि हें बधाये श्री वल्लभगृह सुंदर व्रजकी बाला॥ ओर॥ जुरिचलि हें बंधाये श्री वल्लभगृह प्रगटे श्री विठ्ठलराय॥ ओर॥ श्री विठ्ठलप्रभु प्रगट भए श्री गोकुल सुखदाई॥ एसी एसी अनेक बधाई भगवदीयजन गाए हें। पाछें श्रीमहाप्रभुजी मंगलस्नान करनकों पधारे सो रुपैया मोहोरनकी न्योछावरि होत पधारे। श्री गंगाजीमें स्नान करि पाछें अपने स्थानपें पधारे। पाछें दाँन देवेको आप श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभांनजी, बडे बडे गोपनसहित श्रीआचार्यजी आयकें बिराजे। आपके यहां हीरा माणेकके अनेक भंडार भरेहें, हजारन गाय भेंसनके ठाठ ठाडेहें, जानें जो मांग्यो सो ताकों देतहें। तुरंग हस्ती, रथ, सुखपाल, दीए, ओर भंडार सबरे

खोलिदीए। तब बंदीजन सब बेठिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको यश बोलत हें। जेजे शब्द उच्चार होय रहेहें ओर मागध, सूत सिद्ध चारण, भाट, सबनको मन भायो दांन देतहें तब कुलगुरु श्रीगर्गाचार्यजी आये तिननें श्रीगुसांईजीकी जन्मपत्रिका बांची। संवत् १५७२ व्रज पौष वदी ९ भृगुवार वृषभलग्न मध्याह्नसमय श्री वल्लभात्मज श्री विठ्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो सो ए अनेक कांमना पूर्ण करेंगे। इनकें दोय बहूजी होंईगी, ओर सात लालजी होंईगे। याके वंश के सबही पुरुषोत्तम होयगे। वे मायामत खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेंगे। दैवीजीवनको उद्धार करेंगे। ओर सब तीर्थनकों सनाथ करेंगे। इनको अपार यश होयगो, सो एक जिव्हातें हम कहांताई वर्णन करें। शेष सहस्त्रमुखसों पार नहीं पावतहे। पाछें कुलगुरु श्री महाप्रभुनजीसों बिदा होइकें पधारे। पाछें इंद्र, व्यासजी, शुकदेवजी, अप्सरा, गंधर्व, ब्रह्मा, महादेवजी, सब दंडवत् करिकें अपने अपने धामको पधारे। शेषजीहु अपनें लोककों पधारे। तब भगवदीयनको समाज ले आप भीतर भवन में पधारे। सो श्रीठाकुरजी तथा श्रीगुसांईजी इन दोऊ स्वरुपनकी एकही छवि ही सो आप देखिदेखिकें मंदमंद मुसिकातहें सो भगवदीय गाएहें। (आनंद फेल्यो चहुँदिश छबि निरखि श्रीवल्लभ हसे, वेउ कछू मुसिकाय चितये दोऊ हसनि मेरे मन बसे॥ तिलक मृगमद छप्यो हरखत कहांलों, गुन गाइये, कृपातें उछलित निजरस छिपत नाहीं छिपाइये) ता पाछें श्रीआचार्यजी ने श्री स्वामिनीजी तथा चंद्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, चतुर्थयुथाधिपति

ओर श्रीव्रजभक्त इन सबनको सब प्रकारतें सन्मान करि मंदिर भीतर पधराये। पाछें श्रीआचार्यमहाप्रभु श्रीगुसांईजीकों पालनें झुलाए तब बडो अनिर्वचनीय सुख भयो। ता समय व्रजभक्त तन, मन, धन, वारतहें। पाछें श्रीगुसांईजीकों तिलककरि आरती वारतिहें। ता समय श्रीगुसांईजी हाव भाव करत हें। व्रजभक्तनकों कटाक्ष करि भावको संबोधन करत हें। श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तिजी, पालनें झुलावेंहें। पाछें श्रीनंदरायजी, श्री वृषभांनजी, आदि सब श्रीमहाप्रभुजीसों बिदा होयकें आशीष दीये। जो सदां आपको घर सुबस बसो ओर आपके वंशमें सबही पुरुषोत्तम होइँगे सो पुष्टिमार्ग को प्रकाश करेंगे। ओर सारस्वतकल्पकी नित्यलीला करि दैवीसृष्टिको अनुभव करावेंगे। श्रीगोकुल फीर बसावेंगे। दिनदिन अधिक प्रताप होइगो एसी आज्ञाकरि गोलोकको पधारे। ओर श्रीआचार्यजीकों आज्ञा कीए जो आप बेगि पधारोगे। पाछें व्रजभक्त गोकुलकों पधारे। पाछें सब अलौकिक भगवद्लीला अंतरध्यान भइ। तब भगवद्मायातें जो मेहेलादिक अलौकिक वैभव भयोहतो सो सब गुप्त होयकें पूर्व जेसो स्थल व्हे गयो। पाछें श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजीनें सबनके माथें मायाको आवरण किये, तातें सब पिता, माता, पुत्र, या भावसों जाननलगे। पाछें श्रीआचार्यजी अलौकिक भगवदीयनको सब मनोरथ सिद्धि कीए, यह चरित्र आप श्रीचरणाटकी बैठक में प्रगट कीए। इति श्रीचरणाटकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

इति श्री गोकुलनाथजीकृत वनयात्रा तथा पृथ्वी प्रदक्षिणा गर्भित श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी चोराशी बैठकनके चरित्र समाप्त ॥

अथ श्रीविट्ठलेश्वरस्य जन्मपत्रिका.

वर्षे नेत्राश्वभूतद्विजपतिगणिते पौषकृष्णे नवम्यां हस्तर्क्षे तैतिलेऽहन्यधिकृतभृगुजे शोभने गोविलग्ने ॥ रंध्रस्थेऽर्के सचांद्रे कविकुजशनिषु द्यूनगेष्वात्मजस्थे सोमेजीव धनस्थे तमसि सहजगे विठ्ठलः प्रादुरासीत् १ शुक्रारार्किषु सप्तमेषु धनगे जीवे च कर्के तमस्यर्के धन्विनि चांद्रिणा सह सहस्याशुक्लपक्षे वृषे ॥ अब्दे नेत्रमुनीषु चंद्रगणिते हस्ते नवम्यां भृगौ विश्वोद्धारकृते स्फुटोऽभवदिह श्री विठ्ठलेशो हरिः ॥२॥ संवत् १५७२ शके १४३७ पौषकृष्णे ९ शुक्रे हस्तनक्षत्रे शोभनयोगे तैतिलकरणे एवं पचांगे ॥ श्रीसूर्योदयात् गतघट्यः २१ पलानि २५ वृषलग्ने श्री ६ श्रीविठ्ठलनाथजी प्राकट्यम् ॥ स्थितिवर्ष ७० दिन २८ पर्यंतम् ॥ संवत् १६४२ माघकृष्णे ७ दिने अंतर्धानम् ॥

(अथ श्री गोविंदस्वामी कृत जन्मपत्रिका गर्भित बधाईको पद)

(पद राग धनाश्री)

वधावो श्रीवल्लभरायकें ग्रह प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ श्रीवल्लभरायकें धु० तैलंगतिलक श्रीलक्ष्मणभट्टसुत गृह जन्मलियोहे आय, पुरुषोत्तम वासों कहियतहें निगम सदा गुण गाय. १ पौषमास शुभ नौमी भृगुदिन हस्तनक्षत्र हे सार, वृषभलग्न शुभयोग करण हे धन्यशिशु निर्धार. २ धनगुरु तृतीये राहू पंचममें राकापती नवमें केत सप्तमशुक्र भौमशनी शोभित अष्टम रविबुध लेत. ३ गिरिचरणाट सुरसरिके तट फिर लिनों द्विजरूप, ज्ञातिकर्म सब होत विविधविधि बेठे श्रीवल्लभभूप. ४ पंचशब्द बाजे बाजत हें गावत गीत सुहाये, मंगल कलश बिराजत द्वारें वंदनवार बंधाय. ५ मागध सूत पुरोहित मिलिकें सुभग आशीष सुनाये, देत दान महाराज श्रीवल्लभ फुले अंग न समाये. ६ महामहोत्सब होत आंगनमें नाचत गुनी अनेक, विविधभांति पाटंबरभूखन देत न आवत छेक. ७ नवग्रहकी महिमा कहिये जो कहत सर्बे द्विज आय । पाखंडधर्म सब दूरि करिहें प्रभु वेद धर्म प्रकटाय. ८ निराकार मायामत खंडन करेंगे सुखदाय, पुरुषोत्तम साकार भजनविधि करि शिखवेंगे आय. ९ दैवीजीव उद्धारण कारण महामंत्रको दान, शरण गये गिरिधररति उपजत करत कथारस पान. १० जे हरि ब्रह्म रुद्रके हृदये आवत नांहिन ध्यान, सो निजजन गृह वसत निरंतर अभय करतहें दान. ११ प्राकृतरूप दिखाय मोहित किये आसुर मानव जेह, कृपासुदृष्टि उद्धार कियो हे स्त्री शुद्रादिक देह. १२ पतितजन पावन करिहें प्रभु अनेक देश परवेश, हस्तकमलधरि, दुर करेंगे अन्यधर्मको क्लेश. १३ गोवर्धनधरसों रति लीला करेंगे तहां जाय. भोग सिंगार बनाय करेंगे निरखि निरखि सुख पाय. १४ व्रजमंडल खग मृगकी महिमा करेंगे विस्तार, श्री यमुना गोवर्धनद्रुम वेली केहेत सबे निर्धार. १५ प्रेमलक्षणां दे दासनकों कीनों भवनिस्तार, श्रीवल्लभराज तुमारे सुतकी कीर्ति अपरंपार. १६ आनंदमग्न भए सुर नर मुनि गुनीगण सुनि सुखपाय, निरखि मुखारविंदकी शोभा चरनकमल शिरनाय. १७ सुखसागर उमड्यो भूमीऊपर बरनत बरन्यो न जाय, श्रीवल्लभपदरज महिमातें गोविंद यह यश गाय. १८

॥ इति श्री गुसांईजी की जन्म पत्रिका ओर बधाई को पद समाप्त ॥

♣ बैठक १ ली ♣ श्रीगोकुलकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीगोकुलमें दोइहे तामें एक बैठक श्रीनवनीतप्रियाजी के मंदिरमेंहें, तहां श्रीगिरिधरजी ओर श्रीगोकुलनाथजीको श्रीगुसाँईजीके साक्षात् दर्शन भये हते। श्रीगिरिधरजी गादीके सामें बिराजीके संध्यावंदन करत हते। गादी ऊपर बिराजी के न करते। एक दिन श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों विनती कीनी जो दादा ! आपको गादी ऊपर बिराजवे को अधिकार हें। सो आप क्यों नांही बिराजते हो, तब श्रीगिरिधरजी आप आज्ञा किए जो मोकों या बैठकमें गादी पें बिराजे श्रीगुसांईजीके दर्शन होत हें। तुमहु देखो। तब श्रीगोकुलनाथजीको श्रीगुसांईजीके साक्षात् दर्शन भये। तासमय आप श्रीगुसाँईजी संध्यावंदन करत हते सो भगवदीयननें हु गायोहे जो : मानिकचंद प्रभु सर्वदा, श्रीगोकुल करत विहार॥ सदाव्रजहीमें करत विहार॥ युग युग राज करो श्रीगोकुल॥ यह सुख भजन प्रताप तेज तें छीन इत उत न टरो॥ एसे भगवदीयननें अनेक बधाईनमें गायोहे। जो आपश्रीगोकुलमें सदा सर्वदा बिराजमान हे। यह चरित्र श्रीगुसांईजीने श्रीगोकुलमें श्री नवनीतप्रियाजीके मंदिर की बैठक में प्रकट कीयेहे। इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोकुलकी बैठकको चरित्र समाप्त॥

♣ बैठक २ जी ♣ श्रीगोकुलमें बडी बैठकमेंकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजी की दूसरी बैठक, श्रीमहाप्रभुजीकी बडी बैठकमें श्रीमहाप्रभुजी के सामे बिराजेहे, जहां श्रीगुसांईजीनें

[1]श्रीनवनीतप्रियाजीको पालने झूलायेहें। ता समय नंदमहोत्सवके महा अलौकिक दर्शन सब भगवदीयनको श्रीगुसाँईजीनें करवाये। तब सब भगवदी आनंद में मग्न भये। काहुको देह दिशाकी शुद्धि रही नांही। तब श्रीगुसाँईजीने सबनको सावधान कीये जब तक श्रीनवनीतप्रियाजीको मंदिर बन्यो न हतो तब तक श्रीमहाप्रभुजीकी बैठक में बिराजे। तासमें आपनें सहेज आज्ञा करी जो या समें मंदिरकी नीम खोदे तो मुहुर्त आछो हे। मंदिरकी नीम अविचल होय यह आज्ञा करी। आप पोढवेको पधारे। या समें [2]यादवेंद्रदास ठाडे हते, सो वो वाही समें नीम खोदवे लगे, जो एक रात्रमें सगरे मंदिरकी नीम खोदी। सवेरे श्रीगुसांईजी आप जागे देखे तो रजके बडेबडे ढेर पडेहें। तब श्रीगुसाँईजीने आज्ञा करी जो यह ढेर काहेकोहे। तब वैष्णवननें विनती कीनी जो महाराजाधिराज यादवेंद्रदासनें यह मंदिरकी नीम खोदी हे। तब आपनें यादवेंद्रदाससु पूछी जो यह नीम कोनसे समें खोदीहे, तब वानें विनती कीनी जो राज आपनें आज्ञाकीनी वाही समें खोदीहे। तब आप बहोत प्रसन्न भये। पाछें वहां [3]श्रीनवनीतप्रियाजीको मंदिर सिद्ध भयो। यह चरित्र श्रीगुसांईजीने बडी बैठकमें प्रकट कीयो। इति श्रीगुसांईजीकी श्रीगोकुल की २जी बैठक को चरित्र समाप्त।

♣ बैठक ३ जी ♣ श्रीवृन्दावन में बंसीवट की बैठक को चरित्र ♣

अब श्री वृन्दावनमें बंसीवट में श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी

---

[1] प्रिय नवनीत पालने झूले। श्री विठ्ठलनाथ झूलावे हो ॥ आ कीर्त्तन आ बैठकमां आ वखते गवायु छे. जुओ वचनामृत.

[2] जुओ अमारा तरफथी प्रगट थयेल "८४ वैष्णवनी वार्ता" ए पुस्तक.

[3] आ मंदिरमां हाल राजाठाकोर बिराजे छे. वांचों "व्रजयात्रा वर्णन".

बैठकके पास श्रीगुसांईजी बिराजतेहते । तहां वृन्दावन के महंत हरिवंश आदी बेठे हते । तब हरिवंशने श्रीगुसांईजीसों विनती कीनी जो आप संध्यावंदन करत हो ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा कीये जो हमारे मारगमें तो संध्या, उपासना मुख्यहें । जो एतन्मार्गीय भक्त हे सो संध्याकी अपेक्षा करतहे । नंदालयसों प्रभु प्रातःसमय गोचारनको वनमें पधारते तब एतन्मार्गीय भक्तनको विप्रयोग होत हें । तब सायंकाल आप जब वनमें तें पाछें पधारतेहे तब संयोग रसको दान करतहें यामें यह आज्ञा कीये जो हमारो मार्ग हे सो व्रजभक्तनकें भावात्मकहें । इतनेंमें एक ढढेरो भगवद् स्वरूप लेके श्रीगुसांईजीके पास आयो ताको श्रीगुसांईजी देखे सो सब देखतमें वे स्वरूप पुरुषोत्तम की क्रीडा करवे लगे जो कोउतो वेणुनाद करतहें, कोउ घुटरुवनलीला करतहें एसे सब स्वरूप अपनी अपनी लीला करवे लगे । यामें यह जताये जो ओर कोई तो प्रतिष्ठा करे, तब पुरुषोत्तम होयहें ओर हमारी दृष्टिसोंही पुरुषोत्तम होयहें । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीवृन्दावनमें महंत को दीखाये हें । तब सब महंतनें साष्टांग दंडवत् कीये । यह माहात्म्य देखीके अनेक जीव श्रीगुसांईजीके शरण आये, यह चरित्र श्रीगुसांईजीने, श्रीवृन्दावनकी बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीगुसांईजीकी श्रीवृन्दावनकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक ४ थी ♣ श्रीराधा-कृष्णकुंडकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजी की बैठक श्री राधा-कृष्णकुंडके ऊपर श्यामतमाल के नीचे आप बिराजतहें । यहां पर एक दीन आप बिराजते हते तब तहां रघुनाथदास गोडीयानें आयकें आपको

दंडवत् करिकें विनती कीनी जो महाराज तुमारे श्रीस्वामिनीजीको स्वकीयत्व मानेहें, तब आप आज्ञा कीये जो हा ! हा ! हमारे स्वकीयत्व मानेंहें । तब वानें कही जो हमारे तो परकीयत्व माने हें । तब आपनें आज्ञा करी जो एक कागद लावो ओर ये कुंडमें डारो सो तहांते श्रीस्वामिनीजी श्रीहस्ताक्षर लीखी पठावे सो प्रमाण मानें । तब एक कोरो कागद लेकें कुंडमें डार्यो, सो तत्काल वह डुबी गयो । सो निकुंजमें श्रीस्वामिनीजी आप बिराजते हते, तहां ललिताजीनें विनती करी जो यह कागद श्रीगुसांईजीनें पठायोहे । जो गोडीयानसो वाद भयोहे । तब श्रीस्वामिनीजी ने एक श्लोक लीखी दीनों । तब श्रीगुसांईजीनें एक वैष्णवसों कही जो वह कागद ले आवो । तब वा वैष्णवनें कागद लायकें श्रीगुसांईजीको दीयो । वह कागद श्रीस्वामिनीजी की इच्छातें भीज्यो नांही । वह कागद में ते वा श्लोक वांच्यो, सो श्लोक "जयति व्रषभांन कुलकी मुदी राधिके जयति कृष्ण परमानन्द कुल चंद्रमा" श्रीगुसांईजीनें वह श्लोक वांचते ही सब गोडीया निरुत्तर होय गये । पहले जो श्रीगुसांईजीनें उत्तर दीयो हतो, सोई श्री स्वामिनीजी लीखी पठायो । तब सब गोडीया जानें जो श्रीठाकोरजी ओर श्रीस्वामिनीजी श्रीगुसांईजी के वशहें । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीराधा-कृष्णकुंडकी बैठक में प्रकट कीये । इति श्रीगुसांईजीकी श्रीराधा-कृष्णकुंड की बैठक को चरित्र संपूर्ण ।

♣ बैठक ५ मी ♣ श्रीचंद्रसरोवर की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजी चंद्रसरोवरमें दोय बैठकहे । प्रथम बैठक श्रीमहाप्रभुजीके पास आप बिराजे तहांहें । जब कृष्णदास

अधिकारीनें श्रीनाथजीके दरशन बंध कीने तब श्रीगुसांईजी परासोली में बिराजीके विप्रयोग रसको अनुभव कीयो । तब श्रीनाथजी निज मंदिरमें एक छोटी सी बारीहे तामेंसु श्रीगुसांईजीको दरशन देते। वाकी कृष्णदासकुं खबर परी तब वानें वो बारीहु बंध करि दीनी । तब श्रीगुसांईजी [१]विज्ञप्ती लीखीके पठावते, सो श्रीनाथजी वांचीके रामदासको देते, ओर श्रीनाथजीहु पत्र लीखीकें रामदासकों देतें, सो रामदास वा पत्र श्रीगुसांईजीको देते सो पत्र श्रीगुसांईजी वांचीके फीर पानी में घोरीके आरोगी जाते-पीजाते। एसें छ महिना तांइ आपनें विप्रयोग रसको अनुभव कीयो हें। यह चरित्र आपनें श्रीचंद्रसरोवर की बैठक में प्रगट कीयो । इति श्रीचंद्रसरोवर की बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ६ ठी ♣ श्रीचंद्रसरोवरमें फुलघरकी बैठक को चरित्र ♣

अब चंद्रसरोवर में श्रीगुसांईजीकी दूसरी बैठक फुलघरमेंहे तहां श्रीगुसांईजी विप्रयोगमें बिराजते। फुलघरकी सेवा करते। वा फुलघरमें बिराजीकें श्रीगुसांईजी फुलकी माला सिद्ध करिकें श्रीनाथजीकें लीये नित्य पठावते । श्रीनाथजी राजभोग आरोग चुके तब “माला बोली हे” यों करके (जो मालाको वेग पधराओ याही भावसों) एक पुकार कीयो जाय, वाही समें वा शब्द सुनकें श्रीगुसांईजी वो फुलकी माला पठावते । जासुं वाहीदीनासुं अब तक ये [२]माला बोलवेको प्रचार पर्योहे। ओर वहांसे माला आये पाछें श्रीनाथजी अंगीकार करे, तापाछें राजभोग के दरसन

---

[१]. वैष्णवोए विज्ञप्तीनुं पुस्तक तथा कृष्णदास अधिकारीनी वार्ता बांचवी.

[२]. हाल पण श्रीनाथजीमां माला बोलाय छे तेने माटे केटलाक वैष्णव श्रीएकलींगजी महादेवजी दरशन माटे पधारवानुं करी कहे छे ते खोटुं छे.

खुलते । दरशन होय चुके तब रामदासजी श्रीनाथजीकी प्रसादी माला ओर बीडा नित्य श्रीगुसांईजीकुं देवेकों जाते । वाही बीरीयां श्रीनाथजी जो पत्र श्रीगुसांईजीके ऊपर लीखते वो दे आवतें ओर श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के ऊपर जो विज्ञप्ती पत्र लीखते सो ले आवते । यह चरित्र श्रीगुसांईजीने चंद्रसरोवर में फुलघर की बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीचंद्रसरोवर में फुलघर की दूसरी बैठक को चरित्र सम्पूर्ण ।

♣ बैठक ७ मी ♣ श्रीगिरिराजजी की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीगोपालपुर श्रीगिरिराजजीमें श्रीमथुरेशजीके मंदिरमेंहे । तहां श्रीगुसांईजी बिराजते । तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजीनें विनती कीनी जो महाराजाधिराज श्रीमहाप्रभुजीनें सवाशेर भातको अन्नकूट करायो ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञाकीये जो हां । श्रीमहाप्रभुजीकीलीला नित्य अखंडहें । एसें कहीकें श्रीगोकुलनाथजी ओर श्रीशोभाबेटीजीको श्रीमहाप्रभुजीके अन्नकूट के अलौकिक दर्शन करवाये । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीगोपालपुर में श्रीमथुरेशजीके मंदिरमें प्रगट कीये इति श्रीगोपालपुर की बैठक को चरित्र सम्पूर्ण ॥

♣ बैठक ८ मी ♣ श्रीकामवनमें श्रीकुंड की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक कामवन में सुरभीकुंड श्रीकुंड के ऊपर हे तहां आपनें श्रीमहाप्रभुजी के परोक्ष दिशामें श्रीगुसांईजीको सेवक मधुसूदनदास को श्रीमहाप्रभुजी के साक्षात् दर्शन करवायो, सो मधुसूदनदास श्रीमहाप्रभुजीकी सेवा नित्य

करते ओर श्री सर्वोत्तमदासजीको जप नित्य करते ओर दुध पान करके रहते। याके मनमें यह मनोरथ हतो जो मोकों श्रीमहाप्रभुजी साक्षात् दर्शन देइंगे तब उठुंगो, एसें करत एक मास भयो तब श्रीगुसांईजी तहां पधारे। तीनदीन तांइ बिराजें। तापाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे, पाछें छ मास भये तब श्रीमहाप्रभुजीनें कोटिकंदर्पलावण्यमय स्वरूपके दर्शन दीये, ओर आज्ञा कीए जो मधुसूदनदास तोको इतनी विलंब नहोती। परन्तु श्रीगुसांईजी यहां पधारी तोकूं दर्शन दीयो तो हु तेनें [१]श्रीगुसांईजीमें ओर मोमें भेद बुद्धि करी ओर बेठ्यो रह्यो। प्रथम तो वैष्णवको-दासको हठ करवे को धर्म नाँहीहे, तासुं तोकों इतनो विलंब भयोहे, जो विरह होय तो मेरे वंशके बालक जहां बिराजे तहां जायके दर्शन करे मुख्य यही उत्तमहे। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीकामवनमें सुरभीकुंड ऊपर प्रकट कीये। इति श्रीकामवनकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ९ मी ♣ श्रीप्रेमसरोवरकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक प्रेमसरोवर ऊपरहे तहां श्रीगुसांईजीने प्रेमसरोवर में स्नान कीये ओर गोविंदस्वामीकों युगल स्वरूपको दर्शन श्रीगुसांईजीने करवायो ओर [२]श्रीस्फुरत्कृष्ण प्रेमामृतकी टीका यहां बिराजकें करी ओर एक

---

[१] वैष्णवोए श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी तथा तद्वंश बालकोमां भेद बुद्धि राखवी नहि। भगवदीओए गायुं छे के "एइ तेइ तेइ एइ कछु न संदेह" अने "बालक सब ब्रह्म जानीये जाको वेद विमल यश गाय" तेमज श्रीसर्वोत्तम स्तोत्रमां कह्युं छे के "स्ववंशेस्थापिताशेष स्वमाहात्म्यः स्मयापहः" आथी श्रीवल्लभ. कुलना सर्व बालकोमां वैष्णवोए श्रीमहाप्रभुजी वत् भावना राखवी.

[२] आ ग्रन्थनी टीका माटे जुओ "श्रीकृष्णस्तोभरत्नाकर" ए पुस्तक.

मास पर्यंत आप यहां बिराजे । सो सबनको अनिर्वचनीय सुख भयो यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें प्रेमसरोवरकी बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीगुसांईजीकी श्रीप्रेमसरोवरकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक १० मी ♣ श्रीसंकेतबटकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्री संकेतबटमें संकेत देवीके पास हे । आपको एक सेवक गुजराती ब्राह्मण [१]रेंडा हतो याको आपनें दिव्य चक्षु देकें व्याहखेलको अलौकिक दर्शन करवायो, सो वा रेंडा वैष्णव दर्शन करके रसमें मग्न होय गयो । देहानुसंधानहु न रह्यो । तब श्रीगुसांईजीनें सावधान कीयो । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीसंकेत बटकी बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीसंकेतबटकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ११ मी ♣ श्रीरीठोराकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक रीठोरामें हे तहां श्रीचंद्रावली कुंडमें आपनें स्नान कीये ओर आज्ञा कीये जो यह [१]श्रीचंद्रावलीजी की निकुंजहे । तातें तहां तीन दीनको पारायण कीयो सो महा अलौकिक सुख भयो । पाछें श्रीगुसांईजीने वहां दानलीला ग्रन्थ प्रकट कीयो । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें रीठोरा की बैठक में प्रकट कीये । इति श्रीरीठोराकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

---

१. आ रेंडा वैष्णव कपडवणज गामना रहीश हता तेमनी वार्ता माटे जुओ ''बसोबावन वैष्णवनी वार्ता'' तथा ''तीर्थयात्रानो हेवाल''

२. वधु वर्णन माटे जुओ ''व्रजयात्रा वर्णन.''

♣ बैठक १२ मी ♣ श्रीकरहलाकी बैठक को चरित्र. ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक करहलामें श्रीनाथजीके जलघराके पासहे तहां आप तीन दीन तांइ बिराजे हे। तहां आपनें श्रीरासपंचाध्यायीकी श्रीसुबोधिनीजी ऊपर श्रीटीप्पणीजी ग्रन्थ लीखकें प्रगट कीयोहे। तहां रासोलीमें श्रीललिताजीको स्वरूपहें श्रीगुसाँईजी वा स्वरूपको एक पुष्पकीमाल पहेरायवेलगे तब श्रीललिताजीनें वह माला हाथमें ले लीनी पहरी नांही। तब आप चुप होय रहे यह माला काहुनें देखी नांही। पाछें सांझके समें जब आप दरसनको पधारे तब ललिताजीनें कही जो तुमारी माला श्रीस्वामिनीजीको पहराइहे, सो प्रसादी करके श्रीस्वामिनीजीनें मोकोंदीनीहे, ओर आज्ञा करीहे जो यह माला श्रीगुसांईजीको दीजो सो यह माला आप पहेरोगे तब श्रीगुसांईजीने वह माला पहरीकें यह श्लोक कह्यो॥ "निकुञ्जे पुष्पालीरचितशयनात्केलिजनित। श्रमांभः संक्रांताननकमलशोभाहृतमनाः॥ समुत्थायायांती सहजकृपया केलिदलितस्त्रजं दातुं राधे स्मरसि यदि मां त्वं किमपरैः ॥१॥" यह श्लोक कहकें आप बहोत प्रसन्न भये। ओर श्रीललिताजीहु प्रसन्न भये। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें करहलाकी बैठक में प्रकट कीये। इति श्रीकरहलाकी बैठको चरित्र संपूर्ण.।

♣ बैठक १३ मी ♣ श्रीकोटवन की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक कोटवनमें कदमखंडीमें शीतलकुंड के ऊपरहें तहां गोविंदस्वामी श्रीगुसांईजीके संग हते

अर्धरात्रिके समे श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामीसों आज्ञा कीये जो तुम देखो या समय कदमखंडीमें कहा लीला होतहें। तब गोविंदस्वामी देखे तो युगल स्वरूप विहार करतहें। ता समें रसमत्ततासों श्रीप्रभुजीनें श्रीस्वामिनीजीको मोतिनको हार तोरी डार्यो, तब सब मोती भुमिमें बिखरे। तब श्रीठाकोरजी मोती वीनकें अपनें श्रीहस्तसों हार पोइकें श्रीस्वामिनीजीकों पहरायो श्रीगुसांईजीनें यह लीला के दरशन गोविंदस्वामीको करवायो तब गोविंदस्वामीनें यह पद गायो ॥ रागकेदारो ॥ कदमवन विथन करत विहार ॥ मदनमोहनपिय अति रसमातें तोर्यो प्रिया उरहार ॥१॥ कनिक-भूमिविथुरे गजमोती कुंजकुटीके द्वार ॥ गोविंद प्रभु श्रीहस्तसों प्रोई सुंदर व्रज राजकुमार ॥२॥ यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें कोटवन की बैठकमें प्रकट कीये। इति श्रीकोटवन की बैठक को चरित्र संपूर्ण.।

♣ बैठक १४ मी ♣ श्रीचीरघाटकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक चीरघाट ऊपरहे तहां आप बिराजे तब आपनें आज्ञा किये जो अग्नीकुमारीकाको अलौकिक रात्रि के दरशन श्रीठाकोरजीनें करवाये ओर वरदान दीयो जो शरदकी रात्रि में बुलायकें रास करिकें रसदान करुँगों। यह आज्ञा करिके श्रीगुसाँइजीनें व्रतचर्या ग्रन्थ प्रकट कीयो ओर तीन दीन ताँइ बिराजे। अनिर्वचनीय सुख भयो। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें चीरघाटकी बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीचीरघाटकी बैठक को चरित्र संपूर्ण.।

♣ बैठक १५ मी ♣ श्रीवच्छवनकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजी की बैठक वच्छवनमें छोंकरके वृक्ष के

नीचे हें तहां आप बिराजे, ओर आज्ञा कीये जो ब्रह्माजीनें यहां वच्छ हरेहे। यहां ब्रह्माजीनें स्तुति कीयेहे। पाछें आपनें यहां श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजी ऊपर श्रीटीप्पणीजी प्रकट कीये। सो महा अलौकिक आनंद भयो। यह चरित्र श्रीगुसांईजीने वच्छवन की बैठकमें प्रकट कीये। इति श्रीवच्छवनकी बैठकको चरित्र संपूर्ण.

♣ बैठक १६ मी ♣ श्री वेलवनकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीवेलवन में श्रीयमुनाजीके किनारेहें, तहां आप बिराजके भगवानदास को अलौकिक रासके दरशन करवाये, तहां आपनें पुरुषोत्तम हुल्लास ग्रन्थ प्रकट कीयो सो अनिर्वचनीय सुख भयो। तापाछें आपनें तीनदीनको पारायण कीयो। पाछें आप तहांसों विजय कीयो। यह चरित्र आपनें श्रीवेलवन की बैठक में प्रगट कीयो। इति श्रीवेलवनकी बैठक को चरित्र संपूर्ण.।

♣ बैठक १७ मी ♣ श्रीचरणाटकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक चरणाटमें हे तहां आपको छट्ठी पूजन भयो हतो, तहां श्रीगुसांईजीनें अलौकिक चरित्र दीखायो ता समें श्रीगुसांईजीनें लीला सृष्टि ओर लीला सामग्री को अंगीकार कीयोहे। सो लक्षावधि जीवन को कटाक्षद्वारा अंगीकार कीयेहे। सो देखीकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बहोत प्रसन्न भये। जब श्रीगुसांईजी मास एक के भये तब गंगापूजन भयो। जब गंगाजी बहोतबढे, तब श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजीकी गोद में बिराजेहें तब श्री गंगाजीनें चरण परस कीये ओर कही जो महालक्ष्मीजी आप बडभागीहो। आपके पति साक्षात्

श्रीपूर्णपुरुषोत्तमहे, ओर पुत्रहु पूर्णपुरुषोत्तमहे ओर आपके वंश के सबही पूर्णपुरुषोत्तम रूप प्रगटेंगे। यह आज्ञा करकें श्रीगंगाजी पधारे। तब श्रीअक्काजी अनेक सखीयन सहीत मंगल गावत बैठक में पधारे। तब श्रीमहाप्रभुजीनें श्रीगुसांईजीको स्वरूप देखीकें आज्ञा कीये जो पुत्ररूप ओर ठाकोर स्वरूप होयकें आपही पधारेहें। तब श्रीठाकोरजीको ओर श्री गुसांईजीको नाम श्री विठ्ठलनाथजी धर्यो। तापाछें चरणाटसों विजय कीयो सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीको लेकें श्रीअडेल पधारे। तब अडेल में जयजयकार भयो। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीचरणाटकी बैठक मे प्रकट कीये। इति श्रीगुसांईजीकी श्रीचरणाटकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक १८ मी ♣ श्री अडेलकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीअडेलमें हैं तहां आपनें बालक्रीडा करीहे। तहां महादेवजी आपकुं नित्य खीलोंना लेकें खीलायवेकों आवते ओर सींगीनाद बजावते, नृत्य करते सो देखके आप बहोत प्रसन्न होते, ओर आपके कृपापात्र अंतरंग भगवदीय आपकुं नित्य खीलावते। आपहु हाव भाव कटाक्ष करी रसदान करतहें तब आपकी कृपा कटाक्षद्वारा सहस्त्रावधिजीवन को अंगीकार कीये हे। एसे अनेक चरित्र श्रीगुसांईजीनें प्रकट कीये ॥ इति श्रीगुसांईजी की श्रीअडेलकी बैठकको चरित्र सम्पूर्ण ॥

---

१ आ बैठक श्रीजगन्नाथरायजी तरफ कोइ गाममां होवी जोइए पण तेनी खबर मलती नथी कोइ अनुभवी वैष्णव कृपा करी जणावशो तो नवी आवृत्तिमां सुधारो करीशुं.

♣ बैठक १९ मी ♣ [१] श्रीगोडदेशकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक गोडदेशमें नारायणदासजी के घरमें हे। तहां नित्य श्रीगुसांईजी बिराजते। एक समें श्रीगुसांईजी आप गोडदेश पधारे सो बगीचेमें बिराजे सो नित्य नारायणदासजी सवेरेमें दरशनको जाते सो सांजकु आवते। पादशाहके पास एकबेर मीलाप करकें चले आवते। राजकाजको काम चलावते नहि। एकदीन पादशाहनें याद कीये जो आजकाल दीवान नांही दीसतहे ताको कारण कहाहे। तब काहू चुगलखोरनें कही जो हजरत श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजी पधारे हें सो वे रात्रदीन वहांही इनके पास रहतहें। तब पादशाह ने हलकारासों कही जो नारायणदासजीको बुलालाओ, तब उहांजायकें हलकारानें नारायणदासजी सों कही जो पादशाह याद करत हें, सो नारायणदासजी कचेरी में आये। तब पादशाहनें पूछी जो तुम आजकाल दीसो नाहीं हो याको कारन कहा। तब दीवाननें कही जो मेरे गुरु पधारे हे सो जहांतांइ बिराजेंगे तहांतांइ मेरो आयवो नहीं बनेगो। तब पादशाहनें कही जो सुखेन सों जाओ ओर मेरी आडीसों अरज करो जो मोकों दरशन होय। तब दीवाननें कही जो कहेंगे। तब दीवान श्री गुसाँइजीके दरशनकों आये ओर विनती करी, तब आपनें आज्ञा करी जो पादशाहकों दरशनकों बुलाय लाइयो। तब दीवाननें साष्टांग दंडवत् करी पाछें घर आयो। पादशाहसों कहीजो तुमको दरशन होयगो। तब दूसरे दीन दीवानके संग पादशाह दरशनको आयो सो पादशाहको श्रीगुसांईजीके साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दरशन भये। तब पादशाहनें साष्टांग दंडवत् करी ओर दश सहस्र रूपीआ श्रीगुसांईजीके आगे धरे तब श्रीगुसांईजी समाधान करवे लगे। तब पादशाहनें विनती करी

जो महाराज मेरे मस्तकपें सदैव बिराजे एसी कृपा कर दीजे । तब श्रीगुसांईजीनें श्रीहस्तसों उपरणां उढायो। तब पादशाहनें दंडवत् करी मस्तक पर पागमें बांध्यो ओर विनती करी जो महाराज में आपकी शरणहूँ । कृपा कर मेरो उद्धार कीजे । तब आपनें आज्ञा कीये जो हम गोडदेश में पधारेहें, तबतें तेरो उद्धार होय गयोहे । पाछें पादशाह दंडवत् करी अपनें घर गयो । यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने गोडदेशमें नारायणदासजीके घर की बैठक में प्रकट कीये। इति श्रीगुसांईजीकी गोडदेशकी बैठक को चरित्र संपूर्ण. ।

♣ बैठक २० मी ♣ श्रीसोरमजीकी बैठकको चरित्र. ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीसोरमजीमें श्रीमहाप्रभुजी की बैठकके पासहे तहां श्रीगुसांईजी बिराजे। सोरमघाट स्नान करकें अपनी बैठकमें पधारे । पाछें आपने सप्ताह कीये सो महा अलौकिक आनंद भयो। पाछें श्रीगुसांईजीनें अपनी कृपा कटाक्षद्वारा अनेक जीवनको उद्धार कीये। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीसोरमजीकी बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीगुसांईजीकी श्रीसोरमजीकी बैठकको चरित्र संपूर्ण. ।

♣ बैठक २१ मी ♣ अथ श्रीगोधराकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक [१] गोधरामें नागजीभाइके घरमें हें जब श्रीगुसांईजी गोधरा पधारते तब नागजीभाइके घरमें बिराजते । एक समय नागजीभाइ युगलगीतको प्रसंग पूछ्यो तब श्रीगुसांईजी व्याख्यान कीये सो तीन दीन तीन रात्र तांइ चल्यो । एसी अद्‌भुत रसकी बरखा आपनें कीनी । ता समें सब

---

[१] जुओ बसेबावन वैष्णवनी वार्ता तथा तीर्थयात्रानो हेवाल.

भगवदीनको देहदशा को अनुसंधान न रह्यो। तब आपनें सबनको सावधान कीयो। यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीगुसांईजीकी शरण आये। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीगोधराकी बैठकमेंप्रगट कियो। इतिश्रीगोधराकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २२ मी ♣ श्रीअलीणा की बैठक को चरित्र. ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक अलीणामें महीधरजी फुलबाई के घरमेंहे। पहेलें नरहर जोशी जब श्रीगुसांईजीको अलीणा में पधराय लाये तब महीधरजी सामनें पधरायवेको चले, सो रस्तामें रुपीआ ओर महोर न्योंछावर करत करत अपने घर पधराय लाये। पाछें सहकुटुंब श्रीगुसांईजीके सेवक भये ओर गामके लोक ओर हु बहोत वैष्णव भये। तब महीधरजी फुलबाईनें विनती कीनी जो राज कृपा करकें श्रीठाकोरजी पधरायदीजे। तब श्रीगुसांईजीनें श्री मदनमोहनजीको स्वरूप पधरायदीनें ओर सेवाकी रीति सब बताई ओर आज्ञा किये जो नरहर जोशी कहे सो करीयो। पाछें महीधरजी ओर फुलबाईनें श्रीगुसांईजीकी भलीभांतिसों सेवा कीनी। पाछें श्रीगुसांईजी वहांसे विजय किये। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीअलीणा की बैठक में प्रकट कीये। इति श्री अलीणाकी बैठक को चरित्र समाप्त ॥

♣ बैठक २३ मी ♣ अथ श्रीअसारवाकी बैठक को चरित्र. ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक असारवामें [1]भाइला कोठारी के

---

[1] आ भाइला कोठारी चार भाइ हता. १ भाइलाकोठारी ने घेर पोते बिराजता। २ हरजीकोठारीने त्यां रसोई करता. ३ कृष्णदास कोठारी ने त्यां पोढता. ४ जेताकोठारी ने त्यां पण बिराजता. हाल पण त्रण भाइना त्रण घर बैठकमां छे ते जुदां जुदां जणाय छे आ पैकी हरजी कोठारिए श्रीगुसांइजीनां हजारनामनो "श्रीविट्ठलसहस्र" नामनों ग्रन्थ कर्यो छे. (कोइ अनुभवी वैष्णव जाणता हो तो कृपा करी अमने ग्रन्थ मोकली आपशो.

घर में हे जब आप राजनगर पधारते तब भाइला कोठारी के घर में बिराजते । [१]लाछबाई भाट श्रीगुसांईजीकी सेवक हती, याको भाइ हाकीमके पास रहतो सो यानें हाकीमसों चुगली कीनी जो मेरी बहेन श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी असारवा में बिराजे हे विनके पास रहतहें सो घर आवत नांही । तब हाकीमनें कही जो असारवा चलो तब हाकीम असवारी करीके आयो ता समें श्रीगुसांईजी बैठक में गादीतकीयापें बिराजेहें । लाछबाई पंखाकी सेवा करत हें । तब श्री गुसांईजीसों वैष्णवनें विनती कीनी जो महाराज हाकीम आवतहें । तब आपनें आज्ञा कीये आयवे दो । तब हाकीम आयके देखे तो साक्षात् ईश्वर बिराजत हें । तब हाकीमनें साष्टांग दंडवत् कीनें ओर विनती कीनी जो महाराजाधिराज में आपकी शरणहूँ तब हाकीमनें दशहजार रूपीआ भेट कीने, तब श्रीगुसांईजी प्रसादी वस्त्र देवे लगे, तब हाकीमनें विनती कीनी जो महाराजाधिराज कृपा करकें एसी वस्तु दीजे जो मेरे मस्तकपें सदैव बिराजे । तब श्रीगुसाँईजीनें प्रसादी सुपारी दीनी । तब वानें दंडवत् करी पागमें राखी । पाछें यानें विनती कीनी जो महाराज सात वरसतें यहां वरखा नांही भइहे सो यहांके लोक बहोत दुःखी हे । सो आप कृपा कीजे । तब आपनें आज्ञा कीये जो तुम दरवाजा में भीजकें जाओगे । तब हाकीम दंडवत् करकें घोडापर स्वार भये ओर वाही समे घटा चढ आई सो वरखा बहोत भई सो भीजीकें शहेर में गयो । पाछें वा हाकीमनें वा भाटपें बडी रीस कीनी ओर कही जो चुगलखोर साक्षात् ईश्वर सों तूं लडावतो । परन्तु आपनें कृपा करके मेरो

---

[१] २५२ वैष्णवनी वार्तामां भाइला कोठारीनी वार्ता वांचो. श्रीगुसांइजीए महान् भक्त कवि वल्लभाख्याननां कर्ता गोपाळदासने आज स्थळे सेवक कर्या ने तेमना द्वारा आपणे गाइए छीए ते श्रीवल्लभाख्याननी उत्पत्ति अहीथीज थइ छे.

अपराध क्षमा कीयो ओर ईनकी कृपातें वरखा भई सो सब देश में आनंद भयो । तोंकों तो ठोर मारुंगो यह खबर श्रीगुसांईजीको पहोंची, तब आपनें हाकीमसों कहवाइ जो याको दंड कछु न होय एसी मेरी आज्ञा हे । तब हाकीमनें कही देखो प्रभुकी दयालुताको पार नाहीं हे ओर एसे जीव की दुष्टताको हु पार नाहीं हे पाछें या हाकीमनें चुगलखोरतें हुकम कीयो जो अब तो श्रीगुसांईजी की आज्ञासों छोडतहे नाहीं तो ठोर मारतो । जो आज पाछें काहुकी चुगली मती करीयो । एसें कहीके घर पठायो । यह माहात्म्य देखी के अनेक जीव श्रीगुसांईजीकी शरण आये । यह चरित्र श्रीगुसांईजीने असारवा-राज-नगरकी बैठकमें प्रकट कीये ओर तो अनेक कीयेहे । यामेंमुख्य हे सोई लीखे हे । इति श्रीगुसांईजीकी असारवाकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक २४ मी ♣ श्रीखंभातकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक नारायणसर तलावके ऊपरहे तहां श्रीगुसांईजी पधारे सो डेरा करकें बिराजे । तब मुरारी आचार्य बडे पंडित हते सो आपके दरसनको आये ओर आपसें कुछ चर्चावाद करी सो एक क्षण में आपनें निरुत्तर कर दीये । तब वाने विनती कीनी जो महाराज आपतो पूर्णपुरुषोत्तमहो, मनुष्य होय ताको जीते । ईश्वरके आगें तो सब हारेइहें । यह कहीके साष्टांग दंडवत् करी आज्ञाले घरकों गये । तब चाचा हरिवंशजीनें विनती करी जो महाराजाधिराज जीवतो दैवी दीसतहें, याको अंगीकार करीये । एसें पंडित अपनें मार्गमें चहीये पाछें तो आपकी इच्छा आवे सोइ करीए । तब श्रीगुसांईजी आप मुसकायकें चुप रहे । तब चाचाजीनें जानी जो

अंगीकार तो होयगो परन्तु कछु ढील दीसतहें। यह माहात्म्य देखीकें अनेक जीव श्रीगुसांईजी की शरण आये यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें [१]श्रीखंभातकी बैठक में प्रकट कीये। इति श्रीगुसांईजीकी [२] श्रीखंभातकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक २५ मी ♣ श्रीनवानगर की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक जामनगर नवानगर में बाला [३]बादरायण के घरमेंहे तहां आप बिराजे। तब श्रीगुसांईजीने राजा जामतमांचीकों अंगीकार कीयो। ओर अनेक जीवन को उद्धार कीये। पाछें श्रीगुसांईजीनें सप्ताह कीये। यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीजामनगर की बैठकमें प्रकटकीयेहे इति श्रीगुसांईजी की श्रीनवानगर की बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक २६ मी ♣ श्रीगंगागोडगढ हालनुं गुरगढ की बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक गंगागोडगढमेंहे तहां श्रीगुसांईजी बिराजे। तहां नागजीभाई आंमकी पोट लेकें आये सो आंम झाडीमें राखे ओर एक टोकरा भरकें ले आये। तब

---

[१] खंभातमां श्री गुसांईजी पधार्या त्यारे एक छोंकरना वृक्ष नीचे आप बिराज्या हता, ते वृक्ष हालमां थोडांज वरसोथी सुकाई जवाथी काढी नांखेलुं छे. पोते अहीं त्रण वखत पधार्या छे, अने घणा वैष्णवोने शरणे लीधा छे. ते पैकी २५२ वैष्णवोमां गणाया तेवा दशेक वैष्णवो अहींनाज छे. १ माधवदास दलाल जेमणे अनेक धोळ बनाव्यां छे ते अहींना वतनी हता. २ जीवा 'पारेखना वंशजो हाल जंबुसरमां रहे छे. ३ सहेजपाल दोसीना वंशजो काशीमा रहे छे. खंभातना वयोवृद्ध वैष्णवों कहे छे के श्रीगुसांईजीनी बे बैठको खंभातमा छे. बीजी बैठक ब्रह्मपुरीमां छे. त्यां मुरारी आचार्यनुं घर हतुं पण तेवी ब्रह्मपुरी चार छे तेथी बैठक क्यां हशे ते जणातुं नथी। श्रीनी इच्छा हशे तो प्रगट थशे.। जेम बीजी बैठको गुप्त थइ हती ने ते पछी केटलेक काले प्रगट थइ तेम आ बैठक गुप्त थई नथी परंपराथी श्रीनी सेवा चालुज छे ए खंभातना वैष्णवोनो अद्वितीय प्रेम गणाय.

[२] जुओ ८४ वैष्णवनी वार्ता. आ बैठक बादरायणदासना दीकरा हरजीवनदासना घरमां छे. हाल तेमना वंशना मुळजीभाई करीनें छे तेमने माथे बिराजे हे.

[१] हालनु गुरगढ जामनगरथी द्वारका जतां रस्तामां आवे छे (जुओ तीर्थयात्रानो हेवाल) आ बैठक यादवेंद्रदासना घरमां छे ने तेमना वंशज "आनंददास" सेवा करे छे.

श्रीगुसांईजीनें पूछी जो नागजी यह कहाहे तब वानें विनती कीनी जो महाराजाधिराज यह आंम लायोहूं । आप अंगीकार करीये । तब आपनें आज्ञाकीये जो यह आंमतो श्रीद्वारकानाथजी लायकहे । तब नागजीभाईनें विनती कीनी जो महाराजाधिराज आपतो आरोगो । श्रीद्वारकानाथजीहु आरोगेंगे तब श्रीगुसांईजी आंम आरोगे ओर नागजीभाई के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । वहां तीनदीन तांइ आप बिराजे सो नित्य नेमसों नागजीभाई आंमको मनोरथ करते । सो तीन दीन तांइ कथा भइ सो अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीद्वारका पधारे । यह चरित्र श्रीगुसांईजीने गंगागोडगढकी बैठक में प्रकट कीये । इति गंगागोडगढकी बैठक को चरित्र सम्पूर्ण ॥

♣ बैठक २७ मी ♣ श्रीद्वारकाकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजीकी बैठक श्रीद्वारकाजीमें जगतदेहेराके समीप श्रीदाऊजीके मंदिरके के पासहे तहां आप सेवाके अवकाशमें बिराजते ओर कथा कहते । सो कथा में अनिर्वचनीय सुख होतो यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीद्वारकाकी बैठक में प्रकट कीये । इति श्रीगुसांईजीकी श्रीद्वारकाकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक २८ मी ♣ श्रीद्वारकामें श्रीरामलक्ष्मणजीमेंकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकानाथजीसों विदा होयकें श्रीरामलक्ष्मणजीके मंदिरपें डेरा करीकें बिराजे । तहां श्रीगुसांईजीकी बैठकहे तहां नागजीभाई आंम लेकें आये तब श्रीगुसांईजीनें पूछी जो नागजी यह कहालायोहे, तब वानें

विनती कीनी जो महाराज आंम लायो हूँ तब आप आज्ञा कीये जो यह आंम श्रीद्वारकानाथजीको पहोंचावो । तब नागजीभाइनें विनती कीनी जो महाराज मेरे तो आपतें कामहें । तब आपनें आज्ञा कीये जो श्रीद्वारकानाथजी आरोगे पाछें हम लेइंगे । तासु श्रीद्वारकानाथजीमें पहोंचाओगे ओर तूं आवेगो जा पाछें हम चलेंगे । तातें तू श्रीगोमतीजीमें स्नान करी श्रीद्वारकानाथजीको दरसन करकें आइयो । तब नागजीभाई श्रीद्वारकाजी गये सो श्रीगोमतीजीमें स्नान करी आमको टोकरा श्रीद्वारकानाथजीके मंदिरमें दीनो ओर राजभोग आरतीके दरसन कीए । ता समें श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकानाथजी को बीडा आरोगावतहें सो दर्शन नागजीभाईको भये । तब वे आश्चर्य भये जो श्रीगुसांईजी यहां पधारेहे कहा ? बाहीर आयके देखे तो श्रीगुसांईजीके संगके कोई आदमी दीसे नाहीं हे । तब नागजीभाई वहां ते चल दीये सो श्रीरामलक्ष्मणजीके मंदिर में आये । तहां श्रीगुसांईजी डेरामें भोजन करी चोकीपें बिराजे बीडा आरोगतहें । तब नागजीभाईनें साष्टांग दंडवत् कीये । श्रीगुसांईजीनें पुछ्यो जो श्रीद्वारकानाथजीके दरसन करी आये । नागजीभाईनें विनती कीनी जो राज श्रीद्वारकानाथजीके अद्‌भुत दर्शन भये । श्रीद्वारकानाथजीको आपनें बीडा आरोगाये ओर श्रीद्वारकानाथजीनें आपकुं बीडा आरोगायो एसो अलौकिक दर्शन आपकी कृपा अनुग्रहतें भयोहें । तब आप आज्ञाकीये जो तेरो संदेह निवर्त होयवे के लीये हमनें तोकों दरसन दीनेहें । तातें श्रीमहाप्रभुजीको संबंध श्रीद्वारकानाथजीमें सदैव बन्यो रहतहें, तातें हमारो हु संबंध सदा रहतहें । तातें तेरे आंमहे सो हमही

आरोगेहें । तब नागजीभाई साष्टांग दंडवत् कीये । पाछें आपनें आज्ञाकीये जो जुठन महाप्रसाद लेउ । तब नागजीभाईनें जुठन महाप्रसाद लीयो । वाके ऊपर श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये । पाछें आप वहांसों विजय कीये जो राजनगर, गोधरा, उज्जैन होय श्रीमद् गोकुल पधारे । यह चरित्र श्रीगुसांईजीनें श्रीद्वारकाजीमें श्रीरामलक्ष्मणजीके मंदिर की बैठकमें प्रकट कीये। इति श्रीगुसांईजीकी श्रीरामलक्ष्मणजी के मंदिर की बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

॥ इति श्री गोकुलनाथजी कृत श्रीगुसांईजीकी २८ बैठकनके चरित्र संपूर्ण ॥

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीगुसांईजीके ज्येष्ठलालजी श्रीगिरिधरजीकी बैठक व्रजमंडल में चार हे ताको चरित्र।

♣ बैठक १ ली ♣ श्रीगिरिधरजीकी गोकुलकी बैठकको चरित्र ♣

श्रीगिरिधरजीकी बैठक श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजीकी बैठकमें श्रीगुसांईजीके सन्मुख आप बिराजते हते तहांहे। एकसमें श्रीगुसांईजीनें विचार कियो जो कोउ मायावादी मेरे सामनें आवत नांही ओर पृथ्वी परिक्रमाको अवकाश नाहीं हे ओर मायावादी तो बहोतहे तातें आगें कछु उपद्रव करेंगे। तासमें श्रीगिरिधरजी पधारे सो श्रीगुसांईजीको दंडवत् करीकें विनती करी जो महाराज आज कहा विचारमेंहो। तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीये जो हमारे आगे कोउ मायावादी तो दीसे नांही हे। तब श्रीगिरिधरजीनें विनती कीनी जो महाराज पुरुषोत्तमके आगे मनुष्यको कहा सामर्थ्य हे सो आपके सामें आयकें बेठे। जो आज्ञा होय तो में आपके सामनें बेठुं। परन्तु मेरे ऊपर आपकी सदा प्रसन्नता रहे। तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीये जो बहोत आछो। तब आप सामनें बेठीके वादीकी आडीको पूर्व पक्ष करीवे लगे ओर श्रीगुसांईजी उत्तर देत जाय ताके ऊपर विद्वन्मंडन ग्रन्थ प्रगट भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीके ऊपर बहोत प्रसन्न भये। यह चरित्र श्रीगिरिधरजीनें श्रीगोकुलकी बैठक में प्रकट कीये इति [1]श्रीगिरिधरजीकी श्रीगोकुलकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

---

[1] आ बैठक श्रीगोकुलमें श्रीगोकुलनाथजीना मंदिरमां ज्यां श्रीगुसांईजीनी बैठक छे, त्यांज होवी जोइए एम अनुमान थाय छे. ।

♣ बैठक २ री ♣ श्रीगिरिराजजीमेंकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगिरिधरजीकी बैठक श्रीगोपालपुरमें श्रीमथुरेशजी के मंदिरमें श्रीगुसांईजीकी बैठक के पासहे। तहां आप नित्य बिराजिकें जप पाठ करते। एक समें श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों आज्ञा कीये जो सात स्वरूप भेले करके मोकुं अन्नकूट आरोगाओं। तब श्रीगिरिधरजीनें विनती कीनी जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा होय तब यह कार्य होय। पाछें श्रीगिरिधरजीनें श्रीगुसांईजी सों विनती कीनी तब आप कछु बोले नाहि। तब थोरेसे दिनमें श्रीगिरिधरजीकी बैठक में श्रीनाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों आज्ञा कीनी। तब श्रीगिरिधरजीनें कही जो फेरि श्रीगुसांईजीसों विनती करुंगो। पाछें श्रीगुसांईजीसों विनती कीनी तब आपनें कछु उत्तर नांही दीयो। थोरे दीन पाछे तीसरी आज्ञा भई तब श्रीगिरिधरजीनें श्रीगुसांईजीसों विनती कीनी जो राज अबतो तीसरी आज्ञा भईहे। तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कीनी जो भले सुखेन करो। अब लौकिक बढायवेकी आपकी इच्छाहे तब श्रीगिरिधरजीनें सातों स्वरूप पधराय अन्नकूट आरोगायो सो अनिर्वचनीय सुख भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीके ऊपर बहोत प्रसन्न भये। यह चरित्र श्रीगिरिधरजीनें श्रीगोपालपुरकी बैठकमें प्रकट कीये। इति श्रीगिरिधरजीकी श्रीगोपालपुरकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ३ री ♣ श्रीगिरिधरजीकी कामरीकी बैठक[1] को चरित्र ♣

अब श्रीगिरिधरजी की बैठक कामरीमें गुफामेंहे तहां एक मायावादी हतो सो बडो माहात्मीक हतो सो सबनको खंडन

---

[1] व्रजमां कोकीलावनथी आगळ जतां बठेन थइ बे मैल दूर कामरीवन आवे छे। त्यां आगळ एक कदमखडी छे। ए कदमखंडीमां जमीनमां नीचे एक गुप्त-गुफा-भोयरु छे तेमां श्रीगिरिधरजींनी बैठक छे। जुओ श्रीव्रजयात्रावर्णन पा. १०२

करतो। जब श्रीगिरिधरजी पधारे तब वह मायावादी पंडित आयो सो आपसों चर्चा कीये आपनें घडीद्वेमें वाको निरुत्तर कर दियो। तब वा पंडितनें साष्टांत दंडवत् करी विनती कीनी जो महाराजाधिराज कृपा करकें मोको शरन लीजे। तब आपनें आज्ञा कीये जो रुद्राक्ष तोडी चंद्रभागा कुंडमें स्नान करी आउ। तब वह स्नान करी आयो तब आपनें वाकों अंगीकार कीयो, यह माहात्म्य देखीकें अनेक जीव शरण आये, एसो अनिर्वचनीय सुख भयो। यह चरित्र श्रीगिरिधरजीनें कांमरी की बैठकमें प्रकट कीये। इति श्रीगिरिधरजीकी कांमरीकी बैठकको चरित्र संपूर्ण.।

♣ बैठक ४ थी ♣ श्रीगिरिधरजी की बैठक [1]नरीसेंवरीमेंहे ताको चरित्र ♣

अब श्रीगिरिधरजीकी बैठक श्रीनरीसेंवरी में बलभद्रकुंडके कीनारे श्रीदाऊजीके मंदिरके पासहे तहां आप बिराजते। तहां आप खटमास पर्यंत बिराजे ओर श्रीमद् भागवतकी कथा कीये। सो अनिर्वचनीय आनंद भयो ओर लीलाको अवलोकन कीये ओर जो भगवदीय संग हते तीनकोहु अलौकिक दरसन करवाये, ओर अनेक जीवनको उद्धार कीयो। यह चरित्र श्रीगिरिधरजी महाराजनें श्रीनरीसेंवरीकी बेठक में प्रगट कीयो। इति श्रीगिरिधरजीकी नरीसेंवरीकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

आ सिवाय कामवनमां श्रीसुरभीकुंड-श्रीकुंड ऊपर श्रीमहाप्रभुजीनी बैठक छे त्यां ते बैठकनी साथे श्रीगिरिधरजी महाराजनी बैठक पण हाल प्रगट छे। वैष्णवो दर्शन, सेवा करे छे पण ए बैठकनुं चरित्र वर्णन नथी मलतुं। कोई अनुभवी जणावशे तो कृपा थशे ॥

---

[1] आ स्थल व्रजचोराशीकोस परिक्रमां छे। वच्छवनथी वृन्दावन जतां श्रीयमुनाजी उतरी नरी-सेवरी गाम आवे छे। त्यां श्रीबलदेवजीनुं मंदिर छे। आ नरीवसेमरी बे श्रीराधाजीनी सखीओ हती ते देवी तरीके आजे पण पुजाय छे। नवरात्रिमां घणे दूरथी भक्तजनों दर्शने आवे छे. आ स्थले बैठक होवी जोइए। पण स्थल प्रकट नथी। प्रभुइच्छा हशे तो प्रकट थशे।

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीगुसांईजीके चतुर्थलालजी श्रीगोकुलनाथजी की १३ बैठकन के चरित्र

♣ बैठक १ ली ♣ श्रीगोकुलकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीमद्‌गोकुलमें श्रीगोकुलनाथजीके मंदिरमेंहे तहां आप बिराजते। एक समें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजीके पास पधारे सो पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त आपसों पूछ्यो तब श्रीगुसांईजीनें पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त कह्यो सो सुनीकें श्रीगोकुलनाथजी अपनी बैठकमें पधारे। सो पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तको विचार करत हते ता समें कल्याणभट्टनें आयके साष्टांग दंडवत् करी। आप तो रसमें मग्न हते सो कछु बोले नांहि। सो चार घडी पाछें कल्याणभट्टकी ओर देखे। तब आपनें पूछी जो तुम कब आये। तब वानें साष्टांग दंडवत् करी विनती कीनी जो महाराज मोकों आये चार घडी भइहे। तब आपनें आज्ञा कीये जो आप में श्रीगुसांईजीके पास गयो हतो सो आपनें पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त कह्यो सो पुष्टिमार्गकी रीति तो महाकठीनहे, कछु बनती नांही। तब कल्याणभट्टनें विनती कीनी जो महाराज कृपा करकें कछु कहीए। तब कल्याणभट्टसों कृपा करीकें सब सिद्धान्त कह्यो, सो सब २४ वचनामृतमें लीख्योहे। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगोकुलकी बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीगोकुलकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥१॥

♣ बैठक २ जी ♣ श्रीवृन्दावनकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक वृन्दावनमें बंसीबटमें-श्रीमहाप्रभुजीकी बैठकके पासहे, तहां आप बिराजते। तहां आप

श्रीगोकुलनाथजीनें सप्ताह कीये । तब हरिवंश प्रभृति सगरे संत महंत सप्ताह सुनवेकों आवते सो अनिर्वचनीय सुख भयो । पाछें आपनें [१]श्रीवल्लभाष्टककी टीका तहां कीनी तब कल्याणभट्ट आदि भगवदीय संग हते तीनको अलौकिक आनंद भयो । यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीवृन्दावनकी बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीवृन्दावनकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥२॥

♣ बैठक ३ री ♣ श्रीराधा - कृष्णकुंड की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक श्रीराधा - कृष्णकुंडपें श्रीगुसांईजीकी बैठकके पासहे, तहां श्रीगोकुलनाथजी पधारे सो श्रीराधा-कृष्ण-कुंडमें स्नान करीकें बिराजे । तब कल्याणभट्टको आज्ञा कीनी जो यहां श्रीस्वामिनीजी सहीत श्रीठाकोरजी नित्य रमण करतहे । ओर यहां श्रीस्वामिनीजीके रत्नजडित महेलहे तातें यहां सप्ताह करेंगे । पाछें आपनें सप्ताह कीये सो महा अलौकिक आनंद भयो । यह चरित्र श्रीराधा-कृष्णकुंडकी बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीराधाकृष्णकुंडकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥३॥

♣ बैठक ४ थी ♣ श्रीचंद्रसरोवरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक चंद्रसरोवरमें श्रीगुसांईजीकी बैठकके पासहे तहां श्रीगोकुलनाथजीनें प्रथम रास करवायो तब श्रीगिरिधरजी श्रीगोवर्धननाथजी सहित

---

[१] श्रीवल्लभाष्टक ऊपर श्रीगोकुलनाथजीए संस्कृतमां टीका आ स्थले करेली ते टीकानुं गुजराती भाषान्तर अमारा तरफथी छपाई तैयार थयुं छे ।

पधारे। तब अलौकिक रास भयो ता बीरीयां चतुर्भुजदासजीनें कीर्तन गायो सो चतुर्भुजदासजीकी वार्ता में विस्तारसुं लीख्यो हे। तहां श्रीगोकुलनाथजीनें [१]श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रकी टीका कीनी। महा अनिर्वचनीय आनंद भयो। आप एक मास तांइ तहां बिराजे। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीचंद्रसरोवर की बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीचंद्रसरोवर की बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ५ मी ♣ श्रीगोपालपुरकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीगोपालपुर (श्रीगिरिराजजी) में श्रीगोकुलनाथजीके मंदिरमें हे। तहां आप बिराजते। उद्धव त्रवाडी आपको सेवक हतो तीनके ऊपर आप बहोत कृपा करते। वे आपकी सेवामें अष्टप्रहर हाजर रहते। तरहटीमें रसोइ करी भोग धरी महाप्रसाद ले सेवामें आवते एकदीना श्रीगोकुलनाथजी द्वे चारी वीरीयां जल आरोगे तब वानें विनती कीनी जो महाराज द्वे चारी वीरीयां जल आरोगे याको कारन कहा। तब आपनें आज्ञा करी जो खीचडीमें लोंन बहोत डार्यो हो, तब वानें विनती कीनी जो राज लोंन (मीठुं) बढती पड्यो तो सही। तब आपनें आज्ञा कीये जो रसोइ तो बहोत सावधानीसु करनी ओर कही जो उत्तम सामग्री करी प्रभुनको भोग धरनी। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगोपालपुरकी बैठकमें प्रगट कीये। इति श्रीगोकुलनाथजी की श्रीगोपालपुर-श्रीगिरिराजजीकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

---

[१] श्री सर्वोत्तमस्तोत्रके ऊपर श्रीगोकुलनाथजीए संस्कृतमां बे टीका करी छे. एक टीका सुक्ष्म छे ते छपाइ गइ छे। ए सुक्ष्म टीकानुं गुजराती भाषान्तर शास्त्री वसंत राम तरफथी छपायुं छे। बीजी मोटी टीका छे ते हजु छपाइ नथी।

♣ बैठक ६ ठी ♣ श्रीकामवनमें श्रीसुरभीकुंडकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजी की बैठक कामवनमें श्रीसुरभीकुंड-श्रीकुंड ऊपरहे। तहां आप बिराजे ओर आज्ञाकीये जो कामवन में लीला स्थल अनेकहे। यहां श्रीठाकोरजी सदैव रमण करतहे। ये कामवन सो लीलात्मकहे। तातें यहां सप्ताह कीये सो अनिर्वचनीय सुख भयो। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें कामवन की बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीगोकुलनाथजी की कामवन की बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ७ मी ♣ श्रीकरहलाकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीकरहलामें श्रीगुसांईजीकी बैठकके पासहे तहां आप बिराजेहे। तब तहां श्रीवेणुगीतकी श्रीसुबोधिनीजीको प्रसंग चल्यो, ता समें सबनको रसावेश भयो, सो काहु वैष्णवको देहदशाको अनुसंधान न रह्यो। पाछें आपनें सबनको सावधान कीये। पाछें आपनें सप्ताह कीये सो महा अलौकिक आनंद भयो। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीकरहलाकी बैठक में प्रगट कीयो। इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीकरहलाकी बैठक को चरित्र संपूर्ण।

♣ बैठक ८ मी ♣ [१]श्रीरासोलीकीबैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक [१]रासोलीमेंहे तहां आप बिराजे ओर सप्ताह कीये सो महा अलौकिक आनंद भयो। तब कल्याणभट्ट नें भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधिनीजीको प्रसंग पूछ्यो सो

---

[१] आ स्थल जावथी कोटवन जतां रस्तामां एक रासोल गाम आवे छे त्यां गामथी थोडे दूर छे. आ बैठक प्रगट नथी त्यांना व्रजवासीओ बैठकजीनों चोतरो बतावे छे अने परिक्रमा बखते जतां वैष्णवो दर्शन करे छे. बीजी बैठकोनी माफक सेवानो प्रबंध नथी. जुओ ‘‘तीर्थयात्रानो हेवाल ।’’

आपने व्याख्यान कीयो सो तीन प्रहर व्यतीत भये सो अनिर्वचनीय सुख भयो । यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें रासोलीकी बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीरासोलीकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ९ मी ♣ [1]श्रीसोरमजीकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक श्रीसोरमजीमें श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजीकी बैठकके पासहे । तहां श्रीगंगाजीमें स्नान करीकें आप बिराजे । पाछें आपनें सप्ताह कीए सो अनिर्वचनीय सुख भयो । कल्याणभट्ट सो आज्ञा कीये जो श्रीगंगाजीको भगीरथ राजा जाय पधराय लाये । क्यों जो श्रीगंगाजीमें स्नान करे तें विनके आगे कें प्रायश्चितको नाश करे हें । ओर श्रीयमुनाजीके संबंधतें श्रीगंगाजीकों अधिक सामर्थ्य भयोहे, जो अब भक्ति मुक्ति दोनों देतहें । तब श्रीगोकुलनाथजीनें कृपा कटाक्षद्वारा अनेक जीवनको उद्धार कीये । यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीसोरमजीकी बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीसोरमजीकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक १० मी ♣ श्रीअडेलकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक श्रीअडेलमेंहे तहां आप नित्य बिराजेहें । पहेलें सप्ताह आपनें वहांही कीएहे । एक समें श्रीगुसांईजी ओर श्रीगिरिधरजी सेवामें न्हाए हते ओर

---

[1] आ स्थले श्रीगोकुलनाथजी पोताना सेव्य स्वरूप श्रीगोकुलनाथजीने पधरावी मालातिलकना झघडा बखते त्रण मास सुधी बिराज्या हता अने अहियां नाना प्रकारनां मंदिर, रसोइघर, शयनमंदिर, गौशाला, अश्वशाला वगेरे आबास श्रीगोकुलनी माफकज तैयार करावेला हता तेथी त्यारथीज आ स्थल अद्यापि सुधी पण श्रीगोकुल तरीके ओलखाय छे. जुओ ''श्रीगोकुलेशजीनुं जीवन चरित्र.''

श्रीगोकुलनाथजी आपकी बैठकमें बिराजे हते । तब मायावादी पंडित आयो वाके संग आपनें चर्चाकीनी सो दोय घडीमें वाको निरुत्तर कर दीनों । तब वा पंडितनें साष्टांग दंडवत् कीये ओर विनती कीनी जो महाराज आप साक्षात् ईश्वरहो । पाछें दंडवत् करके वह पंडित अपनें देशकु गयो । यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीअडेलकी बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीअडेल की बैठक को चरित्र संपूर्ण ।।

♣ बैठक ११ मी ♣ [१]श्रीकाश्मीरकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजी की बैठक काश्मीरमें हे । आपनें जहां चिद्रूपको जीती मायामत खंडन करी, भक्तिमार्ग स्थापन कीये ओर माला प्रसंग जीतकें, सबनको माला बंधाई तब चारों संप्रदायवारे मीलकें श्रीगोकुलनाथजी को तिलक कियो ओर विनती कीनी जो महाराज चारों संप्रदाय के दीक्षीत आपहो आपनेंही हमारो धर्म राख्योहे तब चारों संप्रदाय वारे मीलकें श्रीगोकुलनाथजीको सुखपाल में पधराए । तब पादशाह ने दंडोत करकें मोतीनकी अमोलीक माला भेट कीनी सो आपनें गंगाजीमें डारीदीनी तब काहुने पादशाहसों कही जो तुमारी माला श्रीगोकुलनाथजी नें गंगाजीमें डारी दीनी । तब पादशाहनें विनती कीनी जो महाराज यह माला बेगमकी हे सो दीजे ओर दूसरी माला में आपको भेट करुंगो । तब आपनें आज्ञा कीए जो श्रीगंगाजीमें हाथ डारो । तब वानें हाथ डार्यो । सो एक संग दश

---

[१]. आ बैठक प्रगट नथी तेम क्यां छे. कया गाममां छे ते पण जणातुं नथी माटे कोई अनुभवी वैष्णव आनो खुलासो करशे एवी विनंति छे.

वीश माला बडे बडे गज मुक्तानकी अमोलमाला आई। तब आपनें आज्ञा कीये जो तेरी माला होय सो ले लें। तब पादशानें साष्टांग दंडवत् करी विनती कीनी जो महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो। मेरी पादशाही आपनें राखी। नहीं तो डुबी जाती। जो अब मेरो अपराध क्षमा होय ओर माला अंगीकार करीये। तब आपनें आज्ञाकीये जो सब माला गंगाजीमें डारी दे। तिहारी माला तो अंगीकार भईहे। तब पादशाह दंडवत् करी अपनें घर गयो। यह माहात्म्य देखीके अनेक जीव श्रीगोकुलनाथजीकी शरण आये। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीकाश्मीरकी बैठकमें प्रगट कीये हें। इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीकाश्मीरकी बैठक को चरित्र संपूर्ण॥

♣ बैठक १२ मी ♣ श्रीगोधरा की बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक गोधरामें नागजीभाईके घरमें श्रीगुसांईजीकी बैठकके पासहे। जब श्रीगोकुलनाथजी गोधरा पधारते तब नागजीभाईके घरमें बिराजते, तब देखेतो जगे सब गीरी गईहे। तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा कीये जो नागजीभाईकी जगे बनवाय देउ। तब वैष्णवनें कही जो महाराज आप द्वारका होय पाछें पधारोगे तहां तांइ बनी जायेगी। पाछें श्रीगोकुलनाथजी तपेली करी श्रीगुसांईजीको भोग धरी भोजन कीये पाछें सप्ताह कीये सो अनिर्वचनीय सुख भयो। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगोधराकी बैठकमें प्रगट कीये। इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीगोधराकी बैठक को चरित्र संपूर्ण॥

♣ बैठक १३ मी ♣ श्रीअसारवाकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीगोकुलनाथजीकी बैठक राजनगर-अमदावादमें असारवामें भाईला कोठारी के घरमें श्रीगुसांईजीकी बैठकके पास हे। तहां आप बिराजेहें। चाचा हरिवंशजीहु यहांही रहते, सो चाचाजीनें पहेले श्रीगोकुलनाथजी को विनती पत्र लखी पठायो जो महाराज श्रीगुसांईजी श्रीद्वारका छः वीरीयां पधारेहे ओर आपहु वेग पधारोगे या कोइ बालक पधारेंगे। सो पत्र वांचतही श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारका पधारे। जब आप राजनगर पधारे तब चाचाजीनें साष्टांग दंडवत् करी विनती कीनी जो महाराज अनेक जीव आपके दरसनके लीये तरसतहें, सो कृपा करकें वे जीवनको अंगीकार करीये। तब आप आज्ञा कीये जो याके तांइ तो में तुमारो पत्र वांचतही आयोहूँ। पाछें आपनें रसोइ करी, श्रीगुसांईजीको भोग धरी, भोजन कीये ओर वहांही बिराजे। दूसरे दिन आपनें सप्ताहको प्रारंभ कीयो सो तामें अनिर्वचनीय सुख भयो। तब अनेक जीवनको उद्धार कीये। पाछें आप श्रीद्वारकाजी पधारे। वहां कछुकदीन बिराजकें फीर राजनगर पधारे। यहां कछुकदीन बिराजे पाछें गोधरा होयकें श्रीमद्गोकुल पधारे। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीअसारवाकी बैठकमें प्रगट कीये इति श्रीगोकुलनाथजीकी श्रीअसारवाकी बैठकको चरित्र सम्पूर्ण ॥

॥ इति श्रीगोकुलनाथजी की १३ बैठकको चरित्र सम्पूर्ण ॥

श्रीगोकुलनाथजीए सं. १६४६ नी सालमां गुजरात पधारी घणा दैवीजीवोनो अंगीकार कर्यो छे. गुजराती वैष्णवो ऊपर पोतानी अगाध प्रीति हती. श्रीद्वारका जतां आखा काठीयावाडमां पोते बिराजी घणा भक्तोना मनोरथ पूर्ण कर्या छे. द्वारकाथी पाछा फरतां फरी राजनगर पधार्या. अहीं बारभट नामना ब्राह्मण साथे वाद थयो तेने निरुत्तर करी दीधो. पोते गुजरातनां घणां नानां मोटां गामे पधार्या छे. कारणके पोते तो मात्र आ एकज वखत परदेशमां पधार्या अने फरीथी पधारवानी इच्छा नही होवाथी बारमास सुधीमां गुजरातने अंगीकार करी श्रीगोकुल पधार्या. आ वर्णननी, वधु माहिती माटे- ''श्रीगोकुलेशजीनुं जीवनचरित्र'' ए पुस्तक वांचो.

श्रीमद्गोस्वामी श्री हरिरायजी महाप्रभुकी ७ बैठकको चरित्र

♣ बैठक १ ली ♣ श्रीगोकुलकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीहरिरायजीकी बैठक श्रीमद् गोकुलमें श्रीविठ्ठलनाथजीके मंदिरमेंहे तहां आप नित्य बिराजतेहे । तहां आपको कृपा पात्र सेवक हरजीवनदास तासों मीलके रहस्य वार्ता करते ओर प्रथम निरोधलक्षण ग्रंथकी टीका आपनें वहांही करी हे। पाछें वहां सप्ताह कीये सो महा अनिर्वचनीय सुख भयो। यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीगोकुलकी बैठक में प्रगट कीयो । इति श्रीहरिरायजीकी श्रीगोकुलकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक २ जी ♣ श्रीजीद्वारकी बैठक को चरित्र. ♣

अब श्री हरिरायजी की बैठक श्रीजीद्वारमें श्रीविठ्ठलनाथजी के मंदिरमेंहे । तहां आप बिराजकें नित्य कथा कहते । एकदीन हरजीवनदासनें वेणुगीतको प्रसंग पुछ्यो, याको आपनें व्याख्यान कीयो सो तीनदीन ओर रात्र व्यतीत होय गई । सो अलौकिक आवेश भयो काहुको देहानुसंधान हु न रह्यो। पाछें आपनें सबनको सावधान करे तहां आपने सप्ताह कीये सो महा अलौकिक आनंद भयो। यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीजीद्वारकी बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीजीद्वारकी बैठक को चरित्र सम्पूर्ण ।

♣ बैठक ३ जी ♣ श्रीखीमनोरकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीहरिरायजीकी बैठक श्रीखीमनोरमेंहे तहां आप बिराजे। तहां हस्ती, सुखपाल, घोडा तथा घोडवेल ओर रथ ए चारों सवारी पहर पहर तांइ ठाडी रहती। क्यों जो श्रीनाथजी क्षणक्षणमें आपको जतावते ओर सवारी करी वेग पधारते एकदीनां श्रीनाथजी को श्रीबालकृष्णजीके लालजी श्रीवल्लभजीनें श्रृंगार कीयो सो पेंडेंकी गादी बिछायवे भूली गये। तब श्रीनाथजी ठाडे होय रहे। तब गंगाबाई सों आपनें आज्ञा कीये जो में ठाडो होय रह्योहुं। तब गंगाबाईनें कही जो श्रीहरिरायजीको जताइयो, ता समें श्रीहरिरायजी तो पोढे हते सो स्वप्नेमें आपनें जताइ जो आज पेंडेंकी गादी काहुने बीछाइ नाहींहे, ओर में ठाडो होय रह्यो हूँ। तासमें [१]श्रीहरिरायजी चोंकी उठे ओर उद्धोदास खवास सों कहीजो कहा सवारी ठाडीहे। तब वानें कही घोडवेल ठाडीहे। तामें आप मंदिरमें पधारे श्रीदाउजीकी बैठकमें तें कुंचीको झूमखा मंगाय शंखनाद करी तालो खोली भीतर पधारे पेंडेंकी गादी बीछाइ, दंडोत करी ताला मंगल करी, श्रीदाउजी महाराजकी बैठकमें पधारे। श्रीदाउजी महाराजने दंडोत करी, विनती कीनी जो आप श्रीवल्लभकुलमें शीरोमनीहो कछु हम सेवामें भुले तो आपकुं सेवा करनी उचित हे। जो आज पेंडेंकी गादी बिछायवे भुली गये सो श्रीनाथजीको परिश्रम भयो यह आज्ञा करी आप खीमनोर पधारे। पाछें श्रीदाउजी महाराज बहोत सावधानी राखते सो ये प्रसंग श्रीनाथजी के प्रागट्यकी वार्तामें विस्तारसुं

---

[१] श्रीनाथजीनी सेवामां कइ पण भुलचुक रही होय तो तरतज श्रीनाथजी श्रीहरिरायजीने जतावता अने श्रीहरिरायजी पोते पधारी तेनों बंदोवस्त करता। आवा घणा प्रसगो ''श्रीगोवर्धननाथजीना प्रागट्यनी वार्ता'' ए पुस्तकमा छे.

लिख्योहें। यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीखीमनोरकी बैठक में प्रगट कीये। इति श्रीहरिरायजीकी श्रीखीमनोरकी बैठकको चरित्र संपूर्ण।

♣ बैठक ४ थी ♣ श्रीजेसलमेरकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीहरिरायजीकी बैठक जेसलमेर में श्रीगिरिधारीजीके मंदिरमें हे। सो वे श्रीगिरिधारीजी श्रीकल्याणरायजीके सेव्य स्वरूप हे। वहां जेसलमेर के राजाको आपनें सेवक कीये ओर हु अनेक जीवन को उद्धार कीये। पाछें आपनें श्रीमद् भागवतकी सप्ताह कीये सो वामें महाअलौकिक आनंद भयो यह चरित्रश्रीहरिरायजीनें श्रीजेसलमेरकी बैठकमें प्रगट कीये। इति श्रीहरिरायजीकी श्रीजेसलमेर की बैठकको चरित्र संपूर्ण ॥

♣ बैठक ५ मी ♣ अथ [१]श्रीडाकोरकी बैठक को चरित्र प्रारंभ ♣

अब श्रीहरिरायजीकी बैठक श्रीडाकोरमें श्रीगोमतीजीके कीनारा ऊपरहे तहां श्रीहरिरायजी आप पधारे। श्रीगोमतीजीमें स्नान करीकें भोजन करी आप पोढेहें। ता समें श्रीरणछोड़जीनें स्वप्नमें आज्ञा कीये जो में यहां एक छपरामें बेठ्योहूँ। एक ब्राह्मण जलको लोटा नित्य डारी जातहें, जासुं आप मोकुं श्रीहस्तसों परस करीये ओर साधारण मंदिर बनवाय यहां मोकों बेठाइए। ता समें आप जागे। सब वैष्णवनको बुलायकें पूछे जो यहां श्रीरणछोडजी कहां बिराजतहें। तब वैष्णवनें कही जो एक छपरामें बिराजतहे। तब आप दर्शनकों पधारे, दर्शन करी सब वैष्णवनकुं बुलाये ओर एक साधारण मंदिर बनवाय आछो

---

[१] श्री डाकोरनी वधु माहिति माटे "तीर्थयात्रानो हेवाल" वांचो

मुहूर्त देखीकें श्रीरणछोडजीको पधराये । खेडावाल ब्राह्मणको सेवा में न्हवाये । प्रथम जो नित्य जलसों स्नान करावतो वानें आय विनती कीनी जो महाराज नित्य स्नान तो में करावतो ओर आपनें सेवा में खेडावालको न्हवाये, तब आपनें आज्ञा कीये जो तेरो ओर वाको आधो आधो वांट लीजो । पाछें आपनें सप्ताहकीनी सो अनिर्वचनीय सुख भयो । यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीडाकोरकी बैठकमें प्रगट कीये । इति श्रीहरिरायजीकी श्रीडाकोरजीकी बैठकको चरित्र संपूर्ण ।।५।।

♣ बैठक ६ ठी ♣ श्रीसावलीकी बैठक को चरित्र ♣

अब श्रीहरिरायजी की बैठक श्रीसावलीमें तलावके पासहे तहां श्रीहरिरायजी बिराजे । तहां आपनें सप्ताह कीये सो अनिर्वचनीय सुख भयो ओर अनेख जीवन को उद्धार कीये यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें बैठक में प्रगट कीये । इति श्रीहरिरायजीकी श्रीसावलीकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ।

♣ बैठक ७ मी ♣ श्रीजंबुसरकी बैठकको चरित्र ♣

अब श्रीहरिरायजीकी बैठक श्रीजंबुसरमें तलावके पासहे तहां आप बिराजकें कथा कहते । तब प्रेमजीभाइनें युगलगीतको प्रसंग पूछ्यो तब आपनें व्याख्यान कीयो सो तीन प्रहर व्यतीत होय गये एसो महा अलौकिक रसावेश होय गयो जो काहुको देहानुसंधान हु न रह्यो । पाछें सबनको सावधान कीये । पाछें आपनें सप्ताह कीये ओर अनेक जीवनको उद्धार कीये । पाछें श्रीहरिरायजी वहांसुं विजय कीये सो श्रीजीद्वार पधारे । यह चरित्र श्रीहरिरायजीनें श्रीजंबुसरकीबैठकमें प्रगट कीयो । इति श्रीहरिरायजीकी श्रीजंबुसरकी बैठक को चरित्र संपूर्ण ।।

।। इति श्रीहरिरायजी (महाप्रभुजी) की बैठक सात हे ताको चरित्र संपूर्ण ।।

♣ श्रीगोवर्धननाथजीकी चरणचोकी १२ हे ताको चरित्र ♣

॥१॥ प्रथम श्रीनाथजीकी चरणचोकी श्रीगिरिराज के ऊपर आप के निजमंदिरमें जहां श्रीनाथजी सदासर्वदा बिराजेहे तहांहे ॥२॥ श्री-नाथजीकी चरनचोकी श्रीमथुराजी में [१]सतघरामेंहे जहां आप सं. १६२३ (व्रज) फाल्गुन कृष्ण ७को श्रीगुसांईजीके घर पधारे हते तहांहे ॥३॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी [२]आगरा में हवेलीमेंहे जहां आप श्रीगिरिराजसों सं. १७२५ (व्रज) आसो सुदी १५ को उठे पाछें यहां पधारे हते तब तहां अन्नकूट आरोगे हते ॥४॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी कृष्णपुरी दंडोतधार देश में चंबल नदीके ऊपरेहे, जहां [३]श्रीनाथजी को रथ अटक्यो वहां आप बिराजे । उत्थापन वहां ही भये, यहां पर म्लेच्छोनें जलघरीया वगेरे को सिंघरूप दीखे ओर श्रीजीको रथ पर्वतरूप देख्यो जासु सब म्लेच्छ भागगये, यहां बैठकहे ॥५॥ श्रीनाथजीकी [४]चरणचोकी कृष्णपुरीमेंहे जहां श्रीव्रजरायजी महाराजनें २७ दिनतांइ सेवा करी हे। पाछें श्रीगोविन्दजी महाराजनें सेवा करीहे। यहां आप चातुर्मास बिराजे हे । यहां पर सेवा प्रकार चालु हे ॥६॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी कोटा में कृष्णविलासमें पद्मशिलाकेऊपर बिराजेहे तहांहें । यहांदूसरो चातुर्मास आप बिराजे ॥७॥ श्रीनाथजीकी

---

१. आ ''सतघरा'' परमभगवदीय वै. दुर्गावतीराणीए श्रीगुसांईजी तथा सात लालजीने बिराजवाने माटे बंधाव्या हता त्यारपछी सतघरा कहेवाय छे.

२. आ स्थल आग्राथी त्रण गाउ दुर सूरजभाननो बगीचो कहेवाय छे. त्यां छे सेवाप्रकार चालु छे. (जुओ श्रीगोवर्धननाथजीनी प्राकट्य वार्ता तथा श्रीनाथजीनों इतिहास. ३. आ स्थले जवा माटें आग्राथी चंबल स्टेशन उतरी पांच कोस पग रस्ते जवाय छे. सेवा प्रकार चालु छे. श्रीजीनी गायो त्यां रहे छे. (जुआ श्रीनाथजीनी प्राकट्य वार्ता.) ४. आ बैठके जवा माटे वांचो ''श्रीगोवर्धननाथजीनी प्रागट्य वार्ता.''

चरनचोंकी कीसनगढके पास “[1]अजमिति” गामके पास पर्वतपें हे ॥ उहां श्रीनाथजी वसंतऋतु कीयें हें ॥ (ए स्थल बहोत रमणीक ओर अवश्य दर्शन करवे लायक हे) ॥८॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी चापासेनीमेंहे जहां बहोत सुंदर कदंबखंडी देखीकें आप बिराजे ओर तीसरो [2]चार्तुमास उहांही कीयो ॥९॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी उदेपुरमें श्रीनाथजीके मंदिरमेंहें यहां उदयपुर नरेश राणा रायसिंहजीके समयमें नवमास तक श्रीनाथजी बिराजे हते ॥१०॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी सिंहाडमें जहां प्रथम श्रीनाथजीको रथ अटक्यो हतो तहांहे । सं. १७२८ माघकृष्ण ७ मीको यहां पधारे हाल यहां श्रीनाथजी को खरच भंडारहे यहां सेवा होय हे ॥११॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी सिंहाडमें [3]हाल बिराजेहे वहांहे ॥१२॥ श्रीनाथजीकी चरनचोकी [4]घस्याढ जो उदेपुरसें १० कोसके ऊपर हे वहांहें यहां आप छ [4]वरसतक बिराजे है । श्रीगोवर्धननाथजीकी १२ चरन चोकी बिराजेहें ताको चरित्र संक्षेपसों लीख्यो हे ॥ ओर तो सब श्रीगोवर्धननाथजी के प्रागट्यकी वातामें विस्तारसों लीख्यो हे । इति श्रीगोवर्धननाथजीकी १२ चरणचोकी को चरित्र संपूर्ण ॥

---

[1] कीसनगढथी २-२ ॥ मैल दुर पर्वतनी टेकरी ऊपर बैठकजीछे. अहीं निर्मल नदी वहे छे. सुंदर कदमखंडी छे. घाढी सदनघटा छे. ‘‘पिताम्बरजीकी गाल’’ ए नामथी आ स्थल ओलखाय छे. सेवानों प्रबंध सारो छे.

[2] अहींथी सं. १७२८ कारतक सुद १५ मेवाड तरफ पधार्या.

[3] अहीं आप सं. १८६४ पछी सुखरुपे बिराज्या तेथी श्रीदामोदरजी महाराजे सं. १८७८ मां एक छप्पनभोग कर्यो.

[4] सं. १८५८ थी सं. १८६४ सुधी छःवरस अहीं बिराज्या. अहीं श्रीजीद्वारना जेवुंज मंदिर छे. ने विशाल गौशाला पण छे. हजारो गायो अहीं रहे छे.

श्रीगोवर्धननाथजीकी बैठक व्रजमें तीन हे ताको चरित्र

॥१॥ श्रीगोवर्धननाथजीकी बैठक श्रीश्यामढाकपें हे ॥ तहां आपनें व्रजभक्तनके संग, ग्वालबालके संग, छाकलीला, आखमींचौनीलीला, गोचारनलीला इत्यादि अनेक लीला करी हे ॥ महानुभावी कुभंनदासजी ओर गोविंदस्वामीके संगहु अनेक भांति आपनें क्रीडा कीयेहें ॥२॥ श्रीगोवर्धननाथजीकी बैठक श्रीगुलालकुंडके ऊपर हे तहां आप बिराजकें आपनें व्रजभक्तनके संग होरी खेल कीयोहे ॥३॥ टोड के घनों में गुलाल-कुंडथी नजीक ज्यां श्रीनाथजी वेरागीनें दर्शन आपवा पधार्या हता त्यां पण श्रीनाथजीनी बैठक छे.

(परिक्रमामां जावथी कोटवन जतां रस्तामां रासोली गाम आवे छे त्यां आगल रासकुंड, रासचोतरो, लछमनझूलो ए स्थल छे तेनी पासेज श्रीनाथजीनी बैठक छे एम त्यांना व्रजवासीओ बतावे छे। साथे श्रीगोकुलनाथजीनी पण बैठक छे। परिक्रमामां वैष्णवो आ बैठकोए भोग धरे छे, चरणस्पर्श करे छे।)

श्रीनाथजीनी चरणचोकी अने बैठकोनुं चरित्र वर्णन वांचतां वैष्णवोए श्रीगोवर्धननाथजीनी प्रागट्य वार्ता तथा श्रीनाथजीनो इतिहास तथा व्रजयात्रा वर्णन ए पुस्तको अवश्य साथे राखी वांचवां तेमां घणी प्राचीन माहिती आपी छे.

एक भोलो व्रजवासी भेटीयो बसो बावन वैष्णवनी वार्तामां जेमनी वार्ता ८७ मी आवे छे ते पोंताना श्रीठाकोरने "परे" (श्रीनाथजी) हता तेमने लेईने सुरत आव्या (वधु विगत माटे जुओ २५२ वै.नी. वार्ता) गाम बहार मुकाम कर्यो । आ स्थले श्रीनाथजीनी बैठक छे । एम मनाय छे । पण स्थलनों पत्तो लागतो नथी । हुँ सं. १९८९ नी सालमां सुरत गयो त्यारे त्यां वै. ने पुछतां जणाय छे के स्टेशनना सामे रेलवे लाइन ओलंगी पुल आवे छे तेनी जोडे एक खेतर छे त्यां कुवो छे । आ जगामां बैठक होवानुं अनुमान थाय छे ।

श्रीगुसांईजीके पंचमलालजी श्रीरघुनाथजीकी एक बेठक श्रीगोकुलमें हे।

श्रीगुसांईजीके सप्तमलालजी श्रीघनश्यामजीकी एक बैठक श्रीगोकुलमें श्रीमदनमोहनजीके मंदिर में एक गुफाहे तामेंहे। तहां आप बिराजते। एक बिरीया आपके सेव्य श्रीठाकोरजी श्रीमदनमोहनजी (कामवनमें बिराजेहे) को काहु तस्कर विद्यासों चुरायकें ले गयो। ता वातको आपको खबर भई सो श्रीठाकुरजी विनु आपसें रह्यो न गयो। तबतें आप अन्नजल त्याग करकें ए गुफा में बिराजे, सो अत्यंत विरहसों आप निजलीला में पधारे॥

परम भगवदीय दामोदरदासजीकी दोय बैठक हे ॥१॥ श्रीगोकुलमें श्रीठकराणीघाट ऊपर ॥२॥ श्रीवृन्दावनमें श्रीबंसीबटमें हे॥

सुन्हेराकी कदमखंडी :- अहींआ श्रीगोस्वामी श्रीकांकावल्लभजी (श्रीगोकुलचंद्रमाजीना घरना) नी बैठक छे। जेमनो जन्मदिवस सं. १७१९ कारतक सुदी १३ नो आवे छे। आ महाराजश्री पोते श्रीगोकुलचंद्रमाजीनी सेवाथी पहोंची अनोसरमां अहीं बिराजता ने आ स्थलेज पोते भावनाना ग्रन्थों लख्या छे। पोतानां करेलां "बावन वचनामृत" पण आ स्थले लख्यां होय एम जणाय छे। अहीं श्रीगोस्वामी श्रीदेवकीनंदनजी महाराज पण कोइ कोइ वखत पधारता। प्रति कारतक सुद १३ वैष्णवो कामवनथी आवी अहीं उत्सव मानी आनंद करेछे॥